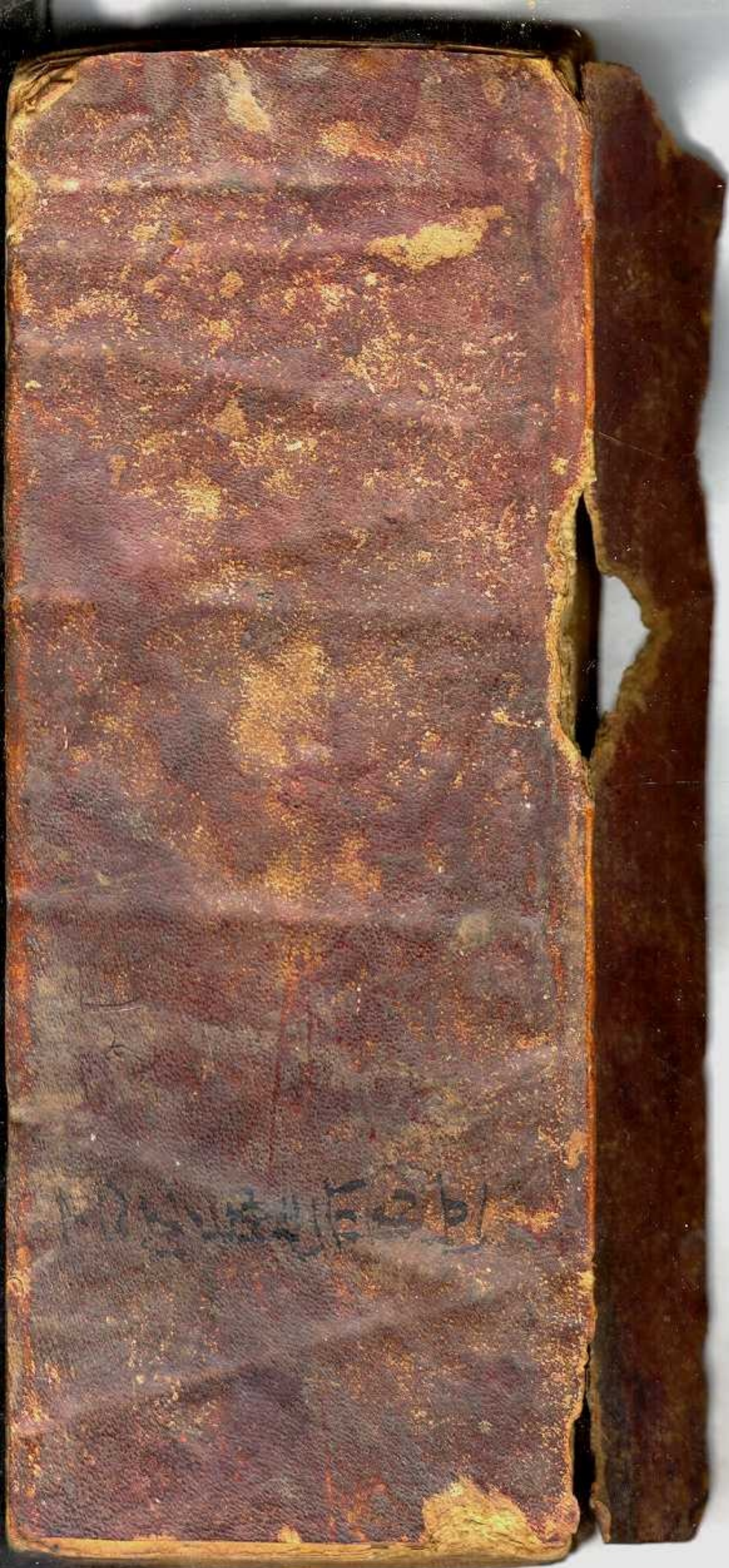




अथ विष्णुपुत्रनिधि

१६ नमो भगवते वासुदेवाय
य ॥ अथ विष्णुपुत्रनिधि
नलिख्यते ॥ तत एकविंशति
दिवसप्रसन्नः श्रीविष्णु
न ॥ वाक् ॥ यजमानस्यामूक
विष्णुमूर्तिपुतिष्ठादशमहर्ष
द्रुतियेककनलार्थमष्टयति
दवाचननिमित्तार्थपुष्पराज
नसमर्पयामि ॥ यदुर्मैरुम
मयदकीयुजावाय ॥
तता गलयागंकावाकवकधि
तविधननकृत्वा गलनार्थम
तावा कर्मनिर्विघ्नार्थ ॥ वाक् ॥
यजमानस्यामूकविष्णुमूर्ति
पुतिष्ठादशमहर्षद्रुतियेकनिर्वि
घ्नार्थगलयस्यावाधननिमि
त्यर्थपुष्पराजनसमर्पयामि
॥ ततामाह्वयार्थं कुर्या
॥ एकविंशतियज्ञेषु कृत्वा
यना ॥ अथामहलसिद्धार्थ
माह्वयार्थं कुर्यात् ॥ राहु
श्रयजमानस्यागंकर्मस
मादिगः ॥ सूतकादिनिवृत्ति
स्यारुसाकोय्यवायक ॥
वाक् ॥ यजमानस्यामूकवि

हस्तया यवोदकमायशु यज्ञप्रणयन
वित्तयेयामात ५

धूमूर्तिपुतिष्ठादशमहर्ष
द्रुतियेकनिमित्तार्थ ॥ विधि
र्थयवायक ॥ ॥ अग्नि
कृत्वा दशमहर्ष ॥ अग्नि
दनक ॥ अग्निवायकविधि ॥

अथपुष्पमिदिवसममनन
इसवकर्मविधानं ॥ कृत्वा कर्म
मालकासं ॥ कृत्वा कर्म
मिधनिमालनेकरुक्कायक
॥ विधिर्थयवायक ॥ गलगुन
नागमनन ॥ वायुजायिना
यपूजा ॥ कोमादी ॥ दवस्कदा
दावगमदुन्द ॥ अग्निनामैक
रुक्काविक ॥ ॥ अननव
ताद्यायनननसा ॥ वाक् ॥ यज
मानस्यानकवमाद्यायनदश
महर्षद्रुतियेकगलगुननाग
मनननिमित्तार्थक ॥ ॥

ततामण्यविधि ॥ यजमान
रुक्कादशमहर्षद्रुतियेक
मण्यरुमियेकनमकृत्वा
सिकायस्यायपुष्पपश्चिमथा
मर्ध्वग ॥ २ ॥ पुष्पवालायक
र्थसिमाकायावदद्विपुत्र
नरायकमूर्तिथाय ॥ नमः

दावलीगानदावदयकमलु
वलाय ॥ ॥ गानदादिगम
॥ यटादूवममर्क, पिलक
तावलीकमा ७ ॥ ॥ विदिगम
॥ विदिदकदवीदावयगाका
दशदिक्मा ७ ॥ ॥ धायला
धूकिकिराकयताका ११ ॥ ॥ लो
यधायमापुध्व, वकमागनय
लोवव, पकजमूरुला रुध
ददिल्लायवककुके, नेमृया
धूमरापाकं वावृथापागुल
सुतं, वायथांरुवितिवर्कुसो
भयितममथायतं, ॥ ॥ गान
उल्लरं वकं पमरुनयकी
किंति, मृधाविष्कोरुनिद्वर्कु
मल्लमर्धयववर्कुके ॥ ॥
यवयल्लवजा ११ ॥ ॥ अथल्लवट
प्रकथरवगव' लदलेसरु, य
अपमवमग' ल्याडाऊयनपू
नमर्तं ॥ ॥ यथसूगका ॥
यथसूग' तग' ४५, थांरुविगा
नृणमलकं, धवलीकनकाका
वकमावीककिंति' ७२ ॥ ॥
यथसूगकागलरु, कमावीरु
गधतन' ७२ नमलुय ॥ ॥ अ

कत, दायल्लमगा, ययकाप्र
का, शायल्लान, धतकाथोल्लम
थाल्लयस्यदिगमर्तं ११ ॥ ॥ उ
र्ध्वमर्तं, कमाककु ११ ॥ ॥ यव
यल्लव, कमाखल्लखिधागमरु
याकलीगाय, कमा २ हल्लकम
नं ॥ ॥ दाल्लमध' जाकलील्ल, कोमि
दाव' वजनमालतं, नदावसं
पुल्ल, तवलि, द' द' काप' द' मि ॥
त' ४ कल्ल' वाय ॥ ॥ यत' वृ' ल्ल
नवासर्व' ल्लान' ल्लानयथाकिंति
॥ लिखिल्लायद्विधाननय' था' दा
जांकिथ' ल्लत' ४ ॥ ॥ अथ' व' व' ४ जा
कि' द' ४, क' कावय' ल्ल' ४ क
ल्ल' ४ पा' लुला' का' ४ य' ध' व
ल्ल' विर्म' यू' ४ ॥ ॥ य' ध' य' ल्ल' व' यू
ल्ल' ध' वि' ल्ल' द' धि' सम' वि' ४ ॥ ॥ य
गा' का' क' र' म' यू' का' ॥ ॥ अथ' वा' य
विर्म' ल्ल' ४ ॥ ॥ य' ल्ल' त' लु' ल' म' यू
ल्ल' ४ ॥ ॥ वा' व' यू' य' ल्ल' ४ ॥ ॥ कि' ४ ॥ ॥ य
न' न' न' व' सि' न' द' द' धि' य' ल्ल' य
वा' ग' के' ४ ॥ ॥ धि' य' न' द' सि' म' यू' का'
व' म' ध' य' ध' सू' ग' के' ४ ॥ ॥ ग' म' य
म' ध' य' ४ सा' ४ ॥ ॥ द' द' वा' क' त' ॥ ॥ दि' रु
वि' ४ ॥ ॥ य' ध' म' ल' ल' स' मा' यू' का'
व' लि' कु' जा' व' ना' दि' क' ॥ ॥ ला' रु' म

शिवकृता धारयकं मन्त्राय वि
स्तिर्गं। मयर्कं न जने न कुः यश्च
न तेषु यूरिर्गं। नाना नैव श्रव
स्तु रिः पुण्यान्या रिर्न वा दि रि
४। धूपदीप कृता दी रिः साम
ग्री विरुवा दि रिः। वाहिनी ध
जले द्वाः कलशा दि यूर
य ७॥ एव कलशा कुलुला दि
स्तानस्तान नि या ऊ यित्वा उ
यस्तानैः पूजय ७॥ न्तिकल
श कुलुला दि वा य विधिः ॥

ततः प्रागस्तानादि नित्य कर्म
कृत्वा ॥ यस्तु मणुप नै मयदि
निवाश्च यजमान नायम्य ॥ म
यादि ॥ यजमान स्या मूक मूर्छि
स्तापन निमित्तार्थं श्रीसूयायि
मूर्धनि मः ॥ यूर्य २॥ उं भाद्रा
ध्वका वति ॥ मृ विजा दि या दा
र्य ॥ उं दमा सन ॥ या दार्य न
मः ॥ मालिका र्क या दार्य ॥

ततानै मयदात्रा एतु कित्वा
ग्रावा मृलो वलि द्ययं दार्य ॥
गुवनमस्तानन्या सा द्य पात्र
यूजा तमयूजनीय ॥ ॥

वलि द्यय ७॥ गृहना मा कृत्वा ल
गल वद क कृत्वा ल ॥ नवात्मा
॥ रुकुका दि मृ निगा मृ दि य
क्राव्या दि ॥ धन कृपा तम ॥ ॥
उं दानि रसि हाय वलि गृह २
स्वाहा ॥ ३॥ धन कृपा तम ॥ ॥
उं विष्णु नाय उं दमया यूर्य
धूपदीप पूजा वलि गृह २ स्वा
हा ॥ यथ मवलि यार्म ॥ वद ॥ उं
मृर्तयुतया वान ॥ उं विष्णु
नाट ॥ उं गलानां त्वा ॥ उं नमा
वस्तु नाय ॥ उं मृ मृ मृ न्तिक ॥
उं विष्णु मृ मृ ॥ उं पाथी दि ता
॥ उं धूर सि ॥ धूप ॥ उं गजा सि
॥ दी य ॥ जायस्तान ॥ सर्व कर्म
धिनाथ गलप निवद क मा मृ
काथा निनी रिः कृष्णा र्क नाक
सैश्व सकल यत्रिकला रिश्च द
वाश्च नागाः यकाः कर्तुं श्रवा
द्याः यवला मृ गला लाक या
ला दिगी शाः मर्च रु गाः विगा
वास्तु वलि विधि नाया नृणा
नि सदैव ॥ मृ मृ मृ मृ दि ॥ ॥
न्या मा मृ ला वलि विमर्जनी ॥ ना
मृ र्ति रु वलि मणुयं नाम यित्वा
मृ र्ति वस्तु यय ७॥ विष्णु मृ न

वाले स्नान क्रिये ७ ॥ वलि विधि

ने मुख दावा लुक्ता ॥ आवा
थाल न्यास कृया ७ ॥ वाम रुक्म
नवा हि वाजसर्षप धृत्वा ॥ दक्ष रु
क्म नवा नैषाद यदभुन ॥ ॥

दिशामुवीरिन उमर्षप क्रिये
७ ॥ उं न्यासा ॥ १ ॥ ॥

तना दान पूजन ॥ उं गलाय गथ
नमः ॥ उं उं उं विलिख वाम ॥

उं मनस्यै २ ॥ उं उं विलिख द
क्ष ॥ उं दाने प्रिये २ ॥ उं उं विलि

कम ॥ ॥ उं उं याये २ ॥ दान द
क्ष ॥ उं विजयाये २ ॥ वाम ॥ उं

दक्ष ली २ ॥ दक्ष ली ॥ मूल ना
वलाय ॥ उं उं काधन ॥ ॥

तना नावा वमुद्रया भुला वि
नजसर्षप क्रिये ७ मण्डपमधु

॥ यस्मिन् पुण्ये विष्णु दक्षया द
र्शकृत्वा ॥ उं याता लसं क्रिया

थमुद्रि विष्णु या न विष्णु गा ४ ॥
विष्णो दाना थय पुना संनर्ष

ली गवा रुया ॥ उं उं रुय शुभ ॥

दक्ष ली मम कलर्ष पूजय ७ ॥
उं मम मूर्ति थं दमा सन २ ॥

पूष्य २ ॥ ध्यान ॥ उं यद्वा सने क
वकावरुमव लुक्ता यो वना स
वरु रुध ता यर्ष वी भन तर्जनी
धृत्वा ॥ निर्विघ्नै यस्मिन् कृया थं
तर्जनी या यत सदा ॥ ध्यान पू
ष्य २ ॥ उं नका रुने ॥ आग ॥ उं
तर्जनी रुक्म संयुक्ता मम नूयम
क्षारु मां ॥ सर्व विघ्न कृया थं थं
मम मूर्ति नमा म्हा ॥ धृय दी
य ॥ उं निदान दान याग विधि ॥

ततः यद्वा साधन ॥ धीत
वुर्लु तन वका थं विलिख ता

जाक यन कृत्वा ॥ वाय विधि ॥
दक्षिण पुण्ये ता रुय ॥ गामुर्ग

दक्षिण ता थ ॥ यथ ॥ यथि मता
रुं यं युत ॥ उं वा लव रुव ७ ॥ आ

॥ नथ ॥ गामय लिङ्ग ने मुखी पू
ष्य राजनी ॥ वाय थ ॥ गामय वि

द्या दीशान गुक्ता ॥ गायक ॥ गाम
या रुय विष्णु ल स रुम ॥ उं वा

विर्ग ॥ दक्ष सन निधाय नि दक्ष
द्या विष्णु थं कृथ कृथ ॥ ॥ तत

३ पूजन ॥ उं म्हा दि ॥ यजु मा
नस्य थ ॥ थ कृ रु लया कृ थ म

मूक विष्णु मूर्ति ल्हा यन दक्ष स

[illegible]

वचनान्नसन् सस्यवता ऊ
 गता हिः पृथक् नासमिधूमता
 मधूमता हिः पृथक् ना ॥ ॥
 आलोचनं ॥ उंजनयस्येतासं
 धामीदमग्निदिमनीधाम
 आविषत्वाद्यभासिद्विषाय
 वृषथा उवृषथस्यावृषय
 घनिः यथनामनिष्कृत्यमा
 दिवसाद्वत्वा सविता प्रपय
 गुह्यविषिष्टधिनाक ॥ ॥
 सलयिनकायूर्यं धृजा ॥ वन्द
 नसिन्दुनयजमं पूषादि हिः ॥
 गायत्रीमणं लयं पूषा ऊ
 लिं ॥ जायस्मान् ॥ उं निर्मलका
 यवृषाज वृषस्मान् प्रवर्तिन
 । शुभं गायय पूषां प्रविनि
 र्वृषा वृषिर् ॥ ऊर्गंधादि

यश्च गवाक्षिणार्गकावय ७ ॥
 न कुरु। एतन्। गोमया लिङ्गस्मा
 न् ॥ ७ ॥ गोमया लिङ्गासदाशिवो
 य २ ॥ जलस्नानयश्च गवाक्षान्
 यन्दनादिदुर्गायस्त्रायवामयू
 र्ध्व ॥ वय ॥ ७ ॥ सद्यो जागो ३ ॥
 धूपदीपकपुष्पाणि ॥ ७ ॥ गोम
 यलिङ्गवृथाय सद्यो ययत्ता
 गिन् ॥ सद्यो ययविगायगत्वे

नं॥ स्तुतिविधौ॥ स्तुतिनववलि

गणेशमिष्टाधनं॥ न्यास॥ ॐ
हृदयोय २॥ पृथ्वीस्तुतिधनं॥ ॐ
ह्रिनल्लग्नं॥ ॐ पृथिवी २॥
ॐ ह्रन्मिसिरुमित्रसिद्धिनित्रसि
विश्वधायविश्वस्यरुवपास्य
धर्मापृथिवीदिसरुपृथिवी
मा। मा। हि। स। सी॥ क॥ ग॥ द॥ क॥ न॥ सि
वनं॥ ॐ तत्त्वायामि॥ य॥ अ॥ ग
वानसिधनं॥ ॐ त्वम॥ न॥ द्यु॥ रि
॥ अ॥ र्ध॥ पा॥ था॥ द॥ क॥ न॥ सि॥ व॥ नं॥ ॐ
द॥ व॥ स्य॥ त्वा॥ न॥ थ॥ यु॥ ज॥ नं॥ ॐ स
क॥ य॥ ऊ॥ नि॥ व॥ दि॥ स्ता॥ य॥ नं॥ ॐ
व॥ द्या॥ सि॥ थ॥ न॥ त्वं॥ द॥ व॥ द॥ द॥ व॥
श्वा॥ व॥ द॥ र॥ व॥ न॥ न॥ म॥ द्यं॥ व॥ द्या
र॥ या॥ ७॥ वा॥ सा॥ द॥ य॥ ज॥ नं॥ ॐ
स्य॥ क॥ लं॥ ॐ द॥ व॥ स्य॥ त्वा॥ ॐ द्या
स्त्वा॥ धि॥ य॥ त॥ थ॥ व॥ द्या॥ न॥ म॥ ४॥
ॐ य॥ स्त्वा॥ मू॥ श्र॥ मि॥ व॥ नू॥ ण॥ स्य॥ मा॥ नी
ग॥ न॥ त्वा॥ व॥ द्या॥ मि॥ स॥ वि॥ मा॥ सू॥ क॥ द
धा॥ नु॥ १॥ अ॥ मि॥ न॥ ला॥ क॥ सु॥ क॥ र्ग॥ य॥
ला॥ क॥ स्त्वा॥ न॥ न॥ स॥ रु॥ य॥ ला॥ क॥ वा॥ मि
॥ ॐ द्या॥ ४॥ ग॥ नि॥ ॥ य॥ ति॥ ष्ठा॥ ॥ ॐ नि
म॥ लु॥ य॥ ला॥ धन॥ वि॥ धि॥ ४॥ ॥

पीतवर्णनमस्तुतयैकत्वा
॥ निपूजनं॥ दक्षवोहि॥ ॐ गं

निकायनिवासमूर्तय २॥
ॐ वारुयश्चमं॥ वामलाजा ॥
ॐ यदिकायविष्णुमूर्तय २
॥ ॐ दं विष्णु॥ म॥ ॐ स॥ मा॥ ऊ॥
नी॥ ॐ स॥ र्वा॥ वि॥ द्या॥ वि॥ ना॥ गाय॥ व
न्ना॥ म॥ मूर्तय २॥ ॐ व॥ द्या॥ य॥ र्ना
नं॥ ॐ मि॥ य॥ द्या॥ वि॥ द्या॥ य॥ नं॥ ॐ
वारुयश्चमं॥ लाजाक्षयनी॥ ॐ
स्वस्तिन॥ ॐ द्या॥ ॥ वामरुक्मि॥ न॥ गं
म॥ य॥ लि॥ र्गं॥ अ॥ र्ध॥ पा॥ र्गं॥ व॥ द्या॥ द
दि॥ ला॥ रु॥ क॥ न॥ न॥ मा॥ ऊ॥ नं॥ द॥ दि॥ ला
व॥ क॥ न॥ मूल॥ क॥ ल॥ ग॥ य॥ र्गं॥ ॐ
वा॥ य॥ वा॥ या॥ दि॥ यो॥ त॥ थ॥ द्या॥ ना॥ रु
वा॥ द्या॥ ग॥ य॥ ॥ य॥ वि॥ ला॥ न॥ द॥ स्य॥ धा
म॥ स॥ ॥ ग॥ म॥ य॥ लि॥ र्गं॥ क॥ ॐ य॥ र्गं॥ मा
मे॥ ष्ठं॥ का॥ य॥ नि॥ स्ता॥ य॥ ॥ स॥ मा॥ ऊ॥ नी
नि॥ व॥ द्या॥ वि॥ द्या॥ नि॥ धा॥ य॥ ॥ ग॥ म॥ य
लि॥ र्गं॥ वि॥ वा॥ स॥ न॥ पू॥ ज॥ ॥ ॐ न॥ म॥ ४
ग॥ म॥ वा॥ य॥ व॥ ॥ ॐ नि॥ म॥ लु॥ य॥ ला॥ न॥ म॥

गणेशकलगाश्चनं॥ यजमानन
॥ अ॥ द्या॥ दि॥ ॥ ॐ भा॥ रु॥ म्भ॥ का॥ व॥ ॥
यजमाननयूष्यराजनं॥ ॐ सि
द्धि॥ न॥ म॥ क्रि॥ या॥ ॥ यजमाननयूष्य
दि॥ वा॥ क॥ ॥ मू॥ ला॥ या॥ र्गं॥ स॥ म॥ य॥ र्गं॥

गणेशनिवर्तककलगाश्चनं॥ गं
कि॥ द॥ क॥ नि॥ व॥ वा॥ म॥ वि॥ य॥ वा॥ न॥ न
का॥ य॥ ॥ ॐ न॥ म॥ स्ता॥ व॥ न्या॥ स॥ ॥

देवममकुर्वन् यातवर्षं वपुर्व
 जं। गायत्रीयु न्यसि वन्दे मृग
 दमजिनायकं॥ अंगगन्धादि
 ॥ **॥ खव २ ॥** उक्तं यथा
 १॥ **ध्यानं** ॥ उक्तं यथा
 गीश्वरं यथा विना विना
 गीश्वरं यथा विना विना
 यमदा॥ **॥ अङ्क ३ ॥** **॥**
 यथा विना विना विना विना
 वपुर्वजं। कथादि यथा विना
 नं रुजामिरुयनायकं॥ ॥
 पूर्वजव ३॥ उक्तं यथा २॥
 ध्यानं॥ उक्तं यथा विना विना
 दगाध्वस्तं यथा विना विना
 लिद्विवाद् यथा विना विना
 सदा॥ **॥ अङ्क ४ ॥** **॥**
 गीश्वरं यथा विना विना
 विरुचिनायकं यथा विना विना
 यनिगानाथनमाम् ॥ ॥
 पूर्वजव २॥ उक्तं यथा २॥
 न॥ विरुचिनायकं यथा विना विना
 कं वक्रं यथा विना विना
 गीश्वरं यथा विना विना
 निमृष्टं॥ **॥ अङ्क ५ ॥** **॥**
 लं जगत् गीश्वरं यथा विना विना
 वलीनकं यथा विना विना

ममध्वस्तं यथा विना विना ॥ **॥ पूर्वजव ४ ॥**
 ॥ उक्तं यथा विना विना ॥ **॥ ध्यानं ॥**
 उक्तं यथा विना विना यथा विना विना
 यथा विना विना यथा विना विना
 दाया विना विना यथा विना विना
 न॥ उक्तं यथा विना विना ॥ **॥ अङ्क ६ ॥**
 उक्तं यथा विना विना यथा विना विना
 यथा विना विना यथा विना विना
 नं यथा विना विना यथा विना विना
 पूर्वजव ४॥ उक्तं यथा २॥ **॥ ध्यानं ॥**
 ॥ उक्तं यथा विना विना यथा विना विना
 स्वर्गं यथा विना विना यथा विना विना
 रुक्तं यथा विना विना यथा विना विना
 मही यथा विना विना यथा विना विना
 ॥ **॥ अङ्क ७ ॥** **॥**
 ॥ उक्तं यथा विना विना यथा विना विना
 मादुर्गं यथा विना विना यथा विना विना
 वलिनायकं यथा विना विना ॥ ॥
 जव पूर्वजव ४॥ उक्तं यथा २॥
 ध्यानं॥ उक्तं यथा विना विना यथा विना विना
 धृगानीलायकं यथा विना विना
 यथा विना विना यथा विना विना
 यथा विना विना यथा विना विना
 भगवत् यथा विना विना यथा विना विना
 निर्मलं यथा विना विना यथा विना विना
 धानकं यथा विना विना यथा विना विना
 यथा विना विना यथा विना विना

जायसाग॥ॐ महावीर्यमिहाक
यउदयनिमरागिनिवि॥विठपा
यऊनामानिसर्वदवनमामुग
॥धवदानवगन्धर्वयिकवाक
सयन्नगा॥४॥सर्वममाध्वनक
नेकांकुर्वकुभमदा॥जूर्ययऊ
तववकलीयंसर्वाधिदृष्टावि
नियातिगार्य॥दावादिदेवहि
तव्वत्तुपुत्रवकांकुनूत्तुदिल्ल
दानी॥४॥जूर्यगधादि॥ॐनियू
र्वदावावृत्तविधि॥

तमादकिणदावावृत्तनी॥न्यासाद
यागयूजा॥ॐदकिणदावाय२॥
ॐउदुम्बरवृकाय२॥ॐतत्वाया
मि॥जूर्यकली॥ॐपृथिवी२॥ॐ
स्थानायेधिवी॥ॐपृथिवी२॥ॐ
थगतयन्त्रा॥ॐरुग्निगवाय२॥
ॐयत्त्राविष्टु॥ॐसूर्यायदावा
यनम॥४॥यूर्यवृत्त॥ध्यानं॥
ॐकृजन्तवरुवाविहृममगलाह
झावलीसंकिताःपक्षाणीनिद
दाकूलनिविदवृत्तवृकदवाल
यं॥जुभादीसूर्यदामनारुवध
ना॥यूर्याकूलाट्टा॥सदाग्रिमनी
विदगीगलासिदसिनीधायस
दाकि॥४॥वद॥ॐदावादेवी॥
साग॥ॐयाम्बावामितगन्धमा

दत्तमहालीलाकृमायमरुद्वा
वतिष्ठतिदवकिन्नगला॥४॥सं
सयमानास्वर्वा॥ॐगायविद्यु
वात्यलाययद्यनोगमनधा
नारुव॥४॥माययवतदरुष्टुमस
कलानिर्ह्यनमादकि॥४॥
यमकल॥याजव॥ॐवृत्तय
२॥ध्यानं॥ॐवृत्तमत्तसिपृष्ठा
रुभकवकुगिलावनी॥दलुकि
गगदावकीपदसुर्वविमदनी
॥ॐवृत्तवती॥साग॥ॐजूर्य
सापृष्ठासंकाशीलकलीनृय
रिती॥सर्वविद्यविनाशश्रवण
मूर्तिनमाम्बु॥॥खवस॥
॥ॐयवृत्तय२॥ध्यानं॥ॐयव
जुभकवकुश्रुष्टवृत्तुक्रमंति
ती॥खवृष्टकवालीवधुनूवि
द्युपुमदकी॥ॐधवपुती॥सा
ग॥ॐकृष्णगार्गसखासोर्नखवृ
ष्टकधाविनी॥विद्युमदकन
धवयवृत्तुपुलमाम्बु॥॥
दकिणयाजव॥ॐयवृष्टदा
य२॥ॐखवृत्तुयवृष्टदवृ
वृष्टिसूलाहनी॥विदपुनीवाक
मालाधनूवृत्तुवृत्तु॥ॐवृ
वृत्त॥जूर्यगधादि॥॥
दकिणयाजव॥ॐयवृत्तयूगा

यश ॥ ध्यान ॥ ॐ ह्रमवर्णनिरु
 धर्वं गत्र श्रवणं धनं सुधा । गदा
 वक्रधर्वं हस्तं गता युगं मरुतं
 ॐ ॥ ॐ मूकवाजा ॥ जूगमन्वादि
 ॥ ॥ दशव ॥ ॐ वृक्षाय ॥
 ध्यान ॥ ॐ कलिकान्तदला हस्तं
 धीताम्रवर्णं ताडकं । खड्गं यमधृ
 तं ध्यायं मृगान्तासनं गंधर्वं ॥ ॐ
 दध्वास्वा ॥ जूगमन्वादि ॥
 देखव ॥ ॐ वृहस्पतये नमः ॥
 ध्यान ॥ ॐ चतुर्वर्द्धिं सुवायार्थं
 वनदशकं सुगंधं । धीताम्रवर्ध
 नं ध्यायं धृगंदलुकमं तुल्यं ॥ ॐ
 वृहस्पतये नमः ॥ जूगमन्वादि ॥
 ॥ ॥ दक्षिणव ॥ ॐ व्यासाय
 २ ॥ ध्यान ॥ ॐ धीताम्रवर्णं महाका
 र्तिवर्णं युष्कं रुक्मं । सर्वगं सु
 प्रवक्तारं ध्यायं व्यासं मुनिं सदा
 ॥ ॐ शस्यं कूर्म ॥ जूगमन्वादि ॥
 ॥ ॥ देखव ॥ ॐ ह्रनूमनं ॥
 ध्यान ॥ ॐ वक्रवर्णं महावीर्यं
 वायुयुगं किलावर्णं । सुन्दरं
 लक्ष्मणं धीताम्रं नमः विविक्त
 यं ॥ ॐ त्रिवाण ॥ जूगमन्वादि ॥
 ॥ ॥ दशव ॥ ॐ निर्मदाय
 २ ॥ ॐ मूकवाजाय मधुमतीवर्णं

श्रुतातमेतस्या न कृत्वा ॥ सल
 रा उल्लेखः । तस्मै नमः ताजनय
 त्मपत्नीमातवर्णं विवृता
 कन ॥ ॥ ॐ निर्मलानि
 मृगाय वी । रुक्मं सनाय हवि
 ली । ममयुजां गृहाणां निर्म
 दाय नमः सुतं ॥ जूगमन्वादि ॥
 ॥ ॥ देखव ॥ ॐ सवर्धं ॥
 ॐ द्युतनुगीतामधुना समश्वातां
 विष्णुं देवैर्नमः गोमवर्द्धि ॥
 उर्ध्वं चतुर्ध्यायं सासुमानिमा ॥
 सताय यमायावर्णं स्व ॥ ॥ ॐ
 ॥ ॐ सवर्धं विविख्याता सर्व
 मङ्गलकाविली । उक्किदामुक्कि
 दाय वी । नमः सुतं यसादम ॥
 जूगमन्वादि ॥ ॥ ताव ॥
 ॐ गलायतय ॥ ॐ गलानीला
 ॥ दक्ष ॥ ॐ सवर्धं ॥ ॐ याव
 कान ॥ वभि ॥ ॐ मरुलक्ष्मी ॥
 उर्ध्व ॥ ॐ वनाहाय ॥ ॐ वि
 ध्वावरा ॥ तावताम ॥ ॥
 तताय मकलं ययुजनी ॥ ॐ य
 माय दलुहमा ययुगाधिप
 तय ॥ ॥ जूवाहन ॥ ॐ नक्षत्रि
 वेवस्वतधर्मवाजं सर्वमिनेन
 विवर्धनं मूर्ध्नि । गुरुगुरुनय

शुभामधीशनिवाय न ४ या हि
 मखनमसं ॥ ध्यानं ॥ उं कृता न
 महिषावृष्टं दधु रुसं रुयान
 कं । कालयागधनं कालं ध्याय
 दक्षिणादिभूत ॥ उं अभनदलं
 ॥ सा ॥ उं दधु रुसा यमाधवा
 धमाधु कामरावल ४ । काल
 वृषधवा नित्यधमनाउनभा
 मुते ॥ ॥ उं पू लीकधजा
 य २ ॥ उं नूमाकमिनु ॥ उं यल
 वाय २ ॥ उं नूधसू ॥ उं कृगाय
 २ ॥ उं वरुस्यनकुदि ॥ तिनुज
 ॥ उं यवृकषू ॥ गामयाय २ ॥
 उं गन्धदान ॥ उं दूषाये २ ॥
 काष्ठाकाष्ठा ७ ॥ उं सयपाय २
 ॥ उं हूमावृदा ॥ उं यश्रसृगा
 य २ ॥ उं नका रुपी ॥ उं वकाथ
 २ ॥ उं ल ३ विष्टद ॥ चननादि
 वलि ॥ सयनिष्ठा रुव ॥ उं यन
 यका ॥ धूपदीपजयसाग ॥ उं
 महावीथामहाकाय रिना ३
 नसमय ४ । तगदाय किर्तनी
 लकेलागसं सुगा रुनी धवदा
 नवगन्धवायकनाकसपन
 गा ४ । सवममाधु नवकनका
 कृष्णकुमसदा ॥ नूर्यवयसं

तव नदलीयं सधा विदुष्टा वि
 नियातिनायं । द्वात्रादिदेवलि
 तदकिष्णोत्तावकां कूवृसं स्व
 दिष्णादिगीग ४ ॥ नूरु न न्नादि ॥
 ॥ गिदकिष्णवात्रावृर्न ॥ ॥

ततः यश्चिमदावावृर्न ॥ न्यासा
 दि ॥ उं यश्चिमदावाय २ ॥ उं नू
 धकृकृकाय २ ॥ उं तत्वाया मि ॥
 नूरु कर्ण ॥ उं यश्चि २ ॥ उं न्या
 नायश्चिवा ॥ उं यश्चि २ ॥ उं
 यतयन्का ॥ उं ववतावलाय २ ॥
 उं वलाविष्टु ॥ उं कल्यानदा
 वाय २ ॥ ध्यानं ॥ उं जायनेककू
 राणितास्तु रिपतं नसायलाय
 मरुतु द्वालावलुलगाय विश्व
 सकलाय दद्यामान ४ मदा । या
 द्याणां निशय ४ समस्तमदाया
 वेदुयत्रलालथानानादानव
 रुतायुक्कजनालीलाकिता ४
 यश्चिम ॥ वद ॥ उं द्वात्रादवी ॥ सा
 ग ॥ उं सागवावृणमधुलनिवि
 द्वाविष्ठा ॥ उं उवायक ४ याया
 गातिगथामहाधनतव ४ सूर्या
 रुमार्यनिवि ४ । क्लिप्तावायल
 धवदानवगलेनिर्लसदासय
 तनानाकृदिमसाहिर्गहिसकल
 कृसायलनीमहं ॥ ॥ ववृण

म्यानापृथिवी॥ॐ यथिश्वा२॥
 ॐ यथयन्त्र॥ॐ ज्ञानाग्न्यामान
 लाय२॥ॐ चत्वारिण्यु॥ॐ सु
 रदुदावाय२॥ ॥ ध्यानं॥ॐ
 श्रीमान् श्रीविद्वान् श्रीमन्मन्त्रक
 मथादलुक्तं॥ॐ यथिश्वा॥ गंगा
 धीदिजागोपुनृतनदृष्टदावंगम
 वाणि॥ॐ सुभन॥ॐ नानायाकाश
 धानां विलसिते रुव॥ॐ किन्नुवा
 ॐ ली विलासा निर्गमिस्तानरुमि
 ॥ॐ यज्ञेन विधिवत् रावनीयामरु
 दि॥ॐ द्वावाय२॥ॐ ॥ॐ
 श्रीलिलान् सुभननामहिमरु
 त्सर्वगसिद्धिस्तथातानावृक्ष
 माकुलानिकनकं खनीमदास
 वृत्त॥ॐ नारीगन्धमनाहवेलनि
 ययश्वावृ॥ॐ गिलाय॥ॐ ॥ॐ
 यथैव तत्राजनामगविमानिर्ग
 नमस्तुगि॥ ॥ॐ यथयज्ञ
 वा॥ॐ विष्णुश्च नाय२॥ॐ ध्यानं
 ॥ॐ नकास्यं श्रीमवर्णुचविष्णु
 नाकुर्मिर्गं गदायकासिर्ग
 र्ववर्वाकासिद्धिरुलपुदं॥ॐ
 यतद्विष्णु॥ॐ ॥ॐ श्रीमवर्णु
 मरुकायं गदायकासिर्गखकं
 ॥ॐ कासिद्धिपदागानं विष्णु

ननमाम्यहं॥ॐ गङ्गादी॥ ॥
 उखव॥ॐ कृष्णालाय२॥
 ॐ नकास्यं कपिलं गुर्कं गूलख
 द्वाकुधविर्गं॥ॐ खनीकुणधर्वकं
 गुपदास्यं रुसिद्धिदं॥ॐ विष्णु
 वनाटमसि॥ॐ ॥ॐ विनर्गवि
 नर्लवोदनीला॥ॐ नसमयर्गं
 यरुसिद्धिपदागानं कृष्णालं
 नमाम्यहं॥ॐ गङ्गादी॥ ॥
 उखव॥ॐ ॥ॐ यथैव दाय
 २॥ॐ ध्यानं॥ॐ यथैव कृष्णवर्णु
 मं॥ॐ खनीकुणधर्वकं॥ॐ नलपुष्प
 करुर्गवविनयाम्पुर्गवर्गि
 ॥ॐ गन्नाय२॥ॐ गङ्गादी॥
 ॥ॐ उखव२॥ॐ कलियुग
 य२॥ॐ ध्यानं॥ॐ कलिकुलव
 र्णुर्गं॥ॐ खनीकुणधर्वकं॥ॐ मलि
 र्गवर्गविधुर्गकलिमुर्गिर्वि
 वय॥ॐ ॥ॐ यथैव नाय॥ॐ गङ्गा
 दी॥ ॥ॐ उखव२॥ॐ वा
 रुव२॥ॐ ध्यानं॥ॐ यथैव वृष्यख
 पुवर्मगुर्लववदधविर्गं॥ॐ नी
 लपुष्पस्यमं॥ॐ यथैव र्गं
 र्गिकासर्गं॥ॐ कयानपुर्गं॥
 गङ्गादी॥ ॥ॐ उखव
 २॥ॐ कयव२॥ॐ ध्यानं॥

[illegible]

रुक्मिणीस्तुतम् । चिन्मयसमस्तक
 म् । कर्मजातुर्धर्मविविक्तम् ॥ ॐ
 निम्नम् ॥ ॐ ॥ ॐ सर्वगतम्
 मयाध्यातव्यम् ॥ ॐ मित्राद्युति
 ॥ कागासनम् ॥ किधवावेष्टम्
 नवनमामुतम् ॥ ॐ उच्यते
 दायम् ॥ ॐ गतावत् ॥ ॐ मल
 यतम् ॥ ॐ गलानात् ॥ ॐ सन
 त्वम् ॥ ॐ पावकान् ॥ ॐ मरु
 लम् ॥ ॐ गायत्रम् ॥ ॐ कुम्भ
 दाक्षजम् ॥ ॐ अस्माकम् ॥
 ॐ यन्त्रवायम् ॥ ॐ अष्टम् ॥ ॐ
 कुगायम् ॥ ॐ वृहस्पतकृदि ॥ ॐ
 सर्वथायम् ॥ ॐ ॐ मान्दयम् ॥
 ॐ गामयायम् ॥ ॐ गन्धर्वम् ॥
 ॐ दूर्वायम् ॥ ॐ काष्ठम् ॥ ॐ
 ॐ वृक्षायम् ॥ ॐ निवृजम् ॥ ॐ यव
 कम् ॥ ॐ यश्चसूगायम् ॥ ॐ न
 काहम् ॥ ॐ नकायम् ॥ ॐ लव
 विष्टम् ॥ ॐ यन्त्रादिवलिप्रति
 ष्टम् ॥ ॐ सूर्यतिष्ठम् ॥ ॐ यन्त्र
 यन्त्रम् ॥ ॐ यद्यप्यजायमानम् ॥
 ॐ अथश्रयस्तवैकलीयम्
 ध्यायिदृष्टाविनिपातिनाम् ।
 द्यावादिदवस्तिगन्तव्यम्
 नकायम् ॥ ॐ विदिगीकानम् ॥
 गन्तव्यम् ॥ ॐ गन्तव्यम् ॥

तमाने सुखदा वाचने ॥ न्यासा
 दि ॥ ॐ नै सुखदा वाय २ ॥ ॐ वू
 तव काय २ ॥ ॐ तत्वा यामि ॥
 गुरु कर्ण ॥ ॐ पृथिवी २ ॥ ॐ स्था
 ना पृथिवी ॥ ॐ यथिखा २ ॥ ॐ
 यत यन्ता ॥ ॐ भानवाय २ ॥
 ॐ बला विगुम्हा ॥ ॐ कार्किदा
 वाय २ ॥ ॐ द्वावा दवी ॥ ॥
 ॐ नै सुखाय खगुरु स्ताय २ ॥
 ध्यान ॥ ॐ गवर्धने मूर्ति कर्ण
 खगुरु स्त मरुवर्ण ॥ नका कर्ण
 वरावाद्य ध्याय र्ना कस्य वने
 ॥ ॐ यन दवी ॥ स्ता ॥ ॐ नी कू
 दं दं ललजि दं रीषर्ण विद्वान्
 नर्न ॥ कया लया लिम ली र्द्य पि
 वर्न नो मिने मूर्ति ॥ ॥ ॐ उ
 यव दाय २ ॥ ॥ भानवा ॥ ॐ ग
 लय गय २ ॥ ॐ गलानां त्वा ॥ ॐ
 सनख र्थ २ ॥ ॐ पावकान ॥ ॐ
 मरुलक्ष्मी २ ॥ ॐ र्मा प्रग ॥ ॐ वा
 मन धजाय २ ॥ ॐ गुरुमा क मिन्द
 ॥ ॐ कृगाय २ ॥ ॐ वृरु स्य ग क
 दि ॥ ॐ सूर्य याय २ ॥ ॐ ॐ मान
 दाय ॥ ॐ गाम याय २ ॥ ॐ गन्ध
 दाना ॥ ॐ दूधार्थ २ ॥ ॐ का उ
 का उ २ ॥ ॐ य वर स गाय २ ॥

ॐ नका कर्ण ॥ ॐ सर्ववृकाय
 शक्ति वृज ॥ ॐ य वृकाय ॥ ॐ
 नका र्थ २ ॥ ॐ त्व ऊ विष्ट ॥
 वन्दना दिव लिपु तिष्ठा ॥ ॐ
 सृष्टि मिष्टा रुव ॥ ॐ यत य
 ॥ ॥ ध्रुव दी यजा य स्ता ॥
 ॐ गुरु य व य र्ना त व न कर्ण
 र्थ सव विद्वद्वा विनि यामि
 तद्य ॥ द्वावा दिद व स्तिन ॥ ॥
 रम तिष्ठ मद्रु याव धन या
 मग्न कथा स्ता य ॥ लिख स
 नाथ ॥ यति १ ॥ गुरु न ख उ ॥

ॐ गान दान पूजा ॥ न्यासा दि
 ॥ ॐ ॐ गान दान वाय २ ॥ ॐ त्व
 ता कृते काय २ ॥ ॐ तत्वा यामि
 ॥ गुरु कर्ण ॥ ॐ पृथिवी २ ॥ ॐ
 स्था ना पृथिवी ॥ ॐ यथिखा २
 ॥ ॐ यत यन्ता ॥ ॐ भानवाय
 २ ॥ ॐ बला विगुम्हा ॥ ॐ वृद्धि
 द्वावाय २ ॥ ॐ द्वावा दवी ॥ ॥
 ॐ ॐ गाना य विगुल रुक्ताय
 २ ॥ ध्यान ॥ ॐ ॐ गान न वृष व
 हा वृष्ट गूलि न बाल रुक्ता
 ॥ गवर्धना व दान र्थ न्य मोलि
 जिला वने ॥ ॐ तमी गान ॥ स्ता
 ॥ ॐ द व द वा ज ग नाथ ॥

मूलया लिख्यध्वज ४। ४०
गानाय महगाय गङ्गाधर
नमामुते ॥ ॥ ॐ उद्यव
दाय २ ॥ ॥ गान ॥ ॐ ग
यतय २ ॥ ॐ गाना ना ॥ ॐ
सत्रसुते २ ॥ ॐ पावकान ॥ ॐ
महालक्ष्मी २ ॥ ॐ गीधन ॥ ॥
ॐ सुप्रतिष्ठुदाय २ ॥ ॐ अ
स्माकमिन्दु ॥ ॐ यन्त्रवाय २ ॥
ॐ अष्टसूय ॥ ॐ कुगाय ॥ ॐ
वृहस्पतकुदि ॥ ॐ सप्तपाय
२ ॥ ॐ मातृदाय ॥ ॐ गाम
याय २ ॥ ॐ गन्धदावा ॥ ॐ दू
ष्टीय २ ॥ ॐ काष्ठाका ॥ ॥ निवृज
॥ ॐ यवकषू ॥ ॐ यवसूरा
य २ ॥ ॐ वक्राहरी ॥ ॐ वक्राय
२ ॥ ॐ वक्रविष्ट ॥ ॐ वक्रनादि
वलि ॥ ॐ यतिष्टा ॥ ॐ सुप्रतिष्ठा
रुव ॥ ॐ यनयका ॥ ॐ यदी
यजायका ॥ ॐ अयययय
तववकलीय सप्तविद्वष्टा
विनिपातितथा ॥ द्वावादिद
वक्रितयगका ॥ ॐ वक्रावक्राव
स्वस्वदिष्टा ॥ ॐ दिगीग ॥ ॐ अयग
मादि ॥ ॐ गीगानद्वानावर्तनी ॥

तताध्वानावर्तनी ॥ तामादि ॥
ॐ अष्टावाय २ ॥ ॐ अष्टव
वक्राय २ ॥ ॐ गतायामि ॥ अ
ष्टवर्तनी ॥ ॐ यतिष्टा २ ॥ ॐ अ
नाष्टविष्टा ॥ ॐ यतिष्टा २ ॥ ॐ
यनयका ॥ ॐ गानाय २ ॥
ॐ वक्राविष्टा ॥ ॐ यतिष्टा २ ॥
य २ ॥ ॐ द्वावाय ॥ ॥ ॐ अ
ध्वानकायवक्राहरी २ ॥ ॐ
न ॥ ॐ अतर्कयुगुलीकार्क
लादगगनयुगुली ॥ विष्टावमय
तीकार्कमात्रुष्टययुजेय ॥ ॐ
गालियदा ॥ ॐ येनगाधियति
दवमनर्कनामविष्टनी ॥ याता
लवसतनित्यनीमहद्वकया
निर्तनी ॥ ॥ गान ॥ ॐ ग
यतय २ ॥ ॐ गाना ना ॥
ॐ सत्रसुते २ ॥ ॐ पावकान ॥
ॐ महालक्ष्मी २ ॥ ॐ गीधन ॥
ॐ अष्टवर्तनी ॥ ॐ अष्टव
मि ॥ ॐ यन्त्रवाय २ ॥ ॐ अष्ट
सूय ॥ ॐ कुगाय २ ॥ ॐ वृहस्पत
कुदि ॥ ॐ सप्तपाय २ ॥ ॐ मा
तृदाय ॥ ॐ गामयाय २ ॥ ॐ ग
न्धदावा ॥ ॐ दूष्टीय २ ॥ ॐ काष्ठा
का ॥ ॐ निवृज ॥ ॐ यवकषू ॥

यश्च सुगाय २॥ उं वक्राहली ॥
उं वक्राय २॥ उं वक्रविष्टदा ॥
यन्नादिवलिष्टनिष्ठा ॥ उं सुप्र
निष्ठाहव ॥ उं यत्तपक्ता ॥ धूय
दीपजायसा ॥ उं जूयंययक
तववक्रणीयं सर्वाविदुष्टावि
निपातिता ॥ दानादिदेहिता
बाधसिल्वं वक्राकून्सुखदिव्या
दीर्गा ॥ अमगन्धादि ॥ ॥
ॐ निगूरुवाद्यावाचनविधिः ॥

उद्धृष्टावाचनं ॥ न्यासादि ॥
उं उद्धृष्टावाय २॥ उं वटवक्र
य २॥ उं गत्वायामि ॥ अयूक
ली ॥ उं पृथिवी २॥ उं स्थानापृ
थिवि ॥ उं पृथिव्या २॥ उं यत्त
पक्ता ॥ उं हृदयतात्रयाय २॥
उं वत्तानिष्ट ॥ उं स्वर्नद्वारा
य २॥ उं द्वावाधवी ॥ ॥ उं उद्ध
यवक्राणकमपुलुरुक्ताय २॥
ध्यान ॥ उं पीनपीनं वक्राकू
वक्राणं वक्राननं ॥ हंगयानं
वक्रिवाणमकमालाकमपुल
॥ उं वक्रयकानं ॥ सागा ॥ उं य
द्वया निष्ठुगुमूर्तिमूर्द्धिका न
निवासिता ॥ सुष्टिककृत्तिका

निर्लित्तमेव न नमामुग ॥
॥ भाव ॥ उं गलेयतय २॥
उं गलानां ॥ उं समस्तस्य २॥
उं पावकानां ॥ उं मरुतल्लक्ष्मी २॥
उं श्रीयुग ॥ ॥ उं विष्ठाकृष्ण
जाय २॥ उं अस्माकमिन्द्र ॥ उं
यज्ञवाय २॥ उं अग्नेरु ॥ उं कृ
गाय २॥ उं वृक्षस्य २॥ उं मर्य
याय २॥ उं ॐ मानूदाय ॥ उं गा
मयाय २॥ उं गन्धदाना ॥ उं दू
र्वोय २॥ उं काण्डा ॥ उं निवृत्त
॥ उं यवक्रा ॥ उं यश्च सुगाय
२॥ उं वक्राहली ॥ उं वक्राय २
॥ उं वक्रविष्ट ॥ यन्नादिवलि
ष्टनिष्ठा ॥ उं सुप्रनिष्ठाहव ॥ उं
यत्तपक्ता ॥ धूयदीपजायसा
॥ उं जूयंययक तववक्रणी
यं सर्वाविदुष्टा विनिपातिता
॥ दानादिदेवहिता उद्धृष्टा
गवक्राकून्सुखदिव्या दी
र्गा ॥ अमगन्धादि ॥ ॥
ॐ सुद्धृष्टावाचनविधिः ॥ ॥

ततामपुयमव्युत्तिता उद्ध
वामुष्टा ॥ उं वात्ताधिपतय
वक्रा २॥ ध्यान ॥ उं वक्रमू
र्वं वक्राकून्सुखदिव्या दी

त्रयूजान्कलशत्रुमर्त्यं ॥ मूला
 वाधेनिककलशं धृत्वा जू
 गमनं जलधाराय ॥ यजमान
 नं नितिवकलशं धृत्वा यथा म
 मनं नितुमर्त्यं दक्षिणावर्त
 न ॥ ॐ हारा लोका लोका ॥ स्वाय
 धा ॥ सन्नद्धा सवता त्रिकार्थं त्रु
 मगं कर्म धारया त्रुमगं ध्वनी
 ॥ ज्ञावाया विचयथा रीसर्व
 विद्युनिवावर्णं ॥ नाथामहेश्व
 रीयूकं यं यं कर्मसमावर्तु ॥
 पासादः कियतवकायावका
 लं कृतं सति ॥ यजमानं कला
 र्थाय विद्यानां धर्मसनाय च ॥ यू
 र्यसमारुवाभुनसंनद्धं त्रुय
 ताकृया ॥ मूलमर्त्यं धृत्वा ॥ ॐ न
 कादृर्णं ॥ त्रुमर्त्यं धृत्वा स्वस्व
 स्तानं नितिवदक्षिणावर्तु ॥
 ययूनर्वा विलायूवथ ॥ ॥
 ॐ नितिवगं किकलशत्रुमर्त्यं

पूनः नितिवगं किकलशं धृत्वा
 सनं नयूजनं ॥ न्यासाद्येयान
 पूजा ॥ ॐ ज्ञाधारादि ॥ ॐ ग
 वृजासनाय ॥ ध्यानं ॥ ॐ शु
 द्धश्रुतिकर्त्तृकां गवृजासन
 संक्षिप्तं ॥ त्रुयूजं धृत्वा नैव

विश्वयापिनमीश्वरं ॥ गदाय
 कादृहस्तायां वाधुजन्मवकी
 मूर्त्ति ॥ अर्धः कनाया विधुर्गं स
 वीयदुवनागर्णं ॥ ॥ ॐ यथा
 सनायै ॥ ॐ कूर्मासनायै ॥
 ध्यानं ॥ ॐ वामिधया लया द
 वीयगुहस्तासूचीवनी ॥ सर्वोर्ल
 कां सयूकायै कवका मूलाहना
 अर्धोदय्यलकुरु प्रदुर्ध्वयूक्त
 कादृर्कं ॥ एतानि धाविना ध्याय
 मूर्त्तिना धरुविधिया ॥ यजमान
 ॥ ॐ कां कां लक्ष्मीवासुधवाय ॥
 ॥ ॐ यूनवा रुमाय लक्ष्मीसहि
 ताय ॥ वद ॥ ॐ सरुमुणीया ॥
 ॐ श्रीश्रुतं ॥ ॥ ॐ जूहमासा ॥
 ॐ जूहमासा ॥ ॐ ॐ न्द्रा ॥ ॐ
 ॐ यकति ॥ ॐ नकृत्तु ॥ ॐ हारा ॥
 ॐ यागयाग ॥ ॐ कोणासि ॥ ॐ
 सूयर्तुया ॥ ॐ ज्ञावाय ॥
 ॐ जूहमासा ॥ ॐ सर्ववृत्तासि ॥ ॐ
 जूहमासा ॥ ॐ समिन्त ॥ ॐ श्री
 श्रुतं ॥ ॐ या ॥ ॐ रुलिनी ॥ ॐ जूह
 यतं ॥ ॐ धूवसि ॥ ॐ नजासि ॥ य
 न्यनादिव लिपुतिष्ठ ॥ जायसा
 ग ॥ ॐ वहीषधी ॥ जूहमासादि
 ॥ ॐ नितिवगं किकलशत्रुमर्त्यं ॥

॥ ॥ तमाद्ययागृहीताय
वृद्धावंगक ७ मखयपूजन ॥

ॐ जयाय २ ॥ दक्षिणे ॥ ॐ वि
जयाय २ ॥ वामे ॥ ॐ ॐ न्याय
वक्ररुक्ताय सुनाधियमय २ ॥
ॐ गानावमिन्दु ॥ जगन्महादि

तमाश्मि ॥ ॐ जगन्मथगकिरु
क्ताय सुनामनाय २ ॥ ॐ ज
निर्मूर्च्छा ॥ जगन्महादि ॥ ॥

तमादक्षिणे ॥ ॐ वल्लभाय २ ॥ द
क्ष ॥ ॐ वल्लभाय २ ॥ वामे ॥ ॐ
यमाय दल्लुक्ताय मरुषास
नाय २ ॥ ॐ यमनदत्त ॥ जगन्म

नेमृष्या ॥ ॐ नेमृगयखरुक्ता
यनववाहनाय २ ॥ ॐ यनद
वा ॥ जगन्महादि ॥ ॐ निनेमृष्या

यश्चिमे ॥ ॐ धागु २ ॥ दक्ष ॥ ॐ वि
धागु २ ॥ वामे ॥ ॐ वनूलाय याग
रुक्ताय मकवासनाय २ ॥ ॐ ॐ
मभवन् ॥ जगन्महादि ॥ ॐ निधयश्चिमे

वायवा ॥ ॐ वायवधुजुक्ताय
मृगवाहनाय २ ॥ ॐ गववायू ॥
जगन्महादि ॥ ॐ निवायवा ॥ ॥

तमाक्षत्र ॥ ॐ विष्णुनाय २ ॥

दक्ष ॥ ॐ कुरुपालाय २ ॥ वामे
॥ ॐ कुरुवाय गदाहस्ताय ॥
वारुनाय २ ॥ ॐ कुरुविद्यंगज ॥
जगन्महादि ॥ ॐ कुरु २ ॥ ॥

ॐ गान ॥ ॐ ॐ गानाय विष्णु
नरुक्ताय वृषरासनाय २ ॥
ॐ गानान ॥ जगन्महादि ॥ ॐ गानान

तमाश्मि ॥ ॐ जगन्मथनाय
वक्ररुक्ताय सुनामनाय २ ॥
ॐ गानाय ॥ जगन्महादि ॥ ॐ गान

उद्ध ॥ ॐ उद्धाय कमलुलरुक्ता
यहसवाहनाय २ ॥ ॐ उद्धय
न ॥ जगन्महादि ॥ ॐ उद्ध ॥ ॥

तमावायवाययूव उरुवस्य
यश्चिमे गलयतिकलगायुजा
॥ ॐ गलयतय २ ॥ ध्यान ॥ ॐ न
कवकामहाकायः स्वतव ॥ ॐ
महायुतिः गजवकामहावी
त्राध्यायेत विद्युदवता ॥ ॐ ग
लानां ॥ ॐ गजवका
महावायामूलमादकपालय
विद्युसर्वनिवाययगीगामृत
नमामुत ॥ ॐ गिलकलगायु

ॐ गानस्य यश्चिमे उरुवस्य
यूवगुनकलगायुजन ॥ ॐ गु

पत्र २॥ ध्यान ॥ ॐ ककुमा वृषासं
काशं मकुमालसूयस्तकां ॥ ॐ शा
नदिगिर्मस्तानं गुवृमूर्त्तिनमेस्तु
त ॥ ॐ वृहस्पतं गुति ॥ ॐ दवाना
श्रमूनीनां श्रमवृषामपियुजि
त ॥ ॐ वृमूर्त्तिनमेस्तु सर्वशाम्
विशानद ॥ ॐ गुगं धादि ॥ ॥

नेमृहस्य पूर्वदक्षिणस्य पश्चि
मथागिनी कलशयुजा ॥ ॐ थागि
नीथा २ ॥ ॐ एतव लुमिहाय वी
सर्वलक्षणसंयुता ॥ नेमृहस्य पूर्व
त ॥ ॐ निथागिनी ध्यायतमया ॥
ॐ वसुधैव कुटुम्बकमिति श्रमं कर्मवम
शक्तिश्रमार्थं श्रमं नमश्चमन्त्रया
वमगतिश्रमं यस्तु न कल्पनां ॥
सा ॥ ॐ एतला वृषा विषादविक
र्तिकाया लक्ष्मि विना ॥ विष्णुमर्दक
त्रोदवी थागिनी यनमास्तुत ॥ ॐ
गुगं धादि ॥ ॐ निथागिनी युजा ॥

वायव्यस्य दक्षिणस्य पश्चिमस्य रु
द्रकणया लक्षणयुजनी ॥ ॐ
कणया लाय २ ॥ ध्यान ॥ ॐ दध्ना
उमवृषदा ॥ ॐ निगुलं यकपालि
नी ॥ ववृषा चिगकणय चिगकथि
गलायनी ॥ ॐ ऊर्मस्थागा ॥ सा ॥
॥ ॐ नवासनसमास्तु यवायूद

द्विपसंस्तिर्ग ॥ ॐ लखदा ॥ ॐ विधु
तं नीमा रुद्रं यालकं ॥ ॐ गुग
धादि ॥ ॐ निगुलया लक्षण ॥
वा सुपुत्रायेन ॥

पश्चिमस्य दक्षिणस्य पूर्वस्य रु
द्रसमस्तकलशयुजा ॥ ॐ ऊर्म
मूर्त्तिथ २ ॥ ध्यान ॥ ॐ वृकुलास्था
विशालाकी भुक्ता मायासुथो व
ना ॥ रुमव लुकुसंस्तु वपीनाम्
नयथाधवा ॥ वावृसर्वमर्दसंयुक्त
दिवा रुनं वरुषिगा ॥ सदा वाम
कवा ॥ ॐ जादकणायी रुलानि
गा ॥ ॐ नमस्तु वृद्ध ॥ सा ॥ ॐ ऊर्म
॥ ॐ दवा वृष्टिगाय रुमव लुसुथो
वना ॥ विष्णुगानिक वीदवी ऊर्म
मूर्त्तिनमास्तुत ॥ ॐ गुगं धादि ॥

ॐ शा नस्य पश्चिमं गुवृया पूर्व
संस्तानिकं पृष्टिकयुजा ॥ ॐ शा
निकाय २ ॥ ध्यान ॥ ॐ वाजात्य
लघुतिमूर्त्ति गदा वृषा द्यार्तक
री ॥ संयुतं वसुमूर्त्ति लं सुव
र्णमर्दगोयरी ॥ यूकमा रुवपी
श्रमं पुथानमल विवर्मी ॥ ॐ ऊर्म
मर्त्तं विवाध्याथ संमूर्त्ति ॥ मि
नं सदा ॥ ॐ श्री ॥ शा निका ॥ सा ॥
॥ ॐ शा निका यनमस्तु र्त्ति सर्व
विष्णु रुनायव ॥ सदा ममाध

वन्दनममपूजां गृहाणाम् ॥
मृगगन्धादि ॥ ॐ यष्टिका
य २ ॥ ध्यान ॥ ॐ निमग्नं शङ्करं
नं जटाखण्डं मन्दिरं । कथा
लमालिनीं तं यागमनकज
स्तिर्तं । आद्यवर्माभ्रधर्वनाग
नृगणरुचिर्तं । विगुलं वाकमा
लं च विजालं द्दि लोकवत्क
या लं कुलिकासु यागमूढं
कवद्वयं । ध्यायेत्तु यथायथं
मृगवागविनाशनं ॥ ॐ शुभ्रक
यजा ॥ स्तोत्र ॥ ॐ सर्वयष्टियदा
नं सर्वमङ्गलकारणं । सर्वयज्ञ
मृगयत्नं नो मरुत्तं सिद्धिदं
॥ मृगगन्धादि ॥ ॐ निमग्नं निमग्नं
द्विककलणयुजं न विधिः ॥ ॥

तथा मृगयत्नं यकलणं च ॥
ॐ मृगयत्नं याय २ ॥ ध्यान ॥ ॐ
वृषसिंहं किमं दर्वहिमकुन्
नृसन्निहं । एकवर्कं निमग्नं
वृषादं मरुत्तं । विगुलाक
धर्वदर्ववराकलणध्याविर्तं ।
वामावृत्तगताय वा द्विजुजाक
लणावरा ॥ रुमावृत्तगता
शिवताम्रविरुचिर्तं ।
वामृतीश्वरं ध्यायेत्सर्वपाप

प्रतापनं ॥ ॐ शुभ्रकयजा ॥
स्तोत्र ॥ ॐ मृगमृतीशमरुत्तं या
विष्ठाकिर्धसनायव । यनाय
वस्तुयथायनमभक्तिविलास
न ॥ ॐ निमग्नं यकलणं च ॥

जादियकलणं च ॥ ॐ जादि
ह्याय २ ॥ ध्यान ॥ ॐ वक्रयका
सनासीनं सकाशं वथवारुनं
। वक्रवर्तुमृगजादं जादिमी
कसुमपरं ॥ एकासं सुमूर्ध
धर्वसनालाककवद्वयं । एवं
विचिन्तयन्तं सर्वपापघुना
शनं ॥ ॐ शुभ्रकय ॥ स्तोत्र ॥ ॐ स
रुमावृत्तगताय वामावृत्तगता
मृगिर्तं । रुमावृत्तगताय वामावृत्तगता
नमामिति मिथं ॥ मृगगन्धा

नागकलणं च पूजा ॥ ॐ वक्र
गाय २ ॥ ध्यान ॥ ॐ नागवाग
धर्वदर्ववलीयद्युतिविग्रहं
। नागकधर्वलं ध्यायेत्तु वक्र
मकवासनं ॥ ॐ मृगनकाय
कलनागवाजं स्तोत्र २ ॥ ॐ मृग
नावागुकिर्धेवटककको
टकस्तथा । यदावृत्तमहायम
४ शंखपालकलिकस्तथा ॥ ॐ व
वृषावृत्तं ॥ स्तोत्र ॥ ॐ वृषावृत्तं

ॐ ह्रीं सहा नागामक नक्षत्रा महा
बलः। पाशरुक्ता जलनाय
नागवाजनभा मुक्तः॥ अंगुली
धादि॥ ॐ तिनागार्ध पूजा ॥

अक्षय कली पूजनं॥ ॐ यक्षा
य २॥ ध्यानं॥ ॐ यीगवर्त्म महाक
यं वीर्ययुक्त धात्रिणं रुमालं
कावला साधु धनधान्य पुदं
व॥ ॐ अंगुली वद रुनः प
तिनः समनारुव। पुनायक स
हस्रजित्त्व स हि धनदा अस्मिन्
हा॥ ॐ यक्षि २॥ ध्यानं॥ ॐ
स्याम वर्त्म महातजा सर्वलं का
वला हिता। सवत् पूरुं कलं
यक्षिणं विनयमदा॥ ॐ य
नायक त्वया मापयूषा प्रवृ
त्त्यतिः। पुवा देवी ददा रुनः॥
कोप॥ ॐ यक्ष व प्रसन्नात्मा
यक्षणी गुक्ति संयुतः। सर्व वि
रुवरुक्ता वनभावाय कथं क
ली॥ ॐ निय कथं कली पूजा॥

शील क्ली पूजनं॥ ॐ त्रिथ २॥
ध्यानं॥ ॐ यक्षा य विस्मिता द
वी नीलात्यदल युरा। सिन्दू
नय द्म रुक्ताय का नि यो वन

कीर्तिता॥ ॐ श्री गुरु ॥ ॐ
लक्ष्मी २॥ ध्यानं॥ ॐ यक्षा सन
हिता दवी गुह्य मुटिक सीति
हा। अक्षय वर्त्म रुक्ताय धनधा
न्य वनयदा॥ ॐ पावकान॥ ॐ श्री
लक्ष्मी द व दया व सर्व सीय हिदा
यिनी। सर्व काम पुदा दवी नम
स्का र्थान मानमः॥ अंगुली धादि

उपादिक लक्ष्मी पूजनं॥ ॐ सर्व
लक्ष्मी कल २॥ ॐ अक्षि
कली॥ ॐ ति उपादिक लक्ष्मी॥

ॐ यतिष्ठा कल गाय २॥ ॐ अय
मग्निः पूनी धात्रि यिमान यष्टि
वर्द्धनः। अंगुली पूनी धात्रि यि म
महि सरु अय कृत्वा॥ अंगुली
दि॥ ॐ ति यतिष्ठा कल गाय २॥

तता गाम यतिष्ठा पूजा॥ ॐ लि
वाय २॥ ध्यानं॥ ॐ सावय गाम
यं लिं गं निर्वं सर्व रुद्र यिणी। व
क्ता गुया पिती द व मा एन य रु
व एन वं॥ ॐ सदा जाता॥ सा
ग॥ ॐ हि म रुद्र निरुद व ग रु
द्रा रुद्र धात्रिणी। सर्व याच रुनं
देव व न्द रुं य न मं निर्वं॥ अंगु

गङ्गादि॥ ॥ उद्धकलगाया
खवस॥ उज्जमननम॥ उगा
जुम॥ जगगंधादि॥ ॥

॥ ॥ मूर्धनागपूजन॥ उंस
वृक्षानागवाज्या२॥ उंसभा
मुसर्था॥ ॥ जूलिनि॥
उं निवमूर्ध्नि२॥ उंसम॥ गम
वायव॥ ॥ जगगंधादि॥

ततः कृत्वा पुनः ॥ आसादि
॥ उं जगधवादि॥ उंस नृगास
नाय२॥ जगधर्त॥ उंस नृदि
रुगवन्विष्णुलोकानृगुरुका
नक॥ यरुगार्गगृहाल्लेखा
सूयवनमामुग॥ ॥ धानि॥
उंस रवकुन्दन्संकाशिवर्षा
रुसूलाहर्त॥ रववृक्षगदाय
धवनमाविहृषित॥ गार्कासन
हृगं निर्यलम्पानार्थजगत्स
रु॥ धाथयवर्जिलाकर्गसर्व
कामरुलपद॥ ॥ मनु॥ उंस
कोम॥ तमानावायलायविष्वा
त्मनकीलाहा॥ उंस वागाध
नीलाहा॥ उंस लम्पिवा
सूयवायकोलाहा॥ उंस विष्णु
यायविष्णुवादिगुहायधी

महि॥ तन्नाविष्णुपदाय॥ ॥
उंस विष्णु२॥ उंस गुरुनृवसि
॥ उंस लम्पि२॥ उंस शीघ्र॥ उंस ग
नृगाय२॥ उंस सूयलुसिग॥ ॥
हृत्पुलिहावकलपयूजन॥ पू
र्वनि॥ उंस कगवाय२॥ उंस यू
न॥ ॥ उंस नावायगाय२॥ उंस
दंविष्णु॥ २॥ उंस माधवाय२॥ उंस
नावती॥ ३॥ उंस मविन्दाय२॥
॥ उंस दवर्षी॥ ४॥ उंस विष्णु२
॥ उंस विष्णुलुके॥ ५॥ उंस मधुसूद
नाय२॥ उंस दिवावावि॥ ६॥ उंस
विष्णुमाय२॥ उंस यतद्विष्णु॥ ७॥
उंस वामनाय२॥ उंस विष्णुवना॥ ८॥
॥ उंस शीघ्रवाय२॥ उंस तीलियदा॥
९॥ उंस हृषीकणाय२॥ उंस विष्णु१४
कर्माणि यथातथायतानिय
यसं नृस्ययुद्ध४सखा॥ १०॥
उंस यदनाहाय२॥ उंस तद्विष्णु३
यनर्मयदसदाययनिसूत्र
य॥ दिवावयवृगागर्ग॥ ११॥ उंस
दाभादनाय२॥ उंस तद्विष्णुसावि
यन्नवाजागृवा४समिधम॥ वि
ष्णुर्वात्यनर्मयद॥ १२॥ धनंदा
वकलपदायगपूजा॥ ॥ धूय
दीयजायसाय॥ उंस विष्णुधुनि

हं वयं कमलां वैकुण्ठं जात्र कदा
 यार्थं सैरुवसं नवल विलसद्
 यावना लंकता विद्याय कुरु
 दध्यर्णमलिमयं कुरु सत्राजं ग
 दां रंयक बसुनि विवृतमिदं
 विष्णु सदा न कुरु ॥ अंग गभा
 दि ॥ ॐ नित्यं पुनः पूजा ॥ ॥

पूजः ४ यं किं कामं पणिवग किं क
 लंगा वृत्तं ॥ ॐ पुनः पूजा कमाय २
 ॥ ॐ सहस्रं गीर्वा ॥ ॐ लंका २ ॥ ॐ
 गीर्वा ॥ ॥ ॐ वाक्कास ॥ सगु
 ल ॥ ॥ ॐ गलानां लंका ॥ गुरु ॥
 ॥ ॐ अर्म र्यागा ॥ वलि ॥ ॥ ॐ अ
 र्य ॥ गो ॥ गाय ॥ ॥ ॐ जातव
 दस ॥ कोमावीया ॥ ॥ ॐ र्यापि
 खा ॥ ॐ वरिदावा मादिस्य ॥ ॐ
 नयवकुलदेवता ॥ ॥ ॐ वि
 श्वमश्रु ॥ ॥ ॐ लंका ॥ ॐ लंका
 ॥ ॐ धूनेहि ॥ धूय ॥ ॐ भजासि
 ॥ दाया ॥ ॐ या ॥ ॐ लिनी ॥ ॐ
 ॐ अन्नपत्र ॥ नेव ॥ ॐ मना
 दूति ॥ लाजा मुखिपति ॥ जा
 यसा ॥ ॐ विश्वस्य मातापित
 री सदा वी नाना य ॥ ॐ मायनि
 मूर्तिवर्मा ॥ पुनः वदामीति व
 गकिं नृपो वन्दे सदा मङ्गलका

निलोतो ॥ ॐ वद वनमङ्गल ॥
 अंग गभादि ॥ ॥ ॐ नित्यं
 वग किं कलंग पूजा विधि ॥ ॥

धन अङ्गा र्का न ॥ ॐ य ॥ ॐ दं क
 तय लेन अङ्गा पुदीयार्णयला
 ॥ कमाय ॥ ॥ ॐ ॐ लंका ॥
 कपालाग्रह गल रयुगा दानव
 दास मस्त ॥ अस्म अङ्ग पुनर्दं ल
 हिमतरुल दा द वद वी पुसना
 ॥ नाना विष्णु पणा ॥ ॐ मर्म मद्रुनि
 तरुना मनु मद्रु विला पात्रु ग
 ल र्व कमा र्ध गुन गल रव ती
 यरु सपुर्ण मद्रु ॥ ॥ ॐ वृद्धि
 कृष्ण यक्ष ॥ ॐ लंका ॥
 नित्यं नित्यं वना विवना लि
 व ॥ वद विष्णु निव ॥ सा ॥ ॐ नका
 कुरु नुम सदा ॥ अंग गभादि ॥
 ॥ ॥ गता वाय अ स गल पति
 पूजा ॥ ॐ गलानां लंका ॥ पुनः कं
 यन ॥ ॥ अवा र्क पुनः समी
 र्ण गला ॥ सर्व वाक्का नहि वा
 दय ॥ ॥ वद अलिना ॥ ॐ म
 ॐ दाथय कुरु द ॥ साम वद
 लथ र्व ल ॥ गु नृसा धक ज ॥
 नक म्यार्ण गु नृस ऊना ॥ ॐ
 हासन समावा र्क कमा मिगु

नृजयक॥ जूषा॥ नृननमस्या
मिस्त्रा नृदिविस्तव वं॥ ॥
सर्वेषां नृनयति वयनी॥ ॥
नृवाय॥ नृनमस्कार्य॥

गगनसिंहासनस्थित्वा ॥ आस
 मूर्धन्यायुज ॥ आचक्ष्व
 कृष्णमालिदधिसर्पिसततु
 लं ॥ तिलसिद्धार्थकंदूर्वाजूर्ध
 वापुपदायय ॥ रुतपुष्टि
 ॥ वातायाम ॥ ॥ कृष्णाय
 नं ॥ ॐ अग्निमग्निहवामहिमदा
 रुवतुविष्मति ॥ रुवावरुनयू
 नृषि ॥ ॥ मिथुनायाम
 ॥ ॐ नमोभूयवापनसूयनयू
 नवायग ॥ अस्याययुनकाय
 गर्हमादहिनः पूमान् ॥ ॥ कृ
 ष्णालीरुनं ॥ ॐ अग्निपूषाहिनि
 त्रिहित्रिद्यौनुगननूगंसदेवां
 अहिविष्मति ॥ ॥ कृष्णाय
 वृणानका ॥ असकसायानयुज
 ॥ ॐ रुद्राकाय ॥ गतमसृषय
 निदेवतायगायत्री कृन्धस २
 ॥ १ ॥ ॐ रुद्राका ॥ रुद्राजर्ष
 यवायूदेवतायउषिककृन्ध
 स २ ॥ २ ॥ ॐ रुद्राकायविष्म

[illegible]

अथ कृष्णार्क मंत्राः ॥ य
 म कृष्णमादाय ॥ ॐ म ह्रीं ऐं
 न्यं ॥ ॥ क्लान्तवर्णं गृहीत्वा वाम
 रुक्तं निधाय ॥ ॥ तन्नास्तु गव
 त्ति ॥ ॐ गणा नां ह्य ॥ गणयति
 वति ॥ ॐ नमाव नृणां य ॥ ॥

ॐ जातवदम ॥ इन्द्राविलि
॥ धूमदीपजायमाने ॥ ॐ निष्वा
लीनिर्विकल्पं ॥ विमर्शनीकान
क्रिय ॥ ॥ तमा इन्द्राविलि
ष्टादशमस्तु ॥ इन्द्राविलि
कल्पं ॥ ॐ पृष्ठाविलि
वसवितथदित्वासत्रममाजा
यका ॥ यथाविष्णुविष्णुयथा
युक्तविष्णुविष्णुयथा
॥ १ ॥ जूष्णसिंघनी ॥ ॐ जूष्णा
हिष्ठा ॥ २ ॥ जूष्णनगान् ॥ ३ ॥
कवयनासूक्तं ॥ ४ ॥ खनन
॥ ॐ यद्वादेव ॥ ५ ॥ निखाम
ननमृत्तिकाद्या ॥ ६ ॥ इन्द्राव
नपूवर्णं ॥ ७ ॥ निवमननसमी
कवर्णं ॥ ८ ॥ कवयनासूक्तं ॥ ९
॥ जूष्णनकूटनं ॥ १० ॥ ॐ मानस
कति उचलघनं ॥ ११ ॥ ॐ त्वीमृ
कति सीमाजनं ॥ १२ ॥ ॐ तत्वा
यामि जूष्णं जूष्णयागादक
न ॥ १३ ॥ कृष्णयूर्गनिधाययू
र्वदक्षिणयष्टिभास्वरं ॥ ॐ दव
स्यत्वा ॥ निमृशन्तः कः पुवष्टनं ॥
नकवमृत्तिका ॥ ॐ नकाहर्णं ॥ १४
॥ यामि जूष्णं नयर्दलिश्व ॥ ॐ
हिमवन्नेर्द ॥ १५ ॥ ॐ जूष्णं
यसमी ॥ वनकननं ॥ यथावत्

[illegible]

जमानेन गामयात्र निधाय
आदुर्गक गक ७१ शस आदु
कापदसगस्यैयवतल्लं राहा
यलदं धंरु, सिमतकृदिरावक
यातयंदावतं ॥ अग्निप्रकालनं
॥ सूर्यकाको धवाकाष्टवाप्त
सगृह्यविवा ॥ अग्निप्रकालनं
दाधनगामयात्रं स्तिर्गं नय ॥ य
दावा विगृहाका वंदकृदालास
मादुर्ग ॥ ॐ अग्निर्मुद्रा ॥ ॥
मगदं गाउवा सगुलेन द्वाय
मकृता धर्मा लंसायाव यजमा
नीनलीखधनेथयकं यकूमगु
यकायकाव दं गयं न वास्त
लव द्वाय ॥ ॥ अन्वकवा
दानिर्कृत्वा ॥ ग्रासनादकि
स्वाय ॥ ॐ वक्राहर्ल ॥ निर्मकृत्
॥ ॐ अन्ववायद ॥ बलि ॥ यवा
कृततिलनकवादाइतिगयं ॥
ॐ कवादानय स्वाहा ॥ ॥ दृत्तं
व ॥ ॐ कवादमग्निं ॥ कवादा
निपवित्र्य अवाहिः किथ ॥
उपसगनि ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ वा
यमिग ॥ अन्वकणी ॥ ॐ वाँदद
यादिषउरुनयूजनी ॥ ॐ वः
अन्वाय रुह ॥ सैवक ॥ ॐ वं क
ववायदं ॥ अन्वगुणनी ॥ ॐ

वैश्वानवायविद्वद्रुजूनकात्रि
तायधामहि। तन्नावद्रिः पथा
दया ॥ ॥ अन्वगामयग्रा निधा
जय ॥ ॥ गारुगयशुटिका धमू
डा ॥ ॥ रुतज ० नवेन्दवश्चातिन
कीकृत्वा इनलनयं स्वात्मानं वि
श्वमूर्तिध्यात्वा यान्ताकृतीका
धुलक्षी विविनय ॥ ॥ वाजं व
द्रिपकल्यथ ॥ ॥ ततः सुवलास

अग्निगृहीत्वा ॥ ॐ अन्वअग्नि
नूयसा ॥ अग्निर्कृत्वा निपदकि
लीकृत्वा ॥ यजमानस्य ग्रीमकु
ग्री अन्मूकमूर्तिविष्णुपतिश्चाद
गसहस्रादु नित्यं नित्यमर्थ
अग्निस्त्रायनसूमुद्रुर्मिसु ॥
ॐ मेयिगृह्णाम्य ॥ स्वाहा नहाम
॥ ॐ स्वस्तिवाचनीय ॥ ॥ ॐ
निस्त्रायनं ॥ ॥ वालाग्निले
कलार्थमिध्ननद्यथ नय कृद
य ॥ ॥ ॐ मर्मालिप्त ॥ ॥ ॐ
छादिवि ॥ अग्निपूजनं ॥ ॥
तताः कवागनी ॥ पूर्वदिक् ॥
ॐ सुवदाय ॐ दमासनी ॥ ॐ
यशुर्वदाय ॥ ॐ सामवेदाय ॥
ॐ अथर्ववेदाय ॐ दमासनी ॥
॥ ॥ ॐ अग्निमी ॥ ॥ पूर्वम्

कवातनी। समिधद्वयसयवि
संपूज्ययथैकनिधाय॥ॐ
यत्न॥ दक्षिणमूकवातनी॥
ॐ अन्नमया॥ पश्चिममू॥ ॐ
गन्तायवा॥ उत्तरानंदकला॥
ततः पूजनं॥ ॐ मृगदायमू
विष्णोपायसामदेवतायगाय
त्रीकुन्दमं॥ नवयज्ञः सामा
थवचयार्नवगुहिक॥ ॥

ततः कुरुदमादिक॥ ॐ ॐ ॐ
यवकुंदकायगजोसनायसू
नाधियमथनमः॥ ॐ ॐ ॐ
१०॥ ॐ स्वर्गाय॥ ॐ मर्त्याय
२॥ ॐ यागालाय॥ ॥ द्वय
समिधहाम॥ एकं उंकात्रं
एकं गुरुद्विद्वय॥ ॥ ॐ
नवाहदव॥ अग्निर्मूरीकन
ली॥ ॥ स्वा॥ दक्षिणउत्तर
यक्षपणीतासनी॥ ॐ वक्र॥ ॐ
दमासनी॥ ॐ यणीताय॥ ॐ द
मासनी॥ ॐ अत्मासनाय॥ २॥
॥ ॥ यूनः सिवासनी॥ ॐ हिन
अगर्क॥ कुरुदक्षिण॥ ॐ ॐ ॐ
विष्णु॥ कुरुअत्मासनीतासनी
॥ ॥ ततः पूजातयुतर्कली
॥ ॐ दवस्यत्वा॥ अस्तूकली॥

ॐ यत्नः सनक॥ यतर्कली॥
ॐ अन्नमिता॥ कुरुअन्नमिता
नी॥ ॐ अन्नादिष्टा॥ अन्नामवा
विष्णोपायणीतयुतर्कली॥ ॥ वक्र
पूजनं॥ यन्दनयक्षायवीतयुतर्क
॥ ॐ वक्र॥ २॥ ॐ यजायतय॥ २
॥ ॐ सर्वथादवस्था॥ २॥ ॐ वक्र
यक्षानी॥ ॥ यणीतयुजनं॥
यन्दनयक्षायवीतयुतर्कली
द्वयं॥ ॐ यणीताय॥ २॥ ॐ अन्ना
२॥ ॐ वक्र॥ २॥ ॐ अन्नाय
य॥ २॥ ॐ ॐ ॐ विष्णु॥ ॥ ॐ अ
न्ननवा॥ ॥ कोष्ठद्वयसहि
तयवक्र॥ अन्नमितादक्षिण॥ ॥
ॐ विष्णुववाटा॥ कुरुअन्नमिता
लीतकायनी॥ ॥ वक्रायणी
तयुतर्कलीयुजनं॥ ॥ ॐ नमा
कुनीलली॥ अग्निपूजनं॥
कुरुअन्नमिताविदिकुयविष्णुव
ॐ कयानप्रि॥ कुरुअन्नायुय

ततायथा॥ विधिमन्त्रकलश
कुण्डिलादिनिवशकुरुनीयुज
नी॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
आमृत्युः ३३ यादित्यकुण्डिल
यहनिनिवशकिंकल॥ ॥ ३३

सर्वस्य ४ सा ८ म ४ स प वि वा ३
स्य ४ द मा स न २ ॥ य ४ ॥ ॥
दा वा ३ न ॥ ॐ तत् स वा यो मि ॥ ॥
पूर्वदा ३ ॥ ॐ ज या य २ ॥ ॐ वि ज
या य २ ॥ ॐ मृ १ व दाय २ ॥ ॐ कृ त
यू गा य २ ॥ ॐ सा मा य २ ॥ ॐ जू
गा मा य २ ॥ ॐ जू १ व ल ३ म २ ॥ ॐ
व ल ३ २ ॥ ॐ ग म् ३ य ॥ ॐ य मू ना
य २ ॥ ॥ ॐ ३ ३ दाय सू वा धि य
त ३ २ ॥ ॐ या गा व मि ल ॥ ॥
ज ३ ॥ ॐ जू ३ य ३ न ३ धि य त
३ २ ॥ ॐ जू ३ नि म् ३ ३ ॥ ॥

दक्षिणदा ३ ॥ ॐ व ३ य २ ॥ ॐ व
व ३ य २ ॥ ॐ य ३ व ३ दाय २ ॥ ॐ
जू गा यू गा य २ ॥ ॐ दू ३ य २ ॥ ॐ
वृ ३ य २ ॥ ॐ दू ३ य २ ॥ ॐ
रु नू म ३ २ ॥ ॐ नि र्म दाय २ ॥ ॐ
ग ३ २ ॥ ॥ ॐ य मा य य गा
धि य त ३ २ ॥ ॐ य म न द र्म ॥ ॥
ने मृ ३ ॥ ॐ ने मृ ३ य वा क सा धि
य त ३ २ ॥ ॐ य न द वी ने ॥ ॥

य म् ३ ॥ ॐ ध ३ २ ॥ ॐ वि ध ३
२ ॥ ॐ सा म व दाय २ ॥ ॐ दाय व
यू गा य २ ॥ ॐ यु का य ॥ ॐ न ३ य
वा य २ ॥ ॐ वि री य पा य ॥ ॐ कृ

वा य २ ॥ ॐ ग लु ३ २ ॥ ॐ को लि
३ २ ॥ ॥ ॐ व ३ य ३ य ३ ला धि
य त ३ ॥ ॐ ३ ३ म ३ व ३ ॥ ॥
वा यो ॥ ॐ वा य व ३ व ना धि य
त ३ २ ॥ ॐ त व वा यू वृ ३ ॥ ॥

उ ल ३ ॥ ॐ वि ध ३ कृ ना २ ॥ ॐ कृ
गु या ला य २ ॥ ॐ मू ३ ध ३ व ३ दाय
॥ ॐ क लि यू गा य २ ॥ ॐ ना ह व
॥ ॐ क त व २ ॥ ॐ य व लु वा मा य
॥ ॐ मा कृ ३ य ३ य २ ॥ ॐ स व ल
३ २ ॥ ॐ व ल ३ रा गा य २ ॥ ॥
ॐ कृ ३ य ३ ध ना धि य त ३ २ ॥ ॐ
कृ वि द ग ३ ॥ ॥ ॐ ३ ३ ॥ ॐ
३ ३ ना य स वृ ३ ना धि य त ३
२ ॥ ॐ त मी ३ न ३ ग ३ ॥ ॥

ॐ मू ३ २ ॥ ॐ गी लि य द ॥ ॥
ॐ ३ ३ य २ ॥ ॐ व ३ य ३ ३ ॥
॥ म लु ३ ३ ॥ ॐ वा ३ धि य त ३
व ३ ३ ॥ ॐ हि व ३ य ३ न ३ य ३
न स ३ य ३ पि हि ३ मू ३ ॥ या सा वा
दि य ३ वृ ३ ३ सा सा व ३ ॥ ॥
वा य वृ ३ ॥ ॐ ग ३ य ३ ॥ ॐ ग
३ ३ ॥ ॥ ३ ३ न ३ य ३ ३
॥ ॐ ३ ३ २ ॥ ॐ वृ ३ य ३ ॥ ॥
ने मृ ३ य ३ ॥ ॐ या नि ३ ३ ॥ ॐ

[illegible]

सुकली ॥ उं कृष्णाय नमः ॥
 ॥ सर्वपापहारी ॥ उं नमो भगवते
 व ॥ अन्निकुल विषदक्षिणी
 कृत्य ॥ उं अदिष्टे शुद्धन ॥ उं
 हयतथं ०० ॥ उं कुर्वन्त्यन
 थं ०० ॥ उं हता नां यतथं ००
 ॥ लघादकं पुनीत निधाय
 सद्य विर्गस्तानखम्भश्च ॥ ॥
 पाकली दक्षिणात् आश्रमूक्त
 गङ्गाकर्णवाञ्छनेन्दनादि
 न ॥ मूलोद्भवार्क ॥ उं बुद्ध्या
 २ ॥ उं विष्णवे २ ॥ उं ब्रह्माय २ ॥
 ॥ आश्वलायी पूजनं ॥ उं बुद्ध्या
 २ ॥ उं विष्णवे २ ॥ उं लक्ष्मी २
 ॥ ॥ उं धूर्वसीति उच्यते म
 नकुलमादाय ॥ ॥ ततोऽन
 र्दशक्रियामालरु ॥ ॥

ॐ यानि कल्याणाय ०० ॥ ॐ क
 ग्लयानि ॥ ॐ गङ्गाधनाय ०
 ० ॥ ॐ गङ्गाधनाय ॥ ॐ पूरुष
 नाय ०० ॥ ॐ स्वस्ति यन्त्र ॥ ॐ
 सीमन्तानयनाय ०० ॥ ॐ माहि
 र्क ॥ ॐ कामकर्मण ०० ॥ ॐ का
 यस्त्राहाक ॥ ॐ सद्यसूक्तना
 यनाय ०० ॥ ॐ स्वर्गनयनि

वन्दनादि पूजनं ॥ उं नमो नमो
 निन्द ॥ ॥ ततः यथापत्तिदं
 वमानसं विंत्त ॥ यथापत्तिदं
 वदलाकेया लाञ्छनं ॥ यूनः हा
 भयपूजादिकलनयवाञ्छनं ॥
 कृष्णप्रणीतयुक्तुनमलुली
 कृष्णपञ्चयुष्वावकीर्तु न
 नालुलपूजनं ॥ उं प्रियञ्च
 यशः ॥ उं वरुञ्चयञ्चयशः ॥ उं द
 वागतयशः ॥ उं दिगशः ॥ उं वि
 दिगशः ॥ उं स्वर्गशः ॥ उं म
 र्गशः ॥ उं योनालायशः ॥ उं
 लोकोशः ॥ उं धर्मशः ॥ उं कन्द
 यशः ॥ उं सुशः ॥ उं यागशः
 यशः ॥ उं मरुतागोशः यशः ॥
 ॥ उं रुद्रशः ॥ उं दधशः ॥ उं
 जामुचिशः ॥ उं हामदेवता
 यशः ॥ ॥ यथापत्तिपूजाञ्जलि
 दद्यात् ॥ उं सर्वशोधवशः ॥
 ततः ॥ नमो नमो नमो ॥ सर्वो
 यपत्तिदसूयथादवस्यनाम
 कं ॥ अविदित्वा तु यागमुक्ता
 मथञ्च विवर्कलः ॥ न कर्तुं न च
 संस्कारं नैव कर्म कुरु ललरु ॥
 ॥ ॥ अनन्तवतश्चरसा ॥ उं
 अनन्तानयश्चरसा ॥ ॥ ॥

॥ उं निधानामासि ॥ ॥ भव
 तादवयतिष्ठाश्चरसा ॥ यथा
 नामानयश्चरसा ॥ ॥ कृष्ण
 कर्तुं न ॥ उं उरुवतमादव
 यः ॥ ॥ अयस्य न ॥ मादित
 कृष्णतिलजलन ॥ उं दक्षिण
 लब्धपिष्टसु ॥ सर्वनायस्य
 र्गनं ॥ ॥ उं वृत्तञ्चरसा
 यः ॥ ॥ अयस्य न ॥ उरुवतमादव
 ली ॥ वृत्तमिष्टायसाग ॥ ॥
 ततः ॥ अहमं ॥ उं अन्नय ००
 ॥ वृद्धमन्नय ॥ उं सामाय ००
 ॥ वृद्धसामाय ॥ उं अग्निधामा
 र्ग ०० ॥ वृद्धमग्निधामार्ग
 ॥ उं अग्निर्जिह्वासिम् ॥ ॥
 ततः ॥ जिह्वाहमं ॥ उं हिनय
 य ०० ॥ वृद्धहिनय ॥ उं क
 नकाय ०० ॥ वृद्ध ॥ उं वकाय
 ०० ॥ वृद्ध ॥ उं कृष्णाय ०० ॥
 वृद्ध ॥ उं सुप्रसाय ०० ॥ वृद्ध
 ॥ उं अतिवकाय ०० ॥ वृद्ध ॥
 उं मध्ववद्रूपाय ०० ॥ वृद्ध
 ॥ ॥ अठजिह्वाकंदनी ॥ उं स
 फतं अग्नेः ॥ एकजिह्वाह
 यनी ॥ विवाहयश्चिमाजिह्वा

तता वंदा रुमि ॥ ॐ सुखदाय
 ०० ॥ ॐ ॥ ॐ पृथिवी ०० ॥
 ॐ ॥ ॐ अन्नय ०० ॥ ॐ ॥ ॐ
 योगवर्धय ०० ॥ ॐ ॥ ॐ व
 क्षण ०० ॥ ॐ ॥ ॐ सामाय
 ०० ॥ ॐ यज्ञाय नमः ०० ॥ ॐ
 ॥ ॐ रुद्राय ०० ॥ ॐ ॥ ॐ वा
 नाय नमः ०० ॥ ॐ ॥ ॐ द
 ०० ॥ ॐ ॥ ॐ गङ्गाय ००
 ॥ ॐ ॥ ॐ भक्त्याय ०० ॥ ॐ ॥
 ॐ यज्ञाय ०० ॥ ॐ ॥ ॐ धान्या
 य ०० ॥ ॐ ॥ ॐ सदस्य नमः
 ०० ॥ ॐ ॥ ॐ अन्नमय ००
 ॥ ॐ ॥ १ ॥ ॐ यज्ञवर्धाय ०

[illegible][illegible]

ॐ ह्रीं वरुणाय नमः ॥ वरुणाय नमः ॥
 दशयशस्यं वा ॥ ॐ ह्रीं वरुणाय नमः ॥
 पुष्पांगवदलाकपाल ॥ पूर्वदि
 कलशां कृति ॥ ॐ पूर्वदिग्येतथ
 ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 मृगवन्तवायुकुर्वन्तवा
 नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 य ० ० ॥ विजय यशु यशु ध
 नविधन विधन नकपाल
 ॥ मृगवद यशुवद सामग्र्य
 र्व ॥ कृतयुग जगत् दायन क
 लि ॥ भाम जगत् वृध वृहस्प
 ति शुक्र जगत् वृध वृहस्प
 मृगवत्तामावलि वास रुद्रम
 विरुधन कय यशुवत्तामा
 र्व ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 या सत्रयुग लुकी कोलिकी
 सत्रयुगी चन्द्ररागा ॥ गलगु
 नूयामिनीकृत् जगत् जगत्
 पुष्टिक मृगवत्तामावलि वास
 नागवत्तामावलि वास नागव
 उपादिकलण प्रतिष्ठा ॥ गाम
 यलिंग जगत् जगत् जगत्
 लिल कंगव नागायल माधव
 ॥ गामिन्द्र विष्णु मधुसूदन वि

विक्रम वामन श्रीधर हर्षा
 कल यशुवत्तामावलि वास
 वरुणाय नमः ॥ वरुणाय नमः ॥
 ॥ गामिन्द्र विष्णु मधुसूदन वि
 कसकन सिधुमूढ वरुणाय नमः ॥
 क्तादि यिनायक ॥ ॐ नमः ॥
 ताकृतिदत्ता ॥ ॐ नमः ॥
 मधुय ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 लीत निधाय ॥ ॐ नमः ॥
 ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥

तत किला कृतिवत्तामावलि वास
 वरुणाय नमः ॥ वरुणाय नमः ॥
 ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 अनिहितामि ॥ कृतिवत्तामावलि वास
 न ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 लमिर्णयशुवत्तामावलि वास
 समिधशरु लपुष्प वरुणाय नमः ॥
 कृमालिका ॥ मालोपुष्प वरुणाय नमः ॥
 दि निधाय ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 पूजन ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 मासन रुद्राय चन्द्रन यशु
 यवातपुष्पदत्ता ॥ वरुणाय नमः ॥
 यशुलकावत्तामावलि वास
 वरुणाय नमः ॥ ॐ नमः ॥

लसंयूक्तं कक्षं मृदिकादिकं
। कृत्वा दिमूकं च तस्य सर्वं
गृहाण ॥ ॥ बाह्यागं धृ
त्वा य ॥ ॥ दगसहस्रां कृत्वा
रूकं नमः सर्वसाधने । तामया
गह्नितामिदं बाहिल्याय गृह्य
तां ॥ आयुः प्रियं शरकल्याणं य
यौ गंधनादिकं । रुक्मागुत्रा
यसादनसर्वकार्यं शसिद्धिदं
॥ उपशोकथ ॥ ॥ आवाय
नगृहीत्वा पूजनं ॥ ॐ ह्रीं
रुवि ॥ गायत्र्या जय ॥ ॥
तमः संकल्पं ॥ कृष्णकृतं नवा
कृष्णतिलजलं धृत्वा ॥ ॐ अथ
वाला रुक्मं ॥ अथादि ॥ यज
मानस्य यथागात्रा कुरु लया
कृतं नवगात्राय नमिष्य
र्थं ग्रामदनाग्रयं वैश्वानवा
यदगसहस्रमिति ला कृत्वा मरु
कविष्य ॥ ॥ गता श्रीका कृत्वा
मानसं ॥ ॐ ह्रीं रुक्मं वः स्वः वः
॥ ॥ ह्रीं रुक्मं वः स्वः वः
॥ ॥ दगय शरयं वा ॥
ॐ वक्रयज्ञानं ॥ मृगनयूक्तं ॥
एवं प्रणीतं वेदं लोकपाल ॥
पूर्वद्वारकलगा कृत्वा ॥ ॐ ह्रीं
वः स्वः ॥ ॐ आय ०० ॥ ३ ॥ ॐ ग

तात्र मित्र ॥ मृगनयूक्तं ॥ ॥
यवकुसावयं दुष्का लं कतनु
मरुत्तमः ॥ तिलमाधवः यय
एकय मिलितं कृतं ॥ ॥ स मिध
मूलपानकयुतं मृगनयूक्तं
यनरामय ॥ ॐ वः नवस्य ॥
०० ॥ ॐ अथ निमृद्धा ॥ ॐ वः न
स्य ॥ ॥ ॐ वः यमे वः वः वः
युक्तं वः वः वः वः वः वः
॥ ॐ अथाय ०० ॥ ३ ॥
मृगनय ॥ ॐ वः विजयः वः
यवः वः वः वः वः वः
नकृष्णपाल ॥ ॐ अथ ॥ ॐ
मृगनयूक्तं ॥ ॐ वः वः वः
गुद्धि कृत्वा वः वः वः
ॐ वः यशः वः सामः अथ
वः ॥ ॐ वः दासिथन ॥ ॐ वः
नसि २ गुलिथ वः वः वः
॥ ॥ कृत्वा मृगनयूक्तं
॥ ॐ अथ वाजाय ॥ ॐ वः
यदि न सयं वः वः ॥ ॥ सा
मः मृगनयूक्तं वः वः वः
कृत्वा मृगनयूक्तं वः वः
ॐ मन्दवा ॥ ॐ वः वः वः
मस्य वः ॥ ॐ अथ

मा. बलि. व्यास. रुनुमान. वि
 शीषण. कृष्ण. यत्र गुणाम् ॥ ॐ
 वाक्कलास ॥ जव खव ४ विदि
 गसया वरु ॥ ॥ गञ्जा. यम
 ना. नर्मदा. सत्रयू. गणुकी. की
 लिकी. सत्रसमी. यत्र रागा ॥ ॐ
 ॐ मम ग ॥ ॥ जव खव ४ य
 खस ॥ ॥ मणुधा ॥ वासु
 ॥ ॐ वक्रय कान ॥ ॥ वायव्य
 पूर्व. गण ॥ ॐ गानय विभ
 गुत्र ॥ ॥ नैमृय पूर्व. आनिनी
 ॥ वायव्य दक्षिण. कं ॥ ॥
 मूधदक गऊनी ॥ ॥ ॐ गान
 य विभ गुत्रा ४ पूर्व. गानिक यो
 धिक ॥ ॥ मृत्पू ३ य ॥ मृदि
 य ॥ नागय ॥ यक्रय कली ॥ ॐ
 लेनी ॥ मृलिनि ॥ सूर्यनाग ॥
 यमिष्टा ॥ कृष्णिल ॥ कृष्णिलि
 काव ॥ यूलक ॥ यिनाय कंद
 ॥ निवणकि ॥ गवउजा. वलि. ग
 यास. सगुण. कीमात्री ॥ उया
 दि ॥ वरुिदावा ३ दि ॥ ॥ गामय
 लि ॥ ॐ मम ॥ ॥ सर्वर्षी नि
 ला रुति रुद्रया ७ ॥ तिला रुति
 पू ३ ॥ ॐ पू ३ दधि ॥ ॐ ति ति
 ला रुति पू ३ कृत्वा ॥ ॥

ततायथाकर्मकात्रय ॥ य
 कूमणुधा लव वा ॐ गाने वा
 सानमणुयं मणुधा लकाल वि
 गाने वामल कृष्ण जायव्य
 मालादि ॥ गानि गि कृत्वा ॥ गण
 पूर्व. गान लिक कृष्ण नाव
 तीर्य. गदय निरुद्धया ॥ ॐ दव
 यतिमां निधाय ॥ दवस्या ॥
 यवकीयायाव ॥ कसकनस
 रिगाग मृता गुण ॥ ॥ यदायक
 मृदुदि कृष्णानकल गाना नी
 यधि मृत्तिका दिन कमन वाय

सलधि ॥ वी हि ॥	कादूरु णा ३ ॥ मृत्तिका	सलधिस कषाय
ययूरुणा ३ ॥ ययूरु मृत्त	कायला ॥ कसकन	हादूरुणा ३ ॥ यनव ॥
सत्रधि ॥ ययूरुणा	गायूरु ३ कस ॥	सलधि ॥ यदाय ॥

तगमणुध पूर्व. हि मूर्य कृत्वा
 कायन यतिमां वा वज्रताम
 गिलादा नृमृकामय वायुहि
 वाहान ॥ वाक्कला ॥ ॐ मृदु
 दि ॥ सूर्योर्धवा साधय गयूरु
 न ॥ ॥ वलियदान ॥ ॐ गल
 ना ॥ ॐ नमो वरुणाय ॥

ॐ ह्रीं कृत्तया ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥
ॐ आना नि यू हि ॥ धूय दीय
जायता ॥ ॐ गणेशाय नमः ॥
वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ गायत्री ॥ गणेशाय नमः ॥
हे नवाय कनागाय य ह रुग
गणेशाय नमः ॥ गणेशाय नमः ॥
भक्तमनोसि न विनायक ॥ ह
वन्तु विष्णुसंघातान् पुण्यकृत
मभक्तिमान् ॥ जगन्मयादि ॥
वलि विसर्जने ॥ स्नानमण्डप
यर्क स्नानसवाय कथाय ॥ ॥

गतः पूजनं ॥ पूर्व ॥ ॐ कान्त
मूढाय ॥ ॐ समूढाय ॥ मिमं
मो ॐ उदावदया ॥ ॐ नाममृग
त्वमान ॥ ॐ गणेशाय नमः ॥
दक्षिणिकाय नानाममृगस्य ना
हि ॥ ॥ मृत्तिका ॥ ॐ मृत्तिका
नैत्रयकार्क विष्णुकार्क वसुध
व ॥ उद्गता सिववाहनकृष्ण
गतवाहना मृत्तिका रुद्रभया
पीयनमादृष्टकर्णकर्ण ॥ त्रया
रुगनयाधनसर्वपायी ॥ यम
यत ॥ १ ॥ ॐ श्री ॥ ॐ कान्त
मूढाय ॥ ॐ यय ॥ ॐ धिया ॥
॥ कथाय ॥ ॐ यय ॥ ॐ गणेश ॥
॥ २ ॥ दक्षिण ॥ ॐ दधिस

मूढाय ॥ ॐ समूढाय ॥ त्रया
ताय स्वाहा सवित्राय स्वाहा
य स्वाहा अनूनाधुष्याय स्वाहा
ताय स्वाहा पुतिधुष्याय स्वाहा
वाताय स्वाहा अवधुष्याय स्वाहा
त्वावाताय स्वाहा मिमिदाय
त्वावाताय स्वाहा ॥ यय ॥ ॐ
विष्णुवनाट ॥ ३ ॥ ॐ मृत्तिका ॥ ॐ
हृत्तमूढाय ॥ ॐ उदवन्तः स
र्विनासुति ॥ यय स्वाहा तावत् ॥
॥ ४ ॥ ॐ मृत्तिका ॥ ॐ मृत्तिका
दय ॥ ॐ यय ॥ ॐ ॥ ५ ॥ यय
म ॥ ॐ मृत्तिका ॥ ॐ मृत्तिका
मूढाय ॥ ॐ मृत्तिका ॥ ॐ मृत्तिका
नानायय न विष्णुना ॥ ॐ मृत्तिका
वकी वृषाललाटस्त्राया द
वा विहमावदनु ॥ वास ॥ ॐ म
म ॥ ॐ मृत्तिका ॥ ॐ मृत्तिका
॥ ॐ मृत्तिका ॥ ॐ मृत्तिका
दवस्त्र ॥ ॐ मृत्तिका ॥ ॐ मृत्तिका
य ॥ ॐ मृत्तिका ॥ ॐ मृत्तिका
नजासि ॥ ॐ मृत्तिका ॥ ॐ मृत्तिका
गी ॥ ६ ॥ उद्गता ॥ ॐ मृत्तिका
मूढाय ॥ ॐ समूढाय ॥ नमना
मृत्तिका ॥ ॐ मृत्तिका ॥ ॐ मृत्तिका
न उद्गता ॥ ॐ मृत्तिका ॥ ॐ मृत्तिका

तस्मिन् वा ४ समया मूयस्तु मदि
 बाभ्रवद्वन् ॥ यश्चामृता ॥ ॐ
 यय ४ पृथिव्या ॥ ॐ दधिकाप्रा
 ॥ ॐ नञासि ॥ ॐ निवानामासि
 ॥ १ ॥ ॐ गान ॥ ॐ सिन्धुस
 मूदाय २ ॥ ॐ समुद्रं गच्छ स्वा
 हा न विद्वं गच्छ स्वाहा यव ४
 सविता वं गच्छ स्वाहा मिता वनू
 णी गच्छ स्वाहा वायुं गच्छ स्वाहा
 रुद्रा ४ सिंग गच्छ स्वाहा वायु
 धिवी ४ गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वा
 हा सामं गच्छ स्वाहा दिव्यं नक्ष
 गच्छ स्वाहा निर्धनं नक्षत्रं गच्छ
 स्वाहा मनामं हादि गच्छ दिवकं
 धूमां गच्छ स्वाहा तिष्ठति पृथिवी
 रुसनायुषा स्वाहा ॥ श्रीरु ॥ ॐ
 श्रीरुयश्म ॥ ८ ॥ ॐ स्वस्त्यस्तु
 लक्ष्मिर्न ॥ ॥ समस्तुडा
 यधीयस्तु मीनयुजय ७ ॥ ॐ
 याडा यधीः पूर्वो जाग्रादव
 रुः ४ क्रियुर्गयना ॥ मने नूवतु
 णा मरु ४ गार्गधामा निसकव
 ॥ धूय दीपयति स्वा ॥ ॐ मनादू
 ति ॥ ॐ तिष्ठुर्न कृत्वा ॥ ॥

तत्तादवनिर्मकनी ॥ यजमा

नन ॥ ॐ वक्राहर्ण ॥ वलि ॥ ॐ
 अम्बावायव ॥ अग्निताहलक
 सगुणप्रादिगलिमिन लोय ॥
 साक्याय ॥ ॐ काकुत्सा ७ ॥
 कालत ॥ ॐ दीर्घायुस्त्वा ॥ रु
 द्धितिर्हि सावकमं ॥ ॥

तत्तादवस्तान ॥ सिकली ॥ ॐ अ
 द्यादि ॥ यजमानस्य यथाक
 रुत्वा पि नूनकवता द्याप
 ननिमित्तार्थं नूनकमूर्तिस्त
 नमस्कृतिविधौ ॥ ॥ पूर्वोदिक
 लक्ष्म्या गुरुया लक्ष्मिमुक्ति
 दिकधनं यजमानेन वाक्पु
 रुषदायय ७ ॥ आयायनयू
 र्ववस्तुजाकमनयय नस्तान
 कावय ७ ॥ गश्वेन ॥ ॥ पूर्व्या
 ॥ ॐ समुद्रादूर्मि ॥ मुक्ति ॥
 ॐ अग्निवक्रा ॥ नर्वकमं लक्ष्मी
 गानमां धूनक ॥ स्वस्त्यस्तु न

धूनस्तीर्थदक ॥ ॐ यश्च नद्य
 ॥ समुद्रादक ॥ ॐ समुद्रं जघ्ना
 सलिलस्य मध्वानायुना नार्य
 पुनविष्मता ॥ ॐ द्यायावदी कृ
 यहाललाहजायादवी विमा
 वेदक ॥ वीथी लख ॥ ॐ अग्नि

नीरुषः ॥ कूयादक ॥ ॐ आ
 धा ज्ञेमान् ॥ वषा लख ॥ ॐ सु
 क्षिनः ॥ आधा लख ॥ ॐ सु
 मर्क नमृ गु नाद वा स न व म न
 ता मु ता । व ले न ग क ली स रु
 रु वि वि ल व या द ध ॥ न दी स
 ग मा द क ॥ ॐ सि ता सि ता । द रु
 ली ख ॥ ॐ न दी स ४ ची ॥ ग (म)
 द क ॥ ॐ ॐ म भ ग (म) ॥ (ग) गृ
 (म) द क ॥ ॐ स्ना का ना मि नु य
 नि गूल ॐ न्द्रा वृ षा य मा ना वृ
 ष रु मु ला षा ट् । जू कि न य य
 सा स न ल गी ना द वी रा न गी
 वि श्व त रु ति ॥ न ला द क ॥ ॐ
 हि न य ग र्क ॥ हि न (म) द क
 ॥ ॐ हि न य व र्क ॥ ग (म) द क
 ॥ ॐ आ धा हि षा ॥ क र्क ना द क
 ॥ ॐ ग म्भ द्रा वा ॥ कं का ला ज ल
 ॥ ॐ दु प दा दि व ॥ कू (म) द क
 ॥ ॐ प वि ग र्क ॥ वृ षा द क ॥
 ॐ द व स्य ला ॥ गं ग मृ ति का ॥
 ॐ मा हि र्म मा ॥ रु सा ॥ गाय त्री
 ॥ ग त मा ष धी ॥ ॐ या डा ष धी
 पू र्वा जा ना द व स्य क्रि यूर्नी य
 ना । म न नू व कृ णा म रु स ग
 ध मा नि स फ व ॥ वि वृ ॥

ॐ आ मि नु वि नु ॥ ग त धा व ॥
 ॐ व सा ४ य वि ग ॥ स रु म धा व
 ॥ ॐ जू र्ख गा ता ॥ ॐ व स ॥ ॐ
 वि श्व त रु क ॥ व रु ४ स कि ॥ ॐ
 स कि न ॐ न्द्रा ति ॥ ॐ द व स्य मू
 ल म क न गी वा स रु म वा ग
 रु वा य र्ख न ॥ धा न्द्रा क य न
 ॥ ॐ धा न्द्रा म सि ॥ वा हि ॥ ॐ वी रु
 य श्र म ॥ रु ला हि ध क ॥ ॐ या ४
 रु लि ना ॥ ला जा क य न ॥ ॐ ल
 ज वि ष ॥ ॐ मि सान वि धि ॥ ॥

ध न दृ षि य दानं ॥ य त क न पू
 जा ॥ ला हा ग स य न न स कि क
 य ॥ रु सा र्क य न न य रु षा य वी
 त पू र्वा ॥ जू ४ न भ ला का वि
 दा कि णा स हि त ला य ॥ ॥
 द व ली दृ षि वि य क ॥ ॐ यू ४
 कि व ध्र म नू र्व व र कि य वि त
 वृ ष । ला व र्क ला व ना दि वि ॥
 का धा ल न पू य ॥ द व स्य मूल
 म न रु र्क य ग लि खि ला द द
 वी उ र्थ न ॥ व न्द न सि दू व य
 रु षा वी त मी ला पू र्वा स गृ णा
 दि ॥ म र्क ज्ञा व धि ॥ द वा णी र्वा
 द ॥ ॐ ॐ द वि ष ॥ य मि षा ॥

ॐ मना कुति ॥ ॥ अमुलद
वडलाने ॥ ॐ उक्ति सुवक्र
स्यतदवयं लक्ष्मण ॥ उच्य
यलुमनूतः सुगानं ॐ न्यपाण
कृवासवा ॥ ॥ दवस्या ॥ अ
वाथिनाथपाशादकनासक
लं ॥ गक्षा वाथिनिवलि ॥ यज
माननलाजाकं चनं ॥ वाक्र
पानस्वस्तिवाचनं ॥ मृदङ्ग
यादियागं कृत्वा नगर्वस्वदि
गं वा लतालीवा यक्रमलुच्यं वा
कामथ ॥ ॥ यक्रमलुचने
मृदङ्गात्रा ॥ निर्मकुनादिमृ
गिलाहलकासुगुलागावादी
नं ॥ अविक्किन्नजरुधानया
दक्षिणचक्रिकमलयक्रमलु
च्यपूर्वाह्नवरुदयी ॥ निधाय
॥ ॥ वासादिगयाकलगा
चनं ॥ ॐ विष्णुनवाट ॥ ॥
दवर्तगूलसथदासावनाया
य ॥ कागानेकायकासावना ॥
ॐ काकुलाका ॥ ॥

दवर्तय अमुलदवद्वय ॥
आयाथिनिहोसनहिलाय
सुगंधलानितलन ॥ धनं ॥
अक्रुति ॥ ॐ निवतलायसा

ॐ नमः शिवाय ॥ वाय ॥ ॐ
विद्यातलाय ०० ॥ ॐ ॐ दं वि
ष्णु ॥ वाय ॥ ॐ आत्मतलाय ०
० ॥ ॐ वक्रयक्रानं ॥ अवनय
वैष्णु ॥ ॥ ॐ नि ॥ धनं ॥ ॥

धनयजमानजजमानातिग
लन ॥ धनं ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
॥ ॐ वक्रयक्रानं ॥ अवनय
॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ दं विष्णु
॥ वाय ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नमः शि
वाय ॥ वाय ॥ ॥ ॐ नि ॥
॥ धनं ॥ यजमानदवसमीय
गत्वा विधिमालकायादह ॥

ततादवदगक्रियामालरं ॥
ॐ था नि कल्याणाय ०० ॥ अक्रु
ति ॥ ॐ कल्याणाय निवसिदं
ह्यनाहिनसिमात्वाहिससीमा
माहिससिमाह ॥ यजमान
नदवर्तगूलनलाय ॥ ॥
ॐ मृदङ्गकल्याणाय ०० ॥ ॐ वसन्त
नमृगुनादवावसवसुवृत्तसु
गावथनवर्तगजसाहवि वि
लवथादधू ०० ॥ ॥ ॐ वा
थिपदानाय ०० ॥ ॐ वगामृग
विजहातिथानियतिस्यदि

यं। गङ्गा जवायुना वृत्तं उल्लं
जहाति जन्मना। मृतं नमस्य
मिन्द्रियं विद्यान स शुक्रमधस
नन्दस्येन्द्रियमिदं यथा मृत्तम
धू०००॥ ॥ उं नकाय दानाय
००॥ उं लंज विष्टदा॥ ॥ उं
गङ्गाधनाय ००॥ उं गङ्गासू
स्याधनां गङ्गावित्तस्यतीनां
। गङ्गाविष्टस्य हतस्याः ॥ गङ्गा
ज्योमसि ००॥ ॥ उं यं प्रव
गाय ००॥ उं स्वस्ति न ००॥ ॥
॥ उं गीमन्मनयनाय ००॥ उं
गीथानामासि॥ ॥ उं जातक
र्म ००॥ उं यागाय स्वाह
ति॥ ॥ पूर्यताया कायलका
लं॥ ॥ दवायमनं॥ उं दूय
दादिव॥ ॥ लायनं दद०॥
उं गङ्गाकृष्णवहि॥ ॥ दूतम
धूदायथ मूलन॥ उं गङ्गासि
॥ ॥ उं नाजीकुदनाय ००॥
उं यस्यैतयस्त्रियं गङ्गायस्य
थानिहिन ००॥ गङ्गायस्य
गायस्यतमाया समजीगम ०
०॥ कृष्णाननाजीकुदनी॥ ॥
गायथा रुद्रया०॥ उं गङ्गा
जागानय नूदानं सयत्नान
यस्यजोर्गानूदजातवद०॥

अधिनाकहि सुमना जूहं
सुवस्यामगमं सिववृथ उहं
॥ यागवसुचिवा ग्वयग्वाल
शुं विद्यालू सुविदययाया॥
००॥ गीताविधि०॥ ॥ गायत्री
मन्त्रं गायथा कल ००॥ दकना सि
धकं॥ उं गङ्गाया जूमान्॥ ॥
उलायनं॥ उं उहिसुवद्वेष्ट
स्यतदवयं लक्ष्मणं॥ उचय
यनुमनूतं०॥ सुदानव०॥ ००॥ लंया
शुर्कवासवा॥ ॥ यष्टीयाग
॥ यूवास कीयदलू धिद्यात उम
तं कायकं॥ उं गङ्गासू नूव सि
विष्णुवत्ता सामस्य तनूव सिवि
ष्णुवत्ता मिथ्यातिथि मसि वि
ष्णुवत्ता ००॥ नायत्ता सामरुत
विष्णुवत्ता नयत्ता नायस्योष
दविष्णुवत्ता॥ ॥ गङ्गासू नूव
लासजं जनयुय०॥ मगर्हं॥
जुजिनयदानं॥ उं समिद्धाजं
जनकृतवमतीनां दूतम ००॥ म
धूमलवमाना वाजीवदंत्ता
जिनंदवानां विद्विषियमास
धर्कं॥ ॥ उं सद्यसूतकना
गनाय ००॥ उं लम ००॥ नयुहि
॥ ॥ उं निष्कुमनाय ००॥

ॐ निष्कर्मनी निषदनयत्र च
वागयवृत्तः। यत्र यथा यत्र
द्यामसुर्वतात ऊचिदवसुमु
॥ ॐ नामकत्राय ०० ॥
यथायवसु नाम लिखतय
तं ॥ त० यत्र पातनं ॥ ॐ तं जा
सि ॥ यत्र यत्र ॥ ॐ कायस्वाहा
कस्मै स्वाहा कतमस्मै स्वाहा धी
माधी माय स्वाहा मनूय जाय
तय स्वाहा विरू विरू माया दि
यो स्वाहा दिद्यो मध्ये स्वाहा दिद्यो
मूमृधिकाये स्वाहा सनस्वत्ये स्वा
हा सनस्वत्ये पावकाये स्वाहा स
नस्वत्ये वृहत्ये स्वाहा पूष्य स्वाहा
पूष्य यथाय स्वाहा पूष्य नव
धियाय स्वाहा त्वष्ट्र स्वाहा त्वष्ट्र
तुवीय पाय स्वाहा त्वष्ट्र पूवृ
पाय स्वाहा विष्णवे स्वाहा विष्णु
वं निरुय पाय स्वाहा विष्णवे नि
यि विष्टाय स्वाहा ॥ ॥ मूलन
आद्रुगि ॥ ॐ ॐ दी विष्णु ॥ ॥
ॐ रुतपातनाय ०० ॥ ॐ या
रुतिनी ॥ सिमिगि निनलाहा
वपातनं ॥ ॐ अन्नपात
नाय ०० ॥ यत्र जानलाहा व
यश्च ग्राम ॥ ॐ अन्नयतन ॥

अन्नयमनं ॥ ॐ अन्नयमन
लाय ०० ॥ लुंखावनयुताक
नर्ण ॥ ॐ मृद्वर्निदिन ॥ यत्र
रुतिनिन ॥ ॐ वृहस्पतं कृदि
॥ ॥ ॐ कर्तुर्द्विदाय ०० ॥ लुं
मूलनद्रुमकनकेराव ॥ ॐ रु
दिकर्तुर्द्विदाय ॥ ॐ अन्नयमन
नाय ०० ॥ ॐ अन्नयमन
पूतानिर्वृत्ता निश्चावनस्य
निश्चाय ॥ यत्र वीर्यमनाम
रुमृती कामरिष्टयवर्द्धि
यक्षिवा रुमसुतीर्थनामस
दस ०० ॥ ॥ अन्नयमनादि
मृद्वर्तुर्द्विदाय ॥ यत्र वीर्य ॥
गोयथा यत्र यत्र दगध ॥ ॐ य
क्षायवीर्य ॥ दलु कधि ॥ विष्णुग
यरीन ॥ पूष्य ॥ ॐ अन्नयमन
नवृत्तश्च विष्टा मिनककयं ।
तन्मनाध्याता मिदमरुममृता
सहमृयेमि ०० ॥ ॥ ॐ दीक्षा
यदानाय ०० ॥ ॐ अन्नयमनदीक्षा
माध्यानिदीक्षा याध्यानिदीक्षा
यक्षिवा यक्षिवा माध्यानिदीक्षा
सहमाध्याय ०० ॥ ॥ ॐ समा
वर्तनाय ०० ॥ ॐ अन्नयमन ॥ ॥
ॐ विवाहाय ०० ॥ ॐ अन्नयमन

तीनिहमादवामूषात्रियत्व
 शात्रसंयुता॥समाभ्यागतयं
 स्वाहा॥अग्निनाहवका॥॥
 मधूयक्॥ॐ श्रीमधूनामध
 र्वायै नमः सव्यमन्त्रादीनां
 ह्रीमधूनामध्वानयनभक्तानां
 न्नाद्यै नमः सव्यमध्वानाया
 साना॥॥कन्यादानं॥
 कृष्णमिलजलं गृहीत्वा॥ॐ
 श्रवाणां हस्तं॥ॐ श्रुत्यादि॥
 एतन्मानस्य गिष्ठीं श्रुमूकमू
 र्त्तयं श्रुमूर्त्तानां श्रीकन्यां
 ह्रीमहं सैवेदय॥ॐ कादा॥
 ॥॥योगवक्त्रं घदानं॥ॐ
 वसांश्च त्रिगुणसि॥शतवृन्दं
 कायागुरुनिर्गतावशना
 वनद्वाय॥रुलिनिष्ठाय॥
 ॐ ज्ञानात्रमिन्द्र॥॥शतवृ
 द्दकानकांखायक॥ॐ सरु
 मालि सरु॥॥मासय॥॥
 ॐ श्रुवां ह्रीमन्मस्मानमस्मै
 वरुणसिंहारुव॥अहिनिष्ठ
 वृर्गन्धगाववाधस्रवृत्तनाय
 न॥॥अग्निनीलत्वाय
 ॥ॐ नमः शतवृत्त॥॥
 श्रवावक्त्रं॥ॐ यज्ञाय नमः

न॥ ॥ लूं य म न न च क ॥ ॐ
 ह्रि व ल्थ ग ॐ ॥ ॥ हा सा न
 ग य क ॥ ॐ त व वा य ॥ ॥
 ला जा ह्रु ति ॥ ॐ वि धू न वा ट
 ॥ ॥ ॐ अ ल्प प ली वि हा व
 द वा ना मू गी नी नू र्प । ल ष्ठा न
 स मा म यी त थ ० ॥ वे द वा व
 न का य ॥ ॐ नि वि वा रु ॥ ॥
 का य रु लि अ गृ हा य क न ल
 दि ह्र व रं ॥ ॥ स रं ॥ ॐ या ॥
 ह्र लि ती ॥ आ न धि ॥ ॐ न आ सि
 ॥ स गु ॥ ॐ द धि का प्र ॥ ॥
 आ गी र्वा द ॥ ॥ ॐ न म न या
 ग य ० ॥ ॐ वि श्व त प्र ह ॥ ॥
 ॐ मा रु धि रु वि स र्ज ना य ०
 ॥ ॐ मा न व पू र्ण पृ थि वी य
 नी ष्ठा म नि स र्व आ ना व रा न
 वा ॥ गं दि ल्पे द वे र्म गृ हि ॥ स
 सं वि दान ॥ य जा य ति वि श्व क
 मा वि र्म व ति ० ॥ ॥ ॐ व
 गु र्थ ० ॥ ॐ गृ म्भ कं य जा ॥
 सि न्धू न या ग ॥ ॥ ॐ य नि
 ष्ठा य ० ॥ ॐ म ना ह्रु ति ॥ ॥
 ॐ दि वा वा वि ष्णु ॥ यू र्ण ॥ ॥
 यं न स ग क ॥ लि का य ॥ ॥
 ॐ नि द व द न क्रि या ॥ ॥

तथाश्नन्तुवताद्यायनादिद
वचनस्त्रायनश्नसा॥ मूला
वार्यदवाद्यकम्वलादिज्जा
सन्तसमूयविष्णु॥ ज्ञायमने
॥ तालययेदिग्वन्धनीषाणया
मन्यास॥ जूर्यपातयूजात्म
यूजा॥ ॥ जूर्यपातयूजात्म
दर्वसीषाक॥ ॥ ततादवास
नी॥ ॐ ज्ञाध्वराकथं२॥ ॐ जू
नकासनाय२॥ ॐ धर्माय२॥
ॐ स्नानाय२॥ ॐ वेनास्नाय२॥
ॐ नम्रयाय२॥ ॐ मित्रासनी॥

तथाद्वैतकृष्णानस्युत्वा तत्त्व
न्यासं कान्तं ॥ ॐ क्रीं निवत्त
त्वाय २ ॥ ॐ क्रीं निवत्तत्वाधिय
न्यस्य सदा निवाय २ ॥ निवत्ति ॥
ॐ क्रीं विद्यात्त्वाय २ ॥ ॐ क्रीं
विद्यात्त्वाधियन्य विष्णुव
२ ॥ इति ॥ ॐ श्रीरामत्त्वाय २
॥ ॐ क्रीं श्रीरामत्त्वाधियन्य
वदन् ॥ २ ॥ नास्ति ॥ ॐ निवत्त
यश्च तत्त्वमाधनं ॥ ॐ पृथ्वीमू
र्त्य २ ॥ ॐ क्रीं पृथ्वीमूत्त्वाधि
यन्य वा माय २ ॥ श्रीधनुः ॥
ॐ क्रीं श्रीधनुर्मूत्य २ ॥ ॐ क्रीं

आयमूर्त्ताधियतयऊछायेश
॥ जानुदय ॥ उं कौन आमूर्त्त
येश ॥ उं कौन आमूर्त्ताधियतय
क्रियायेश ॥ नासो ॥ उं वायूमूर्
रुयेश ॥ उं वायूमूर्त्ताधियत
येश ॥ नासो ॥ उं खमूर्त्त
येश ॥ उं कौन खमूर्त्ताधियतय
ॐ क्रायेश ॥ ललाट ॥ सुचिह्नि
तिसंहारकर्म ॥ ॐ तियश्चत

मूर्त्ततत्त्वनास ॥ उं कौन रु ४ स्वा
हा ॥ नासादय ॥ उं कौन रुव ४ स्वा
हा ॥ नासादय ॥ उं कौन रुव ४ स्वा
हा ॥ कर्तुदय ॥ उं कौन मरु ४
स्वाहा ॥ क ४ ॥ उं कौन उन ४ स्वा
हा ॥ हृदया ॥ उं कौन तय ४ स्वाहा
॥ नासो ॥ उं कौन सख ४ स्वाहा ॥
लामविलाम ॥ ॐ सकतत्वं ॥

ततायदय ॥ उं यकाग
ता ॥ उं कौन हृदयायनम ४ ॥ उं
सरुमणी ॥ उं कौन निरुसस्वा
हा ॥ उं कौन रु ४ स्वाहा ॥ उं कौन नि
रुसस्वाहा ॥ उं कौन रु ४ स्वाहा
ना ॥ उं कौन कवेवाय ४ ॥ उं वि
जा ४ रु ॥ उं कौन नरुगयायव
षट् ॥ उं नमस्तु ४ ॥ उं कौन

मूर्त्ताय रुट् ॥ ॐ तिवदय ४ ॥
यश्च विगतिरत्वं न्यास ॥ उं कौ
ॐ नवनयकृतिरत्वाधियतय
उं कौन अधिदेवताय निरुस ४
॥ उं कौन नमारुगवर्गवासुदवा
यपूतत्वाय रुकावाधिदेव
ताय हृदयाय ४ ॥ उं कौन वृद्धि
रत्वाधियाय रुकावाधिदेव
ताय निरुस ४ ॥ उं कौन ऊर्ध्वका
वर्तत्वाधियाय रुकावाधिदे
वताय निरुस ४ ॥ उं कौन मन
स्तत्वाधियाय रुकावाधिदेव
ताय कवेवाय ४ ॥ उं कौन शङ्कर
त्वाधियाय रुकावाधिदेवता
य मूर्त्ताय ४ ॥ उं कौन सगर्गतत्वा
धियाय रुकावाधिदेवताय न
रुस ४ ॥ उं कौन वृषतत्वा
धियाय रुकावाधिदेवताय
उदवाय ४ ॥ उं कौन वसतत्वा
धियाय रुकावाधिदेवताय
पृष्ठाय ४ ॥ उं कौन गन्धतत्वाधि
याय रुकावाधिदेवताय वायु
दयाय ४ ॥ उं कौन प्राणतत्वाधि
याय रुकावाधिदेवताय उरु
दयाय ४ ॥ उं कौन त्वगतत्वा
धियाय रुकावाधिदेवताय

जं द्याद्ययाय २ ॥ उं कौ चक्र ४ त
त्वाधियाय जकावाधिदेवता
यपादद्याय २ ॥ उं कौ जिह्वा
तत्वाधियाय ० कावाधिदेवता
यवैलगाय २ ॥ उं कौ गुण
तत्वाधियाय ठकावाधिदेव
तायसूदर्शनाय २ ॥ उं कौ वा
कृतत्वाधियाय ३ कावाधिदे
वतायगदावूपाय २ ॥ उं कौ पा
लितत्वाधियायसकावाधिदे
वतायपाथरुन्याय २ ॥ उं कौ
पादतत्वाधियायजकावाधि
देवतायगाभीय २ ॥ उं कौ यायू
तत्वाधियायकृकावाधिदेव
तायॐषूवूपाय २ ॥ उं कौ उ
पलुतत्वाधियाययकावाधि
देवतायखड्गाय २ ॥ उं कौ जू
काणतत्वाधियायठकावा
धिदेवतायलिथ २ ॥ उं कौ वा
यूतत्वाधियाययकावाधिदे
वताययष्टय २ ॥ उं कौ न ऊ
कृतत्वाधियायगकावाधिदेव
तायवनमालावूपाय २ ॥
उं कौ जूयतत्वाधियायख
कावाधिदेवतायशीयकृ
य २ ॥ उं कौ यथीतत्वाधिया
यककावाधिदेवतायकी

सुराय २ ॥ २५ ॥ ॐ नमिष्य
विगतिगत्व न्यासन ११ धन

मूलवचन न्यास ॥ उं कौ न
म४ दीफयरायमूक्रायरु
ट ॥ कनगाधन ॥ उं कौ नम४
देदयाय २ ॥ उं कौ नम४ निव
सखाहा ॥ उं कौ नम४ लिखाय
वीषट ॥ उं कौ नकववायकूं
॥ उं कौ नम४ नगाया २ ॥ उं कौ
नम४ दीफयरायमूक्रायरु
ट ॥ ॥ वक्रं न्यास ॥ उं कौ वेक
लायपूर्ववक्राय २ ॥ उं कौ ने
नसिहायदक्षिणवक्राय २ ॥
उं कौ कपिलायपश्चिमवक्रा
य २ ॥ उं कौ ववाहायउरुव
क्राय २ ॥ उं कौ टंयं गंधलगा
य २ ॥ मन्त्र ॥ ॐ नमिष्य न्यास ॥

षड्विंशतिगत्व न्यास ॥ उं कौ
जूं कं खं नं दं दं जूं पृथिव्या
जावायाकाणात्मनजुमुष्टा
या २ ॥ १ ॥ उं कौ ॐ यं कूं जूं
उं कूं ॐ गद्यस्य गंधीयनसु
गन्धात्मनंतर्जनाया २ ॥ उं
कौ उं टं रं उं रं लं उं लवम

मंसि नृधिवमंदमकात्मनेम
धमास्यो २ ॥ उं कौमुं गंधं धं
नं सुं नृवाग्मनश्च कृष्ण
जिह्वाष्टात्मानं अनामिका
स्यो २ ॥ उं कौमुं गंधं धं सुं मं उं
मनावृद्धिं हं कात्रिहं सुं
नं कनिष्ठास्यो २ ॥ उं कौमुं यं
वं लं वं गं घं संहं लं कं मू ४ व
यनोदानानन्दात्मनविश्वमा
गच्छन्मज्जुमाययुट् ॥ ६ ॥ ५
वैद्ययादिषु कृम्याम ४ ॥

षड्विंशतिस्तत्त्व्यासु ॥ उं कौ
पृथ्वीस्तत्त्व्यासु ॥ उं कौआयत
स्तत्त्व्यासु ॥ उं कौतजस्तत्त्व्यासु ॥
॥ उं वायुस्तत्त्व्यासु ॥ उं कौआ
कास्तत्त्व्यासु ॥ उं कौगन्धस्त
त्त्व्यासु ॥ पाद। दिगुक्ता ॥

उं कौगन्धस्तत्त्व्यासु ॥ उं कौस्य
स्तत्त्व्यासु ॥ उं कौवृषस्तत्त्व्या
सु ॥ उं कौवृषस्तत्त्व्यासु ॥
उं कौआलस्तत्त्व्यासु ॥ उं कौ
जिह्वास्तत्त्व्यासु ॥ उं कौदिना
स्तत्त्व्यासु ॥ ॥

उं कौवृक्षस्तत्त्व्यासु ॥ उं कौवृ
क्षस्तत्त्व्यासु ॥ उं कौआलस्तत्त्व्या

२ ॥ उं कौवाक्स्तत्त्व्यासु ॥ उं कौ
पालिस्तत्त्व्यासु ॥ उं कौपादस्त
त्त्व्यासु ॥ नासादिहृदयार्क
उं कौपायुक्तस्तत्त्व्यासु ॥ उं कौउ
यक्तस्तत्त्व्यासु ॥ उं कौमनस्त
त्त्व्यासु ॥ उं कौवृद्धिस्तत्त्व्यासु ॥
॥ उं कौनृद्धिस्तत्त्व्यासु ॥
उं कौयक्तस्तत्त्व्यासु नमः ॥
हृदयादितालमूलार्क ॥ ॥

उं कौपूवृक्षस्तत्त्व्यासु ॥ उं कौ
वागस्तत्त्व्यासु ॥ उं कौनीतिस्त
त्त्व्यासु ॥ उं कौकालस्तत्त्व्यासु ॥
॥ उं कौकालस्तत्त्व्यासु ॥ उं कौ
मायास्तत्त्व्यासु ॥ तालमूला
दिललाटार्कविनास ७ ॥ ॥

उं कौविद्यास्तत्त्व्यासु ॥ उं कौपु
ष्टविद्यास्तत्त्व्यासु ॥ उं कौष्ठी
श्वस्तत्त्व्यासु ॥ उं कौसदासि
वस्तत्त्व्यासु ॥ उं कौगक्तिस्तत्त्व्या
सु ॥ उं कौगितिस्तत्त्व्यासु ॥
ललाटादिषु कृम्याम ४ ॥ ॥

उं कौनमः ॥ नासधः ॥ उं कौ
नमः ॥ हृदयादिनासि ॥ उं कौ
नमः ॥ मस्तकादिहृदय ॥ उं
यं ललाटं नमः ॥ हृदय ॥

मूधसममूलवलायांजीवय
दानं॥वायुलीःसुस्तिवाचनं
॥गूरुशुक्रमागुध्नादिधाषक
ला॥मूलावायुलायध्नामन

धनजीवलिखान ॥ उंयालंद
 हितथाजीवमायूदहिसर्ग
 धनं । विद्याज्ञानसूखंदहिय
 हिमलयूसर्ग ॥ ॥ ॥
 जीवन्मासविधिः ॥ ॥

थनविश्वकर्मापूजनं॥कव
मिमालकासंलोकानसखकि

कथायाव यदुवासनसुक्ति
 कखनं ॥ **हवनं** ॥ हितुतय
 काव द्यारुणियशमृगादि
 हान ॥ यन्वनादियूष्ययुजा
 सदक्षिणा ॥ ॥ **कनमीयुजा**
 न ॥ ॐ विश्वकर्मा ॥ दमास
 नं ॥ ॥ **नवीपा** दार्धकसार्धव
 न्यनयजामखानविय ॥ ॥
ध्यान ॥ ॐ ह्रिजं यानदरुनु
 जटाधारीकजासनं । विश्वक
 र्मागदातो योऽज्ञानकसूत्र
 धृक् ॥ **वद** ॥ ॐ विश्वकर्मा वि
 मनोऽहो हिराया धाता विधाता
 यत्र मातसं दृक् । तस्या निष्ठा
 निसमिधामदक्षियगासक
 मृचीनृप नृपकमाह ॥ जा
यस्त ॥ ॐ विश्वकर्मानम
 नुस्मरेत्ताय सुखिकारकः
 । यथायुधकनायाश्च विश्व
 कर्मानमो मुते ॥ **गुरुगन्ध**
 दि ॥ दक्षिणा सरुद्रा रतिहृता
 य ॥ ॥ **स्तिनरात्र** या तमूल
 मन्त्रनमो हूति ॥ १०८ ॥ **यूषु**
 ॥ ॐ स्तिनरात्र विश्वकर्मा ॥
 ववाद्यवन् । पृथुर्वसुखद
 हूमन्तः ॥ **पूरीषवाहन** ००

॥ ॥ **सूवलासस्तिनरात्र** ॥
 यजमाननकलाने कनमीन
 द्यारुणिन जातिनला हातन
 वाक्मन्तन द्यवानका पूर्यथि
 यावतं ॥ ॥ **वाक्म** ॥ ॐ **यूषु**
 बालारुकल्प ॥ ॐ **यूषु** ॥
 यजमानस्य ह्यादि जूमूकमू
 र्तिव वस्तुयनसुमूकमिमु
 ॥ ॐ **यति** **स्तिमा** सिधेवंगी सु
 यतिशरुवत्ययं । सानिधाय
 तियद्यनयजमानाः स्तिवद्व
 यं ॥ **गन्त** ॥ मुद्विद्यदानिर्य
 गन्तामुवद्वयं यदः । सन्ता
 मुसर्वलाकारा गन्तावाक्ता
 ल्येवव । यजमानसरुह्यानां
 सपूरुषयुवाधवान् ॥ **नकल**
 सर्वदायवदं विवेनमासु
 तं ॥ यावदुतयतसु अर्धज
 यवववर्तिनी । तावद्युगस
 रुमागिकला विष्णुपूर्ववस
 ॥ **वाक्म** ॥ निजयीवाजासु
 खिनः सुयजाकथा । सयं
 क्रियावधर्मसु रिकालाह
 भवयारुमलकयदानेनय
 र्थका हिरुर्धजा ॥ यावद्व
 लधसु अर्धमादिनी सफसा

गत्राः। यावदाकाशगंजों।
 गङ्गायताव० लं गुक्तिनारुव
 ॥ यावत्प्रतिमालिङ्गदीया
 वल्यनममानवः। तावद्युग
 सरुआलिकर्तविष्णुपूर्ववैभ
 ॥ वद॥ ॐ क्तिनारुव विष्णु
 आ० ईव वाश्चर्वन। पृथुर्क
 वसुधैवकुलम० ४ पूत्रीषवा
 रुनः॥ यजमानस्यामूकमू
 र्तिप्रतिष्ठाति नित्यर्थममूक
 मूर्तिप्रतिमावत्प्रकाश्याक्तिना
 रुव३॥ ॥ क्तिनद्विजा॥
 अनिलाहलकासगुणादि॥
 मूलमन्त्रं यतिष्ठाकलण
 रिषर्क॥ ॐ अयमग्निः पूत्री
 ध्यावयिमानयुष्टिवर्द्धनः।
 अ० पूत्रीषवा। रिषून्ममहि
 सरुआयचुह॥ ॥ वन्द्य
 नसिन्दूरसगुणागीर्वाद्यं॥
 सरुआयचुह॥ ॥ लाजा
 मूर्ति॥ ॐ मनादूति॥ ॥
 ॐ तिदवस्तिनरुत्रविधिः॥

धनवगाद्याचनशत्रुसाद
 वार्धनविधिमूमान॥ विधि
 र्थधनमूनिधनिधर्मदन

क॥ ॐ अशुदि॥ यजमानस्य
 त्यादि॥ यजमकातयववसे
 देवसंमृत्पूजय, आदित्य
 कुलिल, नागर्ष, निवशाकि।
 ॐ न्यकल, अनिकुल, ग्वउजा
 वलि, (ग)शम, कोमावी, वहि
 द्वावाङ्गादियातंग॥ स्वार्नश्च
 तर्क॥ ॥ उवकयार्थना॥
 लं डाहावतका, थायसंका
 य॥ ऊप्रयावद्वा यक॥ पू
 नार्त्तपतकादंग॥ मऊर्तित्थ
 अर्चजाय॥ मधुलसायचर्च
 नैधनक॥ धनमधुलविसर्ज
 नमयास्य, वरुर्दणविष्णव
 सिविधिरामयादृह॥ ॥

समिदायविधि॥ सिविधिधू
 र्गुलि१२हायक॥ ॥
 आशुतिविधि॥ मन्त्र॥ ॐ ईं। स
 ४विष्णुसमनमानावायला
 यमलित्कषणायअनकाय
 ००॥ वलसि, र्वांयालंयवस
 धूसंदाय॥ द्युतनपूजा॥ व
 द॥ ॐ अ० नरुनूवसि॥ १॥
 ॐ ईं। स४कविलाय००॥ ईवि
 विहि॥ पूजा॥ ॐ नीलग्रीवा

लिति ॥ २ ॥ ॐ कौसुम ॥ लावाय
 ०० ॥ बर्लगतसि ॥ ॐ उदरुजा
 तव ॥ ३ ॥ ॐ कौसुम ॥ सैकषला
 य ०० ॥ विनागसि ॥ ॐ विनाट
 वरु ॥ ४ ॥ ॐ कौसुम ॥ रुलायुधा
 य ०० ॥ कृष्ण ॥ ॐ हायेदावोहा
 नपरायाभू ॥ नर्धयप्रत्यविष्ट
 यायाहिधकोनर्वहिसायना
 काययनिवस्यार्नयवलायथ
 लितार्नमनूषा लाकयकलित
 नससर्वला लाकय ४ ८ यमका
 वमवमृयेवधयायमन्किना
 नमधवासायल्यूलय कामाय
 वजयिगीम ०० ॥ ५ ॥ ॐ कौसु
 म ॥ लिखुषलाय ०० ॥ समिसि
 ॥ ॐ जूभशिरुसि यज्जवाया
 लंपूषो ॥ गालीवीयायावि
 यालीनजसजयालीमीनाकाय
 कोनालीकीलावायसूनाकाली
 कुदायगुरुयस ॥ यमविलुध
 माध्वकानूकरुनससाहा ॥ ६
 ॥ ॐ कौसुम ॥ लयालय ०० ॥
 यवदानसि ॥ पू ॥ ॐ गालि
 यदा ॥ १ ॥ ॐ कौसुम ॥ वलरुदा
 य ०० ॥ लाहासि ॥ ॐ शुभकज
 ॥ ८ ॥ ॐ कौसुम ॥ गृन्धवाय

०० ॥ अयामार्ग ॥ ॐ सुदवा
 नि ॥ २ ॥ ॐ कौसुम ॥ लाका लाक
 ववाय ०० ॥ यदिनसि ॥ ॐ जू
 कषू ॥ १० ॥ ॐ कौसुम ॥ रुलीन्दा
 य ०० ॥ वैककनसि ॥ ॐ विष्णु
 कर्मलि ॥ ११ ॥ ॐ कौसुम ॥ सह
 अरुलिन ०० ॥ वारिदा ॥
 ॐ सहअणीधा ॥ १२ ॥ ॐ कौसु
 म ॥ कषूय ०० ॥ अर्कयाग ॥ ॐ
 कषूस्माखवष्टा ॥ १३ ॥ ॐ कौ
 स ॥ थागनिदाय ०० ॥ दूर्वा ॥
 पुनपूरु ॥ ॐ गासविगुर्व ॥
 १४ ॥ ॐ विविषासिनिधि ॥
 थनधर्मनियनिस्यथअसू
 गकाकनकंग ॥ ॥ याम्प
 नमूलमकुण्ठागुरुमि ५५ ॥
 यूननपूरु ॥ ॐ विष्णुननाट
 मसि ॥ ध्रुवनयवसु ॥ ॥
 जितलाहति ॥ ॐ रु ०० ॥ ५४
 ॥ ॐ यमयज्ञान ॥ ध्रुवानधर्म
 नियनिसकला लाय ॥ ॥
 ॐ रुव ०० ॥ ५४ ॥ ॐ रुदवि
 षू ॥ धर्मनिलाय ॥ ॥ ॐ
 रु ०० ॥ ५४ ॥ ॐ नमः ॥ रुवा
 येव ॥ धर्मनिलानलाय

यूनः प्रालयनिष्ठा स्मिन्नस्मा
 धने विधिमाह ॥ यवदशक
 मधुमुन्येषश्चसृष्टकायधू
 नकाव ॥ यवस्मिन्नस्मायद्रुमा
 गला ॥ वाय्वान ॥ मध्ववद्रु
 गिलास्माय ॥ सुभन्निलविस्मा
 यमपुलाक ॥ शुद्धानिलविस्मा
 र्जसंगाध्व ॥ तण्डुलामाध्वमास
 नस्माद्विजुर्जात्रकवर्कानीलाय
 लयमिलवविष्णि ॥ तालांशुका
 यविधानांमर्वालीकात्रमणिता
 माध्वानिलानृचिर्वाध्वान्तात
 स्याः ॥ मरुमदलेनिकांविष्णा
 य ॥ न्यासिक्या ॥ ७ ॥ ५५४ नमः
 दीपयज्ञोयोमायैरुट् ॥ क

वरुणाधनी ॥ ॐ कौं नमः ॥ अरु
 वास्यां ॥ ॐ कौं नमः ॥ तर्जनी ॥
 २ ॥ ॐ कौं नमः ॥ मध्यमा ॥ २ ॥ ॐ
 कौं नमः ॥ अनामिका ॥ २ ॥ ॐ कौं
 नमः ॥ कनिष्ठा ॥ २ ॥ ॥
 वक्रव्यास ॥ ॐ कौं वैकुण्ठाय पू
 र्ववक्राय ॥ २ ॥ ॐ कौं ननुसिंहा
 यदक्षिणवक्राय ॥ २ ॥ ॐ कौं क
 चिलाय यश्चिम्बवक्राय ॥ २ ॥ ॐ
 कौं वनाहाय उत्तरवक्राय ॥
 ॥ ॐ कौं टं यं वैष्णवाय ॥ २ ॥
 मध्य ॥ ॥ अरु न्यास ॥ ॐ कौं
 नमः ॥ हृदयाय ॥ २ ॥ ॐ कौं नमः
 निवसस्वारा ॥ ॐ कौं नमः ॥ निखा
 यवीषट् ॥ ॐ कौं नमः ॥ कवचाय
 द्वा ॥ ॐ कौं नमः ॥ भवास्यां वष
 ट् ॥ ॐ कौं नमः ॥ दीपयहाया
 क्रियाय रुट् ॥ ॥ अरु नार्घ्या
 उषूजय दत्तपूजनीय ॥ ॥

निलाणाधर्न ॥ उं मलुकाय २
 ॥ आधर्न ॥ उं काला निवृद्धा
 य २ ॥ साधिका ॥ उं ककुया
 य २ ॥ नासा ॥ उं आधर्नशक
 य २ ॥ हृदि ॥ उं धर्माय २ ॥ दक्ष
 क ॥ उं स्नानाय २ ॥ वामक
 ॥ उं वेनासाय २ ॥ दक्षाय

दमूल ॥ ॐ नमो भगवते ॥ वा
मयोदमूल ॥ ॐ जूधमाय ॥
वकु ॥ ॐ जूझानाय ॥ यानो
॥ ॐ जूवेनासाय ॥ दक्षिण
या ॥ ॐ जूनेधाय ॥
वामया ॥ ॐ सफनिलया
धमसरुमरुलाय जूननाय
॥ ॥ नवका ॥ धमवत
वोहि उयधम उयधम कृष्णक
तदुवायुष्यादि कुमलनिधाय
॥ पूर्वमालं रुव रुवधान
उग्रहा कु ॥ १ ॥ ॥ नमो ॥ गिज
ल सुयोकाकि मनसीव चट
कलि खानवा ॥ २ ॥ दक्षिण ॥
न नोल हिउलि नकुवन्द
न रुमल ॥ ३ ॥ नमो ॥ क
ल महानील सु लुमाकि मू
गुलि नाहावा ॥ ४ ॥ पश्चिम
॥ ॐ ह्रीं मूटि याधन धी
खलु यवा ॥ ५ ॥ वायव्य ॥ कीस
लीयधवाग यागधिवि व
कनसि तकाग ॥ ६ ॥ उरु
व ॥ लि लि यधवाग गधक
कूट कावाट ॥ ७ ॥ ॐ नमो ॥
वधान धवाग ॥ ८ ॥ यतिगिर्य
धधि कवाव ॥ ९ ॥ मध

सा ॥ सर्ववत्त धातु उयधम
उयधम वोहि कृष्णतिलज
कदुवादि सर्व निधाय ॥ १० ॥
॥ पुनः स ॥ धवाग कि सुव
लु गिकापीय निधाय ॥ ११ ॥

ततः पूजनं ॥ ॐ कोस ॥ नान
न्याये ॥ ॐ जूधमाय ॥ ॐ
कोस ॥ सौ रुदाये ॥ ॐ कोस ॥
सुंझानाय ॥ ॐ कोस ॥ जौज
याये ॥ ॐ कोस ॥ ॐ वेनासाय
॥ ॐ कोस ॥ विविकाये ॥ ॐ को
स ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॥ नमो
दिग्गजानां ॥ ॥ ॐ कोस ॥
नान न्याये ॥ ॐ ३ सुं जूधमा
य ॥ ॐ ३ सौ रुदाये ॥ ॐ ३
जौज झानाय ॥ ॐ ३ जौज
याये ॥ ॐ ३ जूवेनासाय ॥
॥ ॐ ३ विविकाये ॥ ॐ ३ जू
जनेधाय ॥ पूर्वमालं रुव
न ॥ ॥ ॐ ३ यं धुं धुं ॥ ॐ
३ धाधनकये ॥ ॥ नमो ना
य ॥ कोना लुवाय ॥ कीना लुव
॥ ॥ कन्द ॥ नाल ॥ यध ॥ यध ॥
कणव ॥ कलि का ॥ ॐ गवृथा
सनाय ॥ ॥ तस्याय विवि

ॐ यजमानमूर्त्याधिपतय ॐ
 यय २ ॥ ॐ मूर्कमूर्कय २ ॥ ॐ
 मूर्कमूर्त्याधिपतय नूदाय
 २ ॥ ॐ जलमूर्कय २ ॥ ॐ जल
 मूर्त्याधिपतय रुवाय २ ॥ ॐ
 वायूमूर्कय २ ॥ ॐ वायूमूर्त्या
 धिपतय ॐ गानाय २ ॥ ॐ
 न्दमूर्कय २ ॥ ॐ न्दमूर्त्याधि
 पतय महादवाय २ ॥ ॐ रमू
 र्कय २ ॥ ॐ रमूर्त्याधिपतय
 शीमाय २ ॥ श्रीवादि ललाटार्क
 न्यास ॥ ॐ तिमिवनलन्यास
 ॐ वक्रालुमूर्कय २ ॥ ॐ वक्र
 लुमूर्त्याधिपतय यत्र वक्र
 ल २ ॥ ॐ तियत्र विगतितर्क
 मूर्कलिंगातिकला न्यास ॥ ॐ
 कां गानि न्ये २ ॥ मूर्द्धि पूर्व ॥
 ॐ कां मूर्कदान्ये २ ॥ मूर्द्धि दक्ष ॥
 ॐ कां ॐ काये २ ॥ मूर्द्धि यशिमं ॥
 ॐ कां मत्रिये २ ॥ मूर्द्धि वामं ॥
 ॐ कां कालिन्ये २ ॥ मूर्द्धि मध्यं ॥
 ॐ कां निवृत्त्ये २ ॥ पूर्ववर्क ॥
 ॐ कां यतिष्ठाय २ ॥ दक्षवर्क ॥
 ॐ कां विद्याये २ ॥ यशिवर्क ॥

ॐ कं मां हाये २ ॥ उरु नव कुं ॥
 ॐ कं मनसं २ ॥ मूर्द्धिम ॥
 ॐ कं माहाय २ ॥ हृदय ॥
 ॐ कं कमाये २ ॥ गीवायां ॥
 ॐ कं निष्ठाये २ ॥ छात्रया ॥
 ॐ कं व्याधये २ ॥ नाभी ॥
 ॐ कं मृग्यये २ ॥ उदरे ॥
 ॐ कं कृधये २ ॥ पृष्ठवर्णा ॥
 ॐ कं कृष्णये २ ॥ उरुद्वया ॥
 ॐ कं नजने २ ॥ गुच्छात्र ॥
 ॐ कं नकाये २ ॥ लिङ्गस्थाने ॥
 ॐ कं ननिने २ ॥ दक्षिणांभी ॥
 ॐ कं कामान्ने २ ॥ वामांभी ॥
 ॐ कं पाल्ने २ ॥ दक्षिणजांभी ॥
 ॐ कं गयन्ने २ ॥ वामांभी ॥
 ॐ कं क्रियाये २ ॥ दक्षिणजंघा ॥
 ॐ कं वृद्धये २ ॥ वामजंघायां ॥
 ॐ कं वयोये २ ॥ दक्षिणसिन्धु ॥
 ॐ कं नाये २ ॥ वामसिन्धु ॥
 ॐ कं त्रामन्ने २ ॥ कटिद्वय ॥
 ॐ कं मारुन्ने २ ॥ दक्षिणयावर्णे ॥
 ॐ कं हालाये २ ॥ वामयावर्णे ॥
 ॐ कं सिद्धये २ ॥ दक्षिणयावर्णे ॥
 ॐ कं विद्धये २ ॥ वामयावर्णे ॥
 ॐ कं धृतये २ ॥ दक्षिणहस्त ॥

ॐ कौश्यायै ॥ वामरुक् ॥
ॐ कौमध्यायै ॥ नागाष्टद्वय ॥
ॐ कौकाकायै ॥ निरुमि ॥
ॐ कौपजायै ॥ दककुज ॥
ॐ कौस्रध्यायै ॥ वामरुज ॥
ॐ ह्यष्टगिणिकला न्यास ॥

ततः कणवादि न्यासः ॥ ॐ ऊं
कणवायकीर्तिमः ॥ लला
ट ॥ ॐ ऊं नावायलायकीर्ति
॥ मुख्यरुक् ॥ ॐ ऊं माधवाय
पुष्टौ ॥ दक्षिणनय ॥ ॐ ऊं
लाविनायपुष्टौ ॥ वामनय
॥ ॐ ॐ विष्णुवधुष्टौ ॥ दक्षक
॥ ॐ ॐ मधुसूदनायश्रीष्टौ
॥ वामक ॥ ॐ मृगिविक
मायकिमायै ॥ दक्ष्या ॥
ॐ ॐ वामनायदयायै ॥ वाम
द्या ॥ ॐ ॐ ग्रीधवायमध्यायै
॥ दक्षग ॥ ॐ ॐ ह्यष्टीक
गायरुष्टायै ॥ वामग ॥ ॐ
नयदानारायणष्टायै ॥ उष्टा
॥ ॐ नंदामादवायललायै
॥ ऊष्टा ॥ ॐ ॐ वामदवा
यललायै ॥ उष्टा ॥ ॐ ॐ
सकषलायसर्वस्वष्टौ ॥ ऊ

धदक ॥ ॐ ऊं पद्मनायप्रायै
॥ ॐ म ॥ ॐ ऊं अनिरुद्धा
यवष्टौ ॥ मुख्य ॥ ॐ कं चक्रि
जयायै ॥ दक्षक ॥ ॐ ॐ
नदिनदुर्गायै ॥ दक्षवाही
॥ ॐ ॐ लाङ्गीनप्रसायै ॥ दक्ष
कृष्ण ॥ ॐ ॐ धनिनसखायै
॥ दक्षमणिव ॥ ॐ ॐ शिविन
यष्टायै ॥ दक्षमुली ॥ ॐ ॐ
लिनध्यायै ॥ वामरुक् ॥ ॐ
ॐ मृगालिनविलासिन्यै ॥ वा
मवाही ॥ ॐ ॐ गुलिनजयायै
॥ वामकृष्ण ॥ ॐ ॐ पाणिन
विनजायै ॥ वाममणिव ॥
ॐ ॐ ऊं कलिलिनविष्टायै ॥
॥ वामगुली ॥ ॐ ॐ मृकन्दाय
विनदायै ॥ दक्षायै ॥ ॐ ॐ न
नजायसूननजायै ॥ दक्ष
जय ॥ ॐ ॐ नदिनसुष्टौ ॥ दक्ष
कजायै ॥ ॐ ॐ नवायपुष्टौ ॥
॥ दक्षगुष्टौ ॥ ॐ ॐ नवकजित
सपुष्टौ ॥ दक्षगुली ॥ ॐ ॐ रु
पयपुष्टौ ॥ वामकटौ ॥ ॐ ॐ
कषायपुष्टौ ॥ वामायै ॥ ॐ
दसखायपुष्टौ ॥ वामजायै

॥ॐ धं सा त्व मा य म ह्ये २ ॥
वाम गु २ ॥ॐ नं लो न य क मा
ये २ ॥ वाम पादा कु लो ॥ॐ यं शु
वा य व मा ये २ ॥ द क पा २ ॥
ॐ रं ज ना द्दि ना य ड मा ये २ ॥
वाम पा २ ॥ॐ वं रु ध रा य क
दि नो २ ॥ य २ ॥ॐ रं वि श्व मूर्त
थ कि ना ये २ ॥ ना सो ॥ॐ मं वं क
धाय व स दा ये २ ॥ द्दि ॥ॐ यं
यू व धा रु मा य व स धा ये त्व मा
स ह्यो २ ॥ द क क क दि ॥ॐ वं व
लि य वा स्या म सु गा स ह्यो २ ॥
वामा २ ॥ॐ लं व ला नू ऊ ध वा
य वा स्या मी सा स ह्यो २ ॥ वाम
क क दि ॥ॐ वं ल सु क्ता स्या म
दा स ह्यो २ ॥ द क २ ॥ॐ नं वृ
ष म्भ स्या म्भ स्या म्भ स ह्यो २
॥ द्दि ॥ॐ द क वा द्दि ॥ॐ वं वृष
य क्ता स्या म्भ स ह्यो २ ॥ द्दि
दि वाम वा द्दि ॥ॐ रं शु क्ता स्या
स्या २ ॥ द्दि ॥ॐ द क वा द्दि ॥ॐ रं
व वा रु नि गा स्या या ला स ह्यो २
॥ द्दि ॥ॐ द क वा द्दि ॥ॐ लं वि
म ल मा हा स्या क्रि या ग क्ता स
स्या २ ॥ ना सो ॥ॐ रं न व र्मि रु

वि श्व मा स्या क्ता स ह्यो २ ॥ मूर्त
॥ॐ रं क ग वा दि न्या स २ ॥ क
ग वा दि न य न्या स न्या स मा य
द हि नी ॥ अ य न त र्मि रु व द्दि
स नि धि य ति मा दि य ॥ ॥

य वा न्या स २ ॥ॐ मं न म २ य वा
य जा वा स न ॥ॐ रं न म २ य
वा य वा ला स न २ ॥ ए त द्दि यं
स र्वा २ ॥ॐ रं न म २
य वा य वृ द्दि स न २ ॥ॐ रं
रं न म २ य वा य अ र्क वा स
न २ ॥ॐ यं न म २ य वा य म न
आ स न २ ॥ ए त द्दि यं द्दि ॥
॥ॐ रं न म २ य वा य ग द्दि
स न २ ॥ॐ रं न म २ य वा
य स्या म्भ स न २ ॥ मूर्ति मूर्त ॥
ॐ रं न म २ य वा य वृ द्दि स
न २ ॥ॐ रं न म २ य वा य व
सा स न २ ॥ उ य रु ॥ॐ रं न
न म २ य वा य ग द्दि स न २ ॥
वा द्दि २ ॥ॐ रं न म २ य
वा य वा ला स न २ ॥ ए त द्दि यं
२ ॥ॐ रं न म २ य वा य व
गा स न २ ॥ जि द्दि ॥ॐ रं
ॐ न म २ य वा य व द्दि २ ॥ त र्मि

लमनं २॥ **बहुधा** ॥ ॐ क्लीं तं
 नमः ४ यवाय जिह्वा लमनं २॥
 जिह्वा यी ॥ ॐ क्लीं तं नमः ४ य
 वायवा ॥ तत्वा लमनं २॥ **प्रा**
 ८॥ ॐ क्लीं तं नमः ४ यवाय
 वाक् तत्वा लमनं २॥ **वा** ॥ ॐ
 क्लीं तं नमः ४ यवाय रुक् तत्वा
 लमनं २॥ **रुक्** ॥ ॐ क्लीं तं न
 मः ४ यवाय पाद तत्वा लमनं २॥
 पादया ॥ ॐ क्लीं तं नमः ४ यवा
 यवाय तत्वा लमनं २॥ **पा** ॥
 ॐ क्लीं तं नमः ४ यवाय उपरु
 तत्वा लमनं २॥ **उपरु** ॥ ॐ क्लीं तं
 नमः ४ यवाय आकाश तत्वा लम
 नं २॥ **वक्त्र** ॥ ॐ क्लीं तं न
 मः ४ यवाय आत्मा लमनं २॥ **मुख**
 ॥ ॐ क्लीं तं नमः ४ यवाय तंजुक्त
 त्वा लमनं २॥ **हृदि** ॥ ॐ क्लीं तं न
 मः ४ यवाय गवावा लमनं २॥ **लि**
 ८॥ ॐ क्लीं तं नमः ४ यवाय य
 धिया लमनं २॥ **पाद** ॥ ॐ
 क्लीं तं नमः ४ यवाय हृत्पुली
 का लमनं २॥ ॐ क्लीं तं नमः ४ यवा
 य सोम मलुला लमनं ४॥

कला लमनं २॥ ॐ क्लीं तं नमः ४ य
 वायव क्रिमलुलाय दशकला लम
 नं २॥ ॐ क्लीं तं नमः ४ यवाय सूर्य
 मलुलाय दशकला लमनं ४॥
 अतश्च गुह्यं हृदि ॥ ॐ क्लीं तं न
 मः ४ यवाय यत्र मं द्या लमनं वासु
 धवाय २॥ **मूर्ध्नि** ॥ ॐ क्लीं तं नमः
 ४ यवाय सिकलला लमनं २॥ **ना**
 सा ॥ ॐ क्लीं तं नमः ४ यवाय वि
 ध्या लमनं यद्युमाय २॥ **क** ॥ ॐ
 क्लीं तं नमः ४ यवाय निवृत्ता लम
 नं मूर्तिवृत्ताय २॥ **उद्य** ॥ ॐ क्लीं
 तं नमः ४ यवाय सदात्मनं ना
 वायवाय २॥ **पाद** ॥ ॐ क्लीं
 तं नमः ४ यवाय काया लमनं नृ
 सिंहाय २॥ **आ** ॥ ॐ
 क्लीं तं नमः ४ यवाय सविधि ४॥ ॥

तता जीवन्मासः ॥ मर्वाद्गर्भं धू
 र्णं विहाय ॥ यथा देवस्य मूर्ति
 ध्याने कला ॥ **प्रा** ॥ ॐ क्लीं तं नमः
 ४॥ ॥ ॐ क्लीं तं नमः ४ यवाय तंजुक्त
 त्वा लमनं २॥ ॐ क्लीं तं नमः ४ यवा
 य सोम मलुला लमनं ४॥

तः उँ अँ कँ कौ सर्वद्विधा लि
बाधना नयन एषा गद्या लया
दातिः हा ग ल स स य ४ सु वि
नं सु र्व निष्ठ नु स्वा हा ॥ द दि स्य
स्वा द ग धा ज य ७ ॥ १० ॥ ॥

अथ जीव न्यास का व य ७ ॥ सु म
म ल व ला यी ॥ वा म्म ले स कि
वा व नं य ० नी र्य ॥ वा द्या दि द्या
र्य क्त्वा ॥ ॥ उँ जी व प्र ति ष्ठा
म नु स्य व द्म वि ष्म म हं य व मृ
वि ४ गाय त्री कृ त्वा जी व प्र ति
ष्ठा द व ता द द य वा र्जं स्वा हा ग
कि ४ जी वा क र्ष ण वि नि था ग ४
॥ ॥ या ल ग कि ष्ठा नि ॥ उँ व
का म्मा धि स्तु था गा न्न स द वृ ण स
वा जा धि वृ ण क ना ॥ ४ यी र्ण
का द लु मि कृ द्म व गु ण म थ नं वा
कृ णं य श्र वा र्ण ॥ वि त्रा णा स क्क
या र्ण जि न य न ल सि ना यी न व
का नू हा द्या द यी वा ला र्क व
हृ र्क व यु ण र्क व ना या णा ग कि
४ य वा न ४ ॥ ॥ य व क वा यू ना
द द ७ ॥ उँ कौ कौ ल मी वा सु द वा
य या र्ण मा ग यु २ स्वा हा ॥ ॥
या ल स्या ष्ट वि धा मू लो य ति मा

या नि य ग य ७ ॥ मू र्त्ति न य या ४
क र्त्तु या ४ ॥ ना नि को र्था ॥ व क्ता ग
ल ना र्हा ॥ या णा धा व ॥ स्ना न स्ना
न वि धा ज य ७ ॥ ॥ य था द व
स्वा द्या वा द्या व व वृ लि का रु व
७ वृ लि क व ग था वे व क ल ग ४ ध
उ स र्व ग ४ ॥ ॥ द व स्य मू ल म
कु ण ग र्ण वा स रु र्वा वा णा ध य ७

आ कृ ति क र्थे व ॥ उँ पू वा कृ न स्य
वि रु था वि ल र्पि नु दा दा य य धि
वा जी व दान् ॥ या मी व र्यं य न्द म
सि स्त धा रि स्ता मू दा वा सा अ नू दि
धं य ज न्क यो क्ता नी वा सा द य दि
य ना व धा सि स्ता हा ॥ ॥ उँ वा
न स्ता य ॥ ॥ स्व जी वा क र्ष ने
पू व क वा यू ना ॥ म नु ॥ उँ कौ म म
जी वा र्ण न र्क ट ॥ जी व लि था न ॥
उँ या र्ण द हि त था जी व मा यू र्द
हि स र्त ध न ॥ वि द्या क्ता न मू र्व
द हि द हि म ल यू र्सा य र्ण ॥ ॥
॥ नि स्ति न स्ता य न जी व न्या स ४ ॥

अथ वि ष्म क मा पू ज नं ॥ क व मी
मा ल का स्तु ति का म न या व क स्त
न ॥ क व नं क्ता रु लि य श्र मृ ता
दि स्ता नं व न्द ना दि र्म य श्र ॥ ॥
क मी या ला हा ग था य को व य

आरुति विद्य १०८ ॥ इति वा
 रुत विष्णु आरुति विष्णु
 न । पृथुर्विष्णु सख दत्तम (ग्नः
 यूगीषवोरु नः स्वाहा ॥ ॥
 आवाभानशुवानकायस्य द
 वरुनलाहातन कनमीनश

रुद्रि न यजमान न लाहाग
 न धनस न दवर्त धिम्भित
 समस्त लव लासु ॥ दवर्त विव
 लाय ॥ वायु ॥ उज्ज्वला
 रुद्रकल्प ॥ उज्ज्वलादि ॥ उयति
 क्लिप्ता सिद्धवर्ग, सुप्रतिष्ठारु
 वल्यं । सान्निध्यं प्रतियद्य
 न यजमाना हि वृद्धय । र्ण
 नाम्मुद्विद्यदा निर्यं गन प्रामु
 वदुष्यदः । गनाम्मुसर्वला
 कानां गनावाक्यस्य । धवव ।
 यजमान सरुह्यानां सयूय
 पुवाध्ववान् । वक्तुं सर्वदा
 दवदगं चैव न भामुत ॥ याव
 रुद्राय न सृष्ट्या धि उष्वनव
 रुद्रिनी ॥ गावद्युग सरुमा लिवि
 धुलाक महीयन् ॥ वाङ्मना
 किञ्च यावाजासु खिनः सयुजा
 रुथा ॥ सद्यः क्लियाय धमभिः सु
 रिक्ता वाग्य भवव । रुमल क
 पदानेन यूर्ध्वं काटिगुलं धजा
 ॥ यावच्चन्द्रः सूर्यः प्रभदिनी
 सफसागवाः । यावदाकाशं
 गावगाव ७ लं वक्ति वारुव ॥ ॥
 उं क्लि वारुव विष्णु म्ना गु रुव

वाङ्मयं न। यथुर्वसुदह
 मन्मथं यथोषवाहनं॥ॐ याव
 ताद्यावापृथिवीयावन्नसकसि
 धवावितस्त्रिंशत्। तावत्तुमिन्दु
 नग्रहं मूर्जगिन्नाम्यकर्तमयि
 गृह्णाम्यकर्त॥ॐ मयित्यन्त्रियं
 वृहन्मयिदक्षामयिदक्षुः॥ यम
 निष्प्रविवाजतिष्ठति॥ यावत्तुमिमा
 क्षणान्तजसासु॥ यावत्तुमिमा
 लिङ्गवद्वायावत्तुमममानवः॥
 तावद्युगसहस्रालिकलाविष्णु
 पूर्ववत्॥ यजमानस्य यथा
 गाम्नाकुरुलयाकांथं प्रीतुम्
 कर्मलिङ्गिन्नाम्यकर्त॥ तावत्तु
 ॥ॐ त्रिदशविंशत्यर्चनं॥ ॥

स्त्रियदादिनामयक॥ अग्निना
 हलकासगुणाणीति॥ ॥
 यथैश्वर्यक॥ रुलाटक॥ॐ
 या॥ रुलिनी॥ यथ्याटक॥ॐ पू
 नत्वादि॥ लाजाटक॥ॐ मनादू
 मि॥ यथाटक॥ॐ स्त्रिकातामि
 ली॥ अङ्गताटक॥ॐ दीर्घायुत्वा
 ॥ॐ॥ यतिष्ठाकलगा॥ त्रिधक
 मूलमकुल॥ अजावत्तुय॥ ॥
 ॐ अस्माकमिन्दु॥ अन्तिविंशत्॥

तन्मायवाङ्मयं नकावय॥ॐ न
 भारुगवत्तुमासुदवाय॥ अत्र
 मर्त॥ सुयार्थः॥ ॥ नमिमुद
 या॥ वाभ॥ॐ नैगल्लगाय॥ ॥
 दक्ष॥ॐ गुं गुवद॥ म॥ॐ
 विष्णुवत्॥ यासन्॥ॐ आध्वन
 लकि कर्मलासनाय॥ ॥
 अङ्गुष्ठभुजिकया रुगायणा
 वली॥ॐ दूँ रुगवत्तुमासुदवर्ग
 नायदूँ दूँ रुट्खाहा॥ त्रयककू
 मूकयूनकं नैपाणाया मकृत्वा
 ॥ ॥ नाम॥ॐ क॥ नमः दीक
 यरायाकाय॥ क॥ वाधनी॥
 ॐ दौं नमः अङ्गुष्ठार्था॥ॐ दौं
 नमः तर्जनीर्था॥ॐ दूँ नमः म
 ध्यमार्था॥ॐ दौं नमः अना
 मिकार्था॥ॐ दौं नमः कनि
 ष्ठार्था॥ॐ द॥ नमः दीकय
 रायाकाय॥ ॥ वङ्गन्यास
 ॥ॐ दूँ वेकूठाय पूर्ववक्त्राय
 ॥ॐ दौं नृसिंहाय दक्षिणवक्त्राय
 ॥ॐ दूँ कचिलाय पश्चिमव
 क्त्राय॥ॐ दौं ववाहाय उत्तरव
 क्त्राय॥ॐ दौं दं दं दं दं दं दं
 याय॥ म॥ॐ ॥ तन्मा

नामः॥ॐ कौनमः॥ दद्याय २
॥ॐ कौनमः॥ निवसेहाहा॥ॐ
ह्यादिषु उक्तु नामः॥ ॥
अननवाद्यपाययुजा॥ ॥
तपुहि॥ॐ वृथिवीकुरु॥ॐ
कुरु॥२॥ॐ कुरुतजसः॥ॐ
कुरुवैवायवः॥ॐ कुरुकाश
यः॥ ॥यत्ननादिधनमूढा
॥अर्यपायादकनात्मानं सिद्धि
तिलकं पूष्यश्च विधाय॥ॐ कौ
सः॥नमानावायपायमात्मन
कौत्साहा॥ ॥गतादवद्वा
नयुजने॥ॐ कुरुयालाय
२॥ॐ कौजयाय२॥ॐ वीविज
याय२॥म॥ॐ वीकुर्याय२
॥ॐ पूर्वद्वाराय२॥ॐ तार्कता
वलाय२॥ ॥ॐ दक्षिणद्वारा
य२॥ॐ अयसतावलाय२॥
ॐ वीवलाय२॥ॐ वीवलाय
य२॥म॥ॐ वीवलाय२॥
॥ॐ यत्रिमद्वाराय२॥ॐ वीया
तावलाय२॥ॐ धौधाय२॥
ॐ वीविधाय२॥म॥ॐ क
चिलाय२॥ ॥ॐ उरुवद्वा
नाय२॥ॐ रुमतानलाय२॥
ॐ वीविधाय२॥ॐ कौ

कुरुयालाय२॥म॥ॐ नृसि
हाय२॥ ॥ॐ लिथ२॥ॐ गो
गमाय२॥ॐ यौयमनाय२
॥ॐ गौरीयाय२॥ॐ यौयमा
य२॥ॐ गौगलपतय२॥ ॥
यन्यकिपूजने॥ॐ गुं गुन
वं२॥ॐ यंयनमगुनूया२॥
ॐ यौयनमगुनूया२॥ॐ
त्वयाचिरया२॥ॐ अदिसि
द्धिया२॥ॐ सैसत्याय२॥ॐ व
वासदवाय२॥ॐ सैसैकषणा
य२॥ॐ यौययुमाय२॥ॐ अ
नृनिनुद्याय२॥ ॥वक्रयुजा
॥ॐ कुरुवक्रयाय पूर्ववक्राय
२॥ॐ कौ नृसिहाय दक्षिण
वक्राय२॥ॐ कुरुचिलाय य
त्रिमवक्राय२॥ॐ यौविनाहा
य उरुवक्राय२॥ॐ कुरुं यं
गौवैलनयाय२॥ ॥अवा
रुनादि॥ अवाहयामि॥वलि
दत्ता॥ॐ विष्वक्नाय॥ॐ दम
यापूष्यधूपदीययुजाय॥
यनीगवलिगृह्ण२॥सर्वविधि
निवातलाय२॥यम्नं वक्र२॥
नमः॥हाहा॥ ॥ॐ अवावा
दि॥ॐ गवृठासनाय२॥

[illegible][illegible]

कादिया (ग) २॥ ॐ भवादि
 द्वादशांगि २॥ ॐ स्वादि
 सा (ग) पा न पू ॥ ॥ ज्य
 द २॥ ॐ ज श्रवा ला रु क ल्य
 ॥ ॐ ज श्रवादि ॥ ॐ ज्ञा ना ना
 य ला य ॐ द म द्य मृ हा ल स्वा
 रु ॥ ॐ दं रु ल प ष्य गा म्रु ल
 धू प दी य नै व द्या दि सर्व ये वि
 पू र्ण म म् ॥ ॥ जा य म गु ल
 सा ॥ ॐ न मा रु ग व न वा स द
 वा य ॥ ॐ जि त नै य गु ला का रु
 न म रु वि श्व रा व न । स व द्य
 न म रु म रु । पू न ष्य पू व ज
 ॥ ग ष्ठा वा मा रु हा गा व स ति
 व न वि नै सर्व ला क सु खार्थ
 कि यार्थ वि ष्णु मूर्ति ऊ ल थ ल
 द रु नै य ॥ चि त् सर्व जी व । का
 या नै रु गु रु ता द ग कु ल ज
 न नै दृ ष्ट द ह्या न कानै व न्द
 दृ ष्ठा व ता नै दृ वि त रु ग क र
 पू जि त् सर्व ला क ॥ ल क्मी सि
 न्द्र न पू व रु वि द्य द य ल गा स
 र्व सै य । लि दा गा । का नू ष्ठा दृ ष्टि
 या त उ ग ति रु वि नृ ला सर्व द्या
 वि द्या द्या र्ग । नै ला य मा न रु

ता कमल वन वन वा गुथं वा
 जगत् । तां दिवा नीमिनिह्ये
 ति दिन गिरसा साधनं विष्णु
 कान्ता ॥ तां कूर्चं वा गुतां वि
 दलति कुजगाः सर्वका काल
 व्यातं घट्टकं याहि व्यातं चल
 ति वसुमतिं कंचितं गोलनाजं
 । ताज्जर्नं स्वर्गुषं तादिव द्वा
 लितां गवूर्मां तां सदा हं वन्द्यी
 वेलां तां विदुग कूलधर्तिना
 गर्सं तां सकालं ॥ यथा गच्छति
 न ॥ जगत् गच्छति ॥ मणुल विस
 र्जनी ॥ उं ऊं सः न मादुं रुद ॥ ॥
 ॐ ति विष्णु द्वा र्चन विधिः ॥

द्वारत्रयमलङ्कारादिक्रिया ॥ ॐ
 ॐ द्रविष्णु ॥ ॐ श्रीगुरु ॥ ॐ सप्त
 ॐ सि ॥ समिधं कृत्वा यूपं ॥ ॐ
 मना दूतिपति ॥ ॐ नमः ॥

धर्मयतिष्ठा इव सासमिधदाय
माल ॥ यद्ययतिष्ठा इव सासमिध
विष्णवे मूमाव ॥

ध्वजं दत्तं वस्त्रं च न धूतं काय ॥ द
 वस्य मूलमन्त्रं च सखिगाहं निवि
 यन् नैकं न जिह्वा त्रया श्च मान ॥
 राजा दत्तं च यजमाना युधिष्ठा

यातिदद्यादिति लाङ्गतिर्युगाङ्ग
तिनासरुखसुवेदन ॥ ॐ
श्रीः ॥ नि ॥ गानिकाङ्गति ॥ ॐ
शुभं ॥ पुष्टिकाङ्गति ॥ ॥
दणवलिदोतयानिवावाथलि
॥ ॥ वाङ्गनादिपूजावन्दना
दिपूषदायज्जुआदनादिज्जु
नसंकल्प ॥ ॥ धननलिक
लकादुपातनयाउवस्यहि
गाहासदेहास्ययजमानन
दानकनेमुह्यदावाएल
सवकावलरवधानथस्यमणु
येहायकवाङ्गलविय ॥ ॥
यवधानादिवारिहाम ॥ ॥
वलिपदान ॥ ॐ गुलानीला ॥
ॐ जूभज्जुभिक ॥ ॐ ज्ञानानियू
॥ ॐ धृतिधृति ॥ ॐ उराधिवता ॥
ॐ जूभेमानयो ॥ ॐ विष्टगय
॥ ॐ नभावजुगाय ॥ ॐ जूभस्य
ता ॥ ॐ वायोदिगसाहा ॥ ॐ ति
वलिपूजन ॥ ॥ धृतिदीपवृ
लिकाहाम ॥ ॐ मुचवाचयय
असर्वय ॥ ॐ ॥ महावाङ्गति
मकुलधृताङ्गतिश्रुया ॥ ॐ
शरुनगती ॥ ॥ पायप्रिह
हाम उपयमनकुलत्याग ॥
॥ वरुः ॥ पाहि ॥ योलाङ्गति ॥

वरुः स्वस्तीत्यादि ॥ ॥ यव
धानादिदीपवृलिकवल्यानि
धाय ॥ ॥ दणवलिदोतयानि ॥
दवधानादिददिकादान ॥
वावर्तगृष्टकलगाएनिध
य ॥ ॥ वरुः ॥ पुष्टिकाङ्गति
दिगा ॥ ॥ दिनपूजाकावय ॥
यजमानस्यामूककर्मदशास
ह्याङ्गतिर्यज्जुनिमित्तार्थदि
नपूजाङ्गतिर्यज्जुनिमित्त ॥ ॐ
पूजाद्विष्टगय ॥ ॥ ॐ
ज्ञायायस्वस्वमसर्वय ॥ ॐ ॥
ॐ उदयतिम ॥ ॐ सर्वविष्टका
॥ ॥ धनकठिदकयदयमन
निर्धृतिर्यज्जुगुष्टगय दिन
पूजासमनव ॥ यवसकनगव
ॐ हिमसाहाय ॥ ॐ ॥
ज्ञावमनवन्दनवकयमुता
वूलनेवद्यादिपूवर्तुदकिगा
ज्जुलोदद ॥ ॥ ज्ञासीसा ॥
ॐ मन्त्रार्थः ॥ सक्तुः ॥ ह्यादि ॥ जा
यमपुलकाय ॥ यजमाननक
नाङ्गतिवदु ॥ ॐ मुष्टदाय
सर्वय ॥ ॐ ॥ मालकाङ्गति
स्वस्तीगादिककलानमस्काव

॥ ॥ दवाणां वादं ॥ ॐ ॐ द
विष्णु ॥ ॐ ॐ जिष्णु ॐ ति कलगा
णां वादं ॥ ॐ ॐ निमृषि ॐ
ॐ ॐ वादं ॥ ॥ ॐ ॐ स्तिन
ॐ ॐ ति ॐ ॐ पायादकनाया
ॐ ॐ ति ॐ ॐ ॥ वन्दनं ॥ ॐ ॐ द
ॐ ॐ ॥ मणुलरूपयुष्यरूप
॥ ॐ ॐ यस्याकुम्भा ॥ मणुलविस्तृ
नं ॥ ॥ ॐ ॐ नूपा ॐ ॐ ति ॥ वन्द
कवर्णं ॥ कुला ॐ ॐ कुलायकालि
तरुमनतिलकं कावय ॥ ॐ ॐ
ॐ ॐ ॥ न्यासयाय ॥ सुय
ॐ ॐ ॥ ॥ वाचनजलनय
जमानाद्यस्ति ॥ वन्दनसिद्ध
वाद्याणां वादं कृत्वा ॥ ॥

यूनवविन्यासकृत्वा ॥ यस्तु
कुरुय ॥ यथादवस्यमूलम
कुलजाकृति १०८ ॥ यूनव ॥
॥ ॥ मतिथानां वाद्यादि
यः १ युष्याकृतसमर्थं यज
मानन ॥ ॥ वाक्कली १ स्ति
वावनसंयुक्तं यथित ॥ गत्य
व्याकृतं ॐ ॐ समर्थं य ॥
॥ यून १ सतिथानं वीहियाजस
वादिग्रीरुतनकवस्तुदिसाय
॥ ॐ ॐ तिदिनयुक्तविधि ॥ ॥
वनीयस्तुतिस्केलसंयालन

यावकवक्त्याय ॥ हागायाश्च
मतं निवाजिया कर्मधूनकाव
ॐ ॐ तिदिनसहस्राकृति यस्तु
युर्वदिनस्य विधानं ॥ ॥

तता वाजिकर्म ॥ वृहद्भानव
जुर्वन्तमः १ युष्या ॥ युष्याहा
जनादि ॥ न्यासाद्ययाजयुजा
सयुजा ॥ श्री १ ॐ ॐ गमाकवि
धानं नदद्युर्वन्तादिजाकृति १
॥ कर्मावाथानवलिदद्या १
यथानुकर्मणमालकाया ॐ
कं ॥ वलितयकवक्त्याय ॥ ॥
वाख्यानं वलितवन्तुत्यगी
तरसादिकं ॥ रवीमृदमर्मय
कं वलीजागवर्णं वनं ॥ यदि
निदावर्णयातल्वप्रदृष्टतदाव
ता ॥ गुरागुरानुवृथणानि
कं कुरुतं गुरु ॥ अनेनैव विधा
नेन मन्त्रजायादिकं वनं ॥ ॥
ॐ ॐ तिवाजिकर्मणः विधि ॥ ॥

तता यवर्हनिपातज्ञानादि
नित्यकर्मकृत्वा ॥ नैमृद्यद्वाना
ॐ ॐ यजमाननसुयार्थं ॥ वाक्
॥ यजमानस्यामूकदवमूर्ति
यनिष्ठादणसहस्राकृति यस्या
वस्तु यस्तुनिमित्तं य ॥ ॥

ब्राह्मणादिपादयुक्ताः ॥ ॥
 पूर्वदिनवत् वलिद्वयद्वयः ॥
 यस्मिन्पुण्यविष्णुः ॥ पूषा
 जनयजमानः ॥ वाक्मनः ॥
 उंमृदादि ॥ पुनर्मन्त्रान्या
 साद्यपायपूजात्मपूजनं च ॥
 ततः पूर्वदिवसकृतविधानं
 नसाः ॥ साः पुनदि विदिद्वा
 वादिकलगात्रं नकुमलागिव
 णकिकलगायर्चनं मालकाधू
 नकधूपजापकारं निर्वृत्त्य ॥

सिंहासनमात्राहर्णिकत्वा ॥ पु
 न्मन्त्रान्यासं ॥ मृदयापु
 जात्मपूजनं च ॥ ॥ धनयस्
 स्वादह ॥ उं पृष्ठादि विष्टुष्टा मू
 निः पृथिव्यां पृष्ठा विष्ठाडाव
 धीवादि वगः ॥ वैष्णवसहस्र
 पृष्ठा मूनिः सनादिवासनिष्ठ
 यापुनर्कः ॥ मूनिस्मरुर्हर्नः ॥ मू
 निप्रियं कः ॥ ॥ वदोपूजनं ॥
 उंमृदायस्मदमामर्नः ॥ उं
 मूनिमीठः ॥ ॥ वंमृद्विदाय ॥
 उंमृद्विदा ॥ ॥ मामवदाय ॥ उं
 मूनिमीठः ॥ ॥ मृद्विदाय ॥
 उंमृद्विदाय ॥ ॥ मृद्विदाय ॥
 उंमृद्विदाय ॥ ॥ मृद्विदाय ॥
 यस्मिन्पुण्यविष्णुः ॥ पूषा

यस्यादि ५॥ ॥ कुलसुद
 दिकुलोकयालावर्तः ॥ उंमृदा
 यवकाहस्तस्यादि १०॥ ॥
 वक्तापूजनं ॥ उंमृद्विदाय ॥ ॥
 यजापतय ॥ ॥ उंमृद्विदाय ॥
 सा ॥ ॥ उंमृद्विदाय ॥
 पुनीतपूजनं ॥ उंमृद्विदाय ॥
 उंमृद्विदाय ॥ ॥ उंमृद्विदाय ॥
 उंमृद्विदाय ॥ ॥ मूनिपूजनं
 ॥ उंमृद्विदाय ॥ ॥ मूनिपूजनं
 तवर्णयस्मदहस्त्यायस्मदवा
 रुनायस्मदहस्त्यायस्मदवा
 तेजाधिपतय ॥ ॥ उंमृद्विदाय ॥
 लयावाय ॥ ॥ उंमृद्विदाय ॥
 इवस्य ॥ मृद्विदायस्मदमाद
 य ॥ उंमृद्विदाय ॥ ॥ वाठ
 मृद्विदाय ॥ ॥ उंमृद्विदाय ॥
 रुया ॥ ॥ उंमृद्विदाय ॥
 यजमानं नवीहियाय ॥ यवति
 लाकदिपूवर्णः ॥ मूनिमात्र
 रं ॥ ॥ वक्तापूजापतयं दलाक
 याल ॥ ॥ उंमृद्विदाय ॥ वादि
 लिवणकिपयर्चनं मालकासं
 पूर्वदिनवत् वलिद्वयद्वयः ॥
 तसाहि स्थनसमिधसहिगधु
 वंनस्य ॥ ॥ ॥ निलाकृति

यूक्तुं ॥ ॥ यथा ध्यायनशून्य
सा धनमदनं नमता लन जि
दो वखाय यार्गं आरुति नि वि
य दवस्य मूलमन्त्रेन ॥ ॥

ततः प्रत्यानयन्तु यथा नमान
रु ॥ विधिः (थं) सुखादि ॥
धनमदनका ॥ इत्युक्तुं यथा (थं)
दवकलगादि कृत्वा का कं यजु
मस्तानकायक ॥ भूयदीयने
वर्ष ॥ ॐ दं रुतयुष्यतामूल
ॐ स्वादि संकल्य सिद्धि वस्तु ॥

दवपितृदेवताधनं आरु
ति कुमला ॥ दवयादात मूल
नारुति ॥ दृतेन यूक्तुं समि
धसह दवनेन सु ॥ ७ ॥ प्रति
ष्ठार्क ॥ ॥ धनं अर्थप्रदानं ॥
कृत्वा नरकविद्य ॥ जायमपु
लका ॥ ॥ मणुलविस्तुर्क
नमया र्थ ॥ विष्णवदुद्देश
समिधहोमयाय पूर्व ० कुमला
॥ ॥ धर्मनिधयनिधय सुख
कानन्दावह थूकृत्वा (थं)
पितृदेवताधनयाय आरु
तियतिष्ठार्कं लाजा मूदिना ॥

धनलंकारावतका इति ॥ वा

॥ ॐ वरुणेश्वर दुर्गा कृत्वा न
ननकस्य महादय ॥ रुकिता
वादिपूजा श्रुदवासावादिता
वतः ॥ वरीसि यूक्तुं ताया गीता
लकं गृह्यतां पिता ॥ यवस्य व
यवाधीनं जन्म जन्मा नवेषू
व ॥ धर्मकामार्थमाकायदात
यार्गवरावतः ॥ सुवर्णवृष्यासु
यादि कृत्वा नागावलीगव ॥ ॥
गन्धवन्दनेन यलियानमस्का
नैकला समर्थनी ॥ ॥ वनाः
ध्यायनशून्यसाधनं यायमान ॥

दवपितृदेवताधनं आरु
ति कुमला ॥ दवयादात मूल
नारुति ॥ दृतेन यूक्तुं समि
धसह दवनेन सु ॥ ७ ॥ प्रति
ष्ठार्क ॥ ॥ धनं अर्थप्रदानं ॥

ततः प्रत्यानयन्तु यथा नमान
रु ॥ विधिः (थं) सुखादि ॥
धनमदनका ॥ इत्युक्तुं यथा (थं)
दवकलगादि कृत्वा का कं यजु
मस्तानकायक ॥ भूयदीयने
वर्ष ॥ ॐ दं रुतयुष्यतामूल
ॐ स्वादि संकल्य सिद्धि वस्तु ॥

अधूयदीय ॥ अरुगमादि ॥

वादिहामं ॥ यवधानकथाम्
शुक्रवार्यमायमवयव। कूतुर्ल
कालमाययसिद्धार्थवायुवी
हयः ॥ लाजासमिधयायसगु
तादनदध्यादनजाम्बीवकिं
यवदलीरुलडाबधिगुगुआ
दिलिरुलाजिकद्वादिरुलेया
कानरुषजलूपकभनयदाक
गनसूमुखध्वनिलनकगिल
गनयूष्ययय्यगुगुगुलवन्दन
कुकुमल्लभमूलरुलनामूल
उत्पलल्लभयकाननवगुगुगुम
गुटिकाकृष्णगुगुगुगुगुगुगु
नयूष्यदग्धमिलितानुहामयः

ग्राहलं वन्दनादिनायूक्ष ॥
जययमन ॥ उं हृदुवः ॥ ह्रं
ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ॥ १० ॥ आलदाय
धवलययक ॥ ॥ ह्रं ह्रं
ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं
कावकायाव ॥ अरुघायाद
कनपाक ॥ वगुगुगुगुगुगुगु
नादिनायूक्ष ॥ जयं ॥ निर्वा
लमकुलं ॥ १० ॥ अगुगुगुगुगु
ह्रं ह्रं ॥ ॥ मूष्यमानन
यववीदिश्र ॥ यववीनगिथा

लाजातिलसर्पचमवववना
नियश्रवीहीनिहृनकातिक
घोषिक ॥ ॥ ततावलियदा
न ॥ उं गणनां ॥ उं अरु अ
निक ॥ उं अरुगुगुगुगुगुगु
नियुहिः ॥ उं उरुयिवन ॥ उं
अरुगुगुगुगुगुगुगुगुगुगुगु
नतिदीर्घश्रतिहृल्लवातिरु
लश्रतिहृल्लवातिगुगुगुगुगु
ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं
। अरुगुगुगुगुगुगुगुगुगुगु
ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं
वाअरुगुगुगुगुगुगुगुगुगुगु
ययाः ॥ उं विगुगुगुगुगुगु
भावगुगुगुगुगुगुगुगुगुगु
उं वायुदिगुगुगुगुगुगुगुगु

ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं
वताह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं
यत ॥ ॥ वाअरुगुगुगुगुगु
कल्यः ॥ ॥ ततामरुगुगुगु
ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं
॥ अरुगुगुगुगुगुगुगुगुगुगु
उं अरुगुगुगुगुगुगुगुगुगुगु
यययसामः ॥ वाअरुगुगुगु
॥ वाअरुगुगुगुगुगुगुगुगुगु
यामयिवालायाली ॥ १॥ यम
विदं वगुगुगुगुगुगुगुगुगुगु

सावातिगूर्लुवृरुस्यतिभगिदध
 उ।गन्नारुववुवुवुवुस्यस्यति
 ॥२॥ गायत्री ॥ ३ ॥ ॐ कयान
 श्रिय ॥ ४ ॥ ॐ कल्लासुस्थामदा
 ॥ ५ ॥ ॐ असीषु ॥ ६ ॥ मखीना
 मविगात्रिगुणांशगिरिवास्यु
 तिरिः ॥ ७ ॥ कयात्वन्नडया
 हियमन्दसद्युष्य। कयास्तु
 स्याज्जुलव ॥ ८ ॥ ॐ न्द्राविन्द
 स्यावाजति। गन्नामुद्वियद
 वयुष्यद ॥ ९ ॥ गन्नामिग
 ववृण ॥ गन्नारुवत्वयमा। ग
 न्न ॐ न्द्रावृरुस्यति ॥ गन्नाविष्णु
 नूनकम ॥ १० ॥ गन्नावात
 वगा। गन्नासुयगुस्यु ॥ गन्ना
 ॥ कनिष्ठदधव ॥ यद्यन्नाज्जु
 वधु ॥ ११ ॥ ॐ न्द्रा निगिरुव
 नून ॥ गन्नावातीप्रतिधीयतां
 । गन्ना ॐ न्द्रा निरुवतामवारि
 ॥ गन्ना ॐ न्द्रा ववृणावातरुद्य
 । गन्ना ॐ न्द्रा यूसुगावाजसागो
 गमिन्नासामासविगायर्सजा
 ॥ १२ ॥ गन्नादवीवरि ॥ १३ ॥
 स्यानाद्युधिवी ॥ १४ ॥ ॐ न्द्रा
 हिश्राम ॥ १५ ॥ याव ॥ गिव ॥
 १६ ॥ तस्माज्जुव ॥ १७ ॥ ॐ
 ॥ गान्ति ॥ १८ ॥ ॐ न्द्रा ॥ रुमा

[illegible][illegible]

द्वान्दवस्य रुता अत्र या सि
सीष्टा ४। यजिष्ठा वक्रि तम ४
माष्टवाना विष्वाक्ष वा ४ सि
पमूष्वा सस्वा रु ॥ ॐ दम नि
धामो ह्यी ॥ ॥ ॐ सत्वना अ
ग्नवमा रुभा तीना दिक्षा अ
स्या उषसा यक्षी । अत्र यक्ष
लो वनू ७ ४ वना १०। वीही मृ
गी क ४ सु रुवान ७ वि ०० ॥
ॐ दम नि वनू १०। ह्यी ॥ ॥
ॐ अया अग्ने ह्य न रि ग कि
या अ सत्व मि त्व मया अ सि ।
अया ना यक्षी व रुसा या ना
ध हि रु वज ४ ०० ॥ ॐ द म
या अ नय ॥ ॥ ॐ य न ग र्ग
वनू १०। य स रु म य क्षि या पा
ना वि त म रु ना क ४। न हि ना अ
द्य प रि ना थ विष्णु विष्णु मू व
कु म वृ त ४ स व क्रा ये ०० ॥ ॐ द
वनू १०। या स वि ष वि षू व वि
१०। ह्य द य ह्य म वृ ह ४ स व क्रा
स्य ४ ॥ ॥ ॐ उ द रु म व नू ७
या ग म स द वा ध म वि म ध्य म
४ ग थाय । अथा व य मा दि
स्य वृ त त वा ग सा अ दि त य
स्या म ४ ०० ॥ ॐ द व नू १०। या

दि ह्या धि य न य ॥ ह्य म ४ ॥ ॐ
ति य अ व नू १० ॥ ॥ य ४
या हि ॥ ॐ या हि ना अ न य न
४ ०० ॥ ॐ या हि ना वि ष्व वे द
४ ०० ॥ ॐ य र्क्ष या हि वि रु व
सा ०० ॥ ॐ स र्व या हि ना क
ती ०० ॥ ॐ नू न स्य ४ ०० ॥ ॐ नू
ना ति वि क र्क्ष रु मि ०० ॥ ॐ अ
ति वि क र्क्ष रु मि ०० ॥ ॐ अ न
रु ग य द रु ग र्ग त स र्व वि य न
म म । स र्व त द न्नी क ल्प ति वि
क्षी न ति य द हि न ४ ०० ॥ ॥
वे ष्वान वा य वि ष्व रु अ न ना वि
ता य धी म हि । त ना व क्रि य या
द य १० ॥ या य गी ॥ ॥ ॐ द व कृ
त स्ये न सा व य ज न म सि ०० ॥
ॐ म नू ष्य कृ त स्ये न सा व य ज न
म सि ०० ॥ ॐ वि कृ कृ त स्ये न सा
व य ज न म सि ०० ॥ ॐ अ त्म कृ
त स्ये न सा व य ज न म सि ०० ॥
ॐ नू न सा व न सा व य ज न म सि
०० ॥ ॐ य द्वा रु म ना वि द्वां श्य का
न य द्वा रु वि द्वां श्य स र्व स्ये न सा
व य ज न म सि ०० ॥ ॐ रु व न य
य पृ थि वी व म रु त ०० ॥ ॐ रु
वा वा य व यान वि का य म रु त

याद्यरुसाद्यवन्दनयज्ञाय
यातयूष्यधूपदीप ॥ निष्ठाव
॥ अमृगगन्धदि ॥ ॥ कृष्णाक
तजलंगुहीला ॥ वायु ॥ ॐ ग
वामनेष्टुतिष्ठ किशुव ॥ यथा
भाक्काकुरुलपाकधर्मगादा
नदातय ॥ वायुलोनादातय
मिति ॥ ॥ कृष्णतिलजलसहि
तकागलङ्गीधृखा ॥ सिकल्य ॥
ॐ अश्ववालाहकल्य ॥ ॐ अश्व
दि ॥ अमृकगाथा ॥ अमृकनामा
यमलाकादर्शनायूवात्राग्य
वलसंयलिपूर्वकयावदत
गात्रामकूपसमसंख्यावर्ष
काटिराह्यावकिन्नविष्णुलाक
निवासकामः ॐ मां गान्देव
देवतां यथासंख्यवर्ष ॥ अरुव
पायुतां अमृकगाथायामृक
नामैवाङ्गलाङ्गुल्यमहंसपद
य ॥ वायुलोनासस्त्रीनियति
वचन ॥ ॐ कादाकस्मा ॥ यूवा
लिमिविय ॥ एतत्कीत्रयूले
कांथपागदागसहितवाहि
भार्गुल्यमहंसपद ॥ स्वर्गद
किता ॥ एतत्कादानकृताय
तिष्ठार्थमिदं स्त्रियमग्निदे

वर्गदकिताङ्गुल्यमहंसपद
य ॥ यथागङ्गावर्नयनिष्
लुममु ॥ वायुलोनामावर्दि
॥ ॐ ॥ तिगादानविधिः ॥ ॥

वसुदान ॥ दानं गुथा ॥ द्विर्न
दद्याद्विर्नययमिगङ्गा ॥ उ
होतो गङ्गा ॥ स्वर्गनवर्क
विद्यर्थ ॥ गतः पूजन ॥ ॐ
वसायवृहस्यमिदेवगाय
दमासर्ग ॥ सिध्दार्नवन्दना
दिधूपदीप ॥ अमृगगन्ध ॥ ॥
गतः सिकल्य ॥ ॐ अश्वदि ॥ अ
मृकगाथा ॥ अमृकनामायावद
कृतकुसखावर्षसहस्रावकि
न्ननिवलाकनिवासपूर्वकसो
राग्यातिगयसुन्दरलयाकि
कामएतद्वर्षवाङ्गलायदागु
मरुमूल ॥ दकिता ॥ ॥

निष्ठावादिअनुदान ॥ ॐ अ
नाययजायमिदेवगायनम
॥ एवंपूज्य ॥ सिकल्य ॥ ॐ अ
श्वामृकगाथा ॥ अमृकनामास
मरुदानजुन्यसमरुलपाकि
लयावदनेकेकयविसखा
गावकालवर्षसहस्रययोन

सूखावर्चिनविष्णुलाकनिवा
सकाभायथासंरुर्वेसायकन
लमनमनममूक(गणेशावा
द्वल्लाखादाहुमहमूस्तुअ ॥

दवकलशरुणिल्यादिवास्त
लपुरुगिसर्वशादकिलादा
नं ॥ अंगगादियविष्णुमनु
॥ ॥ वाचनं गुरु ॥ उं स्वाति
रुवकादुर्गास्वति ॥ वाचनज
लंकलगा(प्रनिधाय ॥ ॥
संघवद्युतपाशनं ॥ उचस्यर्
नं ॥ ॥ उं समिप्रियान् अघ
उचधयः सनु ॥ आत्मनं य
लागाहिषकं यविष्णु ॥ ॥
उं दुर्मिप्रियासुसमनुथाः
सां हि प्रियं ववयं द्विष्मा ॥ रु
मां जलवर्जय ॥ ॥ उं मूपा
अद्यानव ॥ यविष्णुभावनं

गतः संयुक्तं रुतिकावयं
॥ वद्लाण्युर्लुयागदकिर्ण
दत्ता ॥ ॥ धाकलीसं धव
कसंधिवयुर्लुयादर्थदाव
अगुयानकादुखाननं ॥ य
जमाननधवजोनकीनं ॥ न
स्ववयदंदावयुर्लुयाय ॥

वाचं ॥ यजमानस्य श्री २ अमू
कमूर्तिविष्णुलायेन दशसह
श्रुतिगिरुसंयुक्तं रुतिमू
रुमनु ॥ उं दवागागुविदागा
दुर्विलागागुमिगामनसस्य
तः मंदवयुक्तं रुहाहावा
तं धां स्वाहा ॥ उं स्वाति ॥ ॥
उं अग्रायाय स्वसमं गुणविष्णु
तः ममवृष्ठां रुवावाजस्यसं
ग(धामं तं ययो सिसमूज
नुवाजाः ॥ मं वृष्ठां न हि माति
घारुः ॥ अग्रायाय माना अमूगं
यमाना दिविष्णवा ससूरुमा
निधिय ॥ अग्रायाय स्वमदिक
ममामविष्णुविनं रुतिः ॥
रुवानः स्वयं रुमं सखा वृ
ध ॥ अगतवत्सामनाजमस्य
वमावित्सधका ॥ अग्नत्वा
कामयागिवा ॥ रुसकोमदि
वसुम विष्ठाः सुखितयः पृथ
क ॥ अग्नयं कामाययमिगं ॥
अनिप्रियं वृधमसूकाभाह
तस्य रुवाय ॥ संपाठकाविर्
जति ॥ ॥ उं ययः पृथिव्या
॥ उं दवस्यत्वा ॥ उं अग्निना
यज ॥ उं दयदादिव ॥ उं उद
यकमसः ॥ उं श्री २ न ॥ उं न

(७) उं हिमस्य त्वा ऊला यूनामा
गालय विद्यया मसि । उत्तम
दाहिना कृत्वा निदध्या गुरुष्व
उं । सीता ददाहिना निदध्या
गुरुष्व उं ॥ अन्ति का यग्निव

जनयद्दृष्ट्वादिः लिलितगम
७। मृजानपकपूरांश्च दृष्ट्वा
यममं दूयतं । विपूलवदनं
वक्त्राकाशं च वज्रानवेदः का
मयं ॥ मांश्च वक्रपूरांश्च गव
लामुक्तीतव ॥ धिंगा कः ला हित
गावकृष्णवर्णुनभाम्भुतं ॥ ब्र
विद्वज्जिह्वलम्भानासागव
स्यामयूयथा ॥ ॐ नृशृगैर्दध्ना
कुवन्तुलामहिषिर्विपु । गणवा
निधनं यानुजयत्वं वक्त्राज
सा । कपिलजटां सर्वरुक्मी
वान्निपुण्यकदेवगं । वनू
ववसाश्च निर्ममपूरांश्च वक्र
सि । सागं वर्षणं जीवयिव
धातिवमादय । इः श्वितांश्च
द्विजांश्च वपुजांश्च यणुपाल
य ॥ यावदादिह्यस्तपत्तिया
वद्वाजतिवन्द्यमाः ॥ यावद्वा
तः क्षवाजानितावजीवत्यर्थ
सह । यन्नकनप्रकाशलाका
विनानानूजीवति । यत्र धाम्
यकावार्थ्या जीवति स जीव
ति । एकसरुलं नरुक्तं नदः
एतत्वं विपूलं न । पृथिवी
त्वं कुक्ष्यमानं नत्वं कक्ष्यपालद
लुन ॥ ॥ ॐ सर्वहिर्नका

ॐ रुविद्याय नमः समादिह्य
वैसुहि ४ संमनूहि ४ समिन्धो
विष्णुयय विवकां दिव्यीनरा
गच्छुय ४ ह्यारु ॥ अकवाग
नकृणपविस्तवला कृणउयय
मनकृणान्सेवा नाश्च पुगान्
शकृया ७ ॥ ॥ अयमनेन
न्यनगभ्रवकावमुगायूलने
यश्चादिसर्वपुदकिणाश्च
लोदय ७ ॥ ॥ स्नानखर्गु
हीता वामरुक्तनिधाय ॥ ॥
आसीसायधुमपूष्यदानिक
वा ॥ ॐ मन्त्रार्थ ४ संकुक्लण
लुलितर्वेधननादिदेवता
४ सुयोगावबदारुवकु ॥ पुनू
गावाक्कला ४ ४ पुनू रुवकु
। वाजाधर्मविजयीरुवकु ।
यजा ४ सुखिन ४ संकु । ४ ४ पु
शयथाकु । अस्मदादियज
माना मानानां संगलयविवा
वाला मायुवा नाग्यमैश्वर्य
जनधनलक्ष्मीसकतिसका
नवृद्धि वमु । द्वियज्ञश्चुष्य
४ ४ पुनू रुवकु । सर्वसिला ४ सु
खिन ४ संकु यजु ४ कालव
र्षीरुवकु ॥ अमूकवारु ४ य

तायवृद्धि वमुखमसिद्धि
वमु । सर्वविधियविष्णुम
मु ॥ ॥ जायमपुलकाय ॥
करा अलि वमु ॥ ॐ नमान
य ॥ ॐ पुण्वेदाय स्यादाय
शत्रयवयद ४ सामवेदा ४ थ
रुक्तमकाथवादितीर्यगाय
थवेदनं याद्वर्गवक्रधार्य ।
गायत्रीयस्य गायत्रीयनम
यनिषक्ता गमस्येवदंष्ट्रा वि
ष्णु ४ यजु नमूक्तिस्त्वद्युतिव
दनेयस्त्वुपीववारु ४ ॥ वक्रा
पुक्ता निष्कृष्टा लिप्यथगतिय
ता गालिदया नि मागा लो
पुष्टाथयलया विष्णुयद
गता गालिवर्गपसिद्धा ॥
तावृष्णा वालवृद्धारुवतिरु
वगवो गालिकालयवाधव
दामागासूग कृजियकुजय
यदानित्यवृषालिवाक्का ॥
अथयजुषसंस्कादिलि वि
दिलि लिवा संस्किनादवना
या कृणु वावक्लिम ४ क
लणयविमतामपुलकुलि
लवा । तसर्वसिन्धुदवाजु रि
मतववदामने संताषवृ

या मुद्रामन्त्रादिहीनं यज
 नय विविधिं कीलं धायाक
 मस्तु ॥ यकं यमं श्वं वलं वस
 निधिलुटिका पादुका रुखन
 लं धागा लं दिय सिद्धि मित्रु
 वलं सहिता दिवा विनामलि
 धा सिद्धि दिवा धानां यन
 पूर्व विस्तरं गा कूर्म मन्त्र वा दं
 वेगद्य स्य प्रसादात् सरु वलु रु
 वताम गतिद व ४ य स न ४ ॥
 द्वा द्वाला कपाला ४ खलु दिति
 वसिता ४ खलु मुद्रा लं युक्ता
 आदित्यादि ग्रहा वेसति कु
 विसमाज नमद वा लं युक्ता ४
 मृग्या या गा लं तिथी गण गु
 नू वदूका ४ लुटिलं माटुका थ
 सिद्धिं प्रया दद लु रु वलु व
 सुमगीय रू पृष्ठं गु रु म् ॥
 या वद्वी वात न क्षा वरु गि सुव
 नदी या फ्रवी पूष्ण मा या या
 वदा काश मा लं न ग ल ग ल य
 ग लं नो यति धी ग ल ग ४ या व
 यक्ता पिना की रु वि विमल रु
 लं वद सिद्धा न वानी गा व ७
 लं पू ग यो गा लं जनय वि वृ
 ना व द्ध न वा जल क्षी ४ ॥ य

द वा य क ना गा ग्र ह ग ल स क
 ला रु त न क ४ वि ना या थ व
 धा थ व मा सा कि धि ग ल स क
 ला थ व न क ग था गा ४ थ ल
 ग्ना ४ क लु व ला जू क व ट ग य
 य सा व लु सु गी व व द्वा ४ सु प्री
 ना ४ स लु नि र्ध नि वृ ज सु ख
 य दं स लु ग वा जल क्षी ४ ॥ व
 क्ता विष्णु व द्वा ल न य म
 व ल द क ४ पा नी स मी व ४ धी
 य क लान इ र्ना प्र ह ग ल व सु
 हि ४ स य गा ४ स र्व ना गा ४ रु व
 द्वा सिद्धि वा ना द्वा वि ग रु य रु
 वा थ लु सु र्धा दि द वा या नि
 धी पा स्य मा ना ४ सु व व न न
 मि ना ४ पा लु व ४ स र्व द वा ४ ॥
 उं कार वृ क मूलं क म य द क
 धि नं क न्द वा क्षी लु ना खं मृ
 क्ष र्ण सा म य र्ध य रु व खिल
 रु लं ग म्ध थ र्व व रु नी । या ग
 का या सु गी तं उ म न क य य
 दे न्नी य तं य स्य नि र्ध वा ग र्म
 क ल्य गु र्द गु वि ग ल मू नि हि
 ४ पा लु वा व द वृ क ४ ॥ य ४ रु
 क्ता रु र्ज मा ना गु गु ल रु ल गु
 ला वा ल व द्वा रु द क्षी ली रु
 ना म सि वा र्ध स र उ उ उ उ उ

उहमानेकटाना। दकाना
 खाद्यमानाप्रकटकटक
 टासंकटाटापट्टिनिः
 काकाहास्यमानासकरुक
 करुकहापातुयुमानुसि
 रु॥ कृत्वाथनानसिंहय
 कटितनमूर्खनकनगाध
 नासुंनजासिःपदालनं
 रुगवरुसदृशीद्वित्रिनीक
 खनन्य॥ निर्विन्नायस्यगा
 र्जमथमंजुगदिर्गदानव
 न्द्राहिन्यः॥ सायंपागुल
 यैवेयगिमुवणमहासिंरु
 वृथपविष्णु॥ कानूवके
 विक्षगागिनसिसूत्रगण॥
 कर्तुथात्रुवोद्यःककील
 कीर्तलाटकटिमधिमिन
 यान्निथाग्रन्यसूयो। व
 दाःपादवृष्टिःजिमुवणम
 धत्ररावगीयसजिक्काद्व
 काटीनखानाभितमृषिरि
 नसीयातुविश्ववराह॥
 हिलावकःसूत्रावःकालि
 गदृगलाद्योगविद्विनेह
 र्मसंध्यागामुन्नुनखादुटि
 लनखजिलागकर्मसायले

खः। यन्नादाकृष्यमानाद्य
 ननुधिनवसासानुदिग्वागु
 लाकेः। पालिःसयागनासी
 जयगिदिजयिनः॥ ॥ ॥
 नःसिंरुमूर्कः॥ यी॥ यस्या
 धविगजलेधत्रकलर्गलि
 माकागनूर्यनकगंध्यमा
 लंगुगगलीकसूमनयेयन्दा
 र्कवद्वि। ककीसफसमूडा
 रुजगिनिजिखनासफयागा
 लयादोवदाग्रत्वाविवायंद
 गदिगवदनंयागुवादिबालि
 ग॥ कालवर्षनुदवाः॥ कि
 तिरपियसदागस्यसंपूर्ण
 रुगावदकाःसनुविषाःस
 कलनृयगिजाधरुवेनीय
 जाग्र। सत्तानायालनयय
 रुकनुसूकगाकाद्यगासुार्थ
 यूकानिष्ठासाहप्रभायनि
 वसनुसतर्गसयजापूथग
 क्का॥ ॥ ॥ ॥
 नमामिदवदवर्गगामयनाह
 वंजिवं। सर्वयविगद्वनिर्ग
 यश्रगवाधवविर्ग॥ ॥ ॥
 ॥ नमामिनिजिजिद्वानाला
 ल्यलविधाविणी। जगतांमा
 रुकावृयांससावह्नितिका

त्रिणी ॥ ॥ कलहा ॥ दवाम
 लाहवी लायुतमपिचघटे
 ४ यन्नये ४ कुरुमूर्ति (गा की
 रे सो धमाये ४ कुरुमरुलसू
 न धीषधी वादिनते ४ । दी
 ये ४ कुरुगाताये मेलयगत्र
 नसेट्टि सिन्दूरद्वोपुष्य
 नैवद्यधूये ४ स्वकूलजविधि
 कर्तनमपुलुकुम् ॥ ॥
 कलिल ॥ आसी कीनामम
 ध्वस्वयितजलनिधो नोग
 यथै कुरुमी लयस्या रुद्र
 लक्ष्मि लिलिकिनेलेवा
 अगोत्रासवाते ४ वक्रायेरु
 यमाने मूनिगणसकलेमृग्य
 रु ४ साममेले विष्णुकेलाक
 नाथ ४ कलिकलुषरु ४ या
 तुमापिदनारु ॥ ॥ आदि
 हाकल ॥ ॥ रुद्र ४ गीतां शुमा
 लावसुमति तनय ४ सेदिक
 याकैयुग ४ केतुद्वैव अजर्न
 मृगकनेजवृता मध्वसैका
 दिनग ४ । वाकनकगमाल
 पुनवचिदगदि द्वावयाल
 वयुर्क सवर्षां गानिकाव
 विपूलकरुलदमउलन

तमामि ॥ ॥ मृग ४ अयकल
 ॥ ॥ रुद्र ४ गीतां शुमा
 यत्रम ४ सवर्षा कीध्वन ४ सा
 नन्द ४ सूत्रनाय प्ररुगवान
 संपुलुकामयद ४ । वागीलो
 वनद ४ सवा रुवप्रदा वामा
 दिवक ४ व ४ गोकथाधिवि
 नागकुरुयहा मृग ४ अय
 जाहिमां ॥ ॥ कममपुल ॥
 मध्व ४ वक्रम ४ ध्वस्वयित
 मगिर्वगकि युर्ककामे ४ स
 वरमाने निनात्मानमिगिगु
 नगर्वज्ञानगम्यसिद्धि । द
 वोदवे कलाने कूलमकूलम
 र्यपालिनाया ४ सैरु सवर्ष
 सर्व सवर्ष सकलसुखकर्वनी
 मरुद ४ खराव ॥ ॥ वाकी
 रु ४ सनका वृषरुतनूगता
 गीतुगकि मरुणी कीमाती
 वरुसैका गवृत्रथगतावे
 धूया सिद्धिदायी ॥ वावाहासे
 विरुका गजवधगमनायेन
 गकि खनूया वामपुत्रागस
 रुमृग यतिननूगायावल
 की मरुहाया ॥ ॥ गिवया
 ॥ कोदिपूर्वत्वमेवत्वमसि

जूनिमपन्नं ॥ इतनुयात्ने
 जितन्ममयाक्रायुर्दज्जुने
 स्यायुर्भददिवच्चदित्जुने
 सितवच्चमददित्जुनेजनेत
 न्वाउत्ततन्मज्जपुल्लमंधीम

यद्गुह्यं हि सा स न ड क व ल क्तिक
 स य ज मा न य ज मा नी ल क्तिक
 व नि र्म क्तिक ॥ ॐ न क्तिक ॥
 व नि ॥ ॐ न क्तिक ॥ न क्तिक
 य य य क क न क्तिक ॥ ॐ न
 व क्तिक ॥ ॥ न क्तिक
 ल क्तिक ॥ न क्तिक ॥ व
 न क्तिक ॥ ॐ न क्तिक ॥
 य य य क क न क्तिक ॥ ॐ न

निवशाकिंकलशादकना
 सिधकं ॥ उं जू सिधकसुमूर्त
 ममु ॥ उं द व स्येत्वा ॥ उं याला
 र्गिरुवति ॥ उं जू शिनीहंषा ॥
 उं जू या सिद्धा ॥ उं जू ४ गो नि
 गूं हा सिधकं कृत्वा ॥ ॥ य
 न्नना ॥ उं यदद्यक ॥ सिद्धव ॥
 उं ल ऊ विष्टद ॥ यूल ऊ या
 भारुना ॥ उं समिद्धा जू ३ न क
 न व म गी नां वृ त्त म ल्न म धू म
 त्थ न्न मा न ४ वा जी व रू न्वा जि
 नी द वा नां रु कि पि य मा स ध
 र्कं ॥ स ग ७ ॥ उं द धि का प्रा ॥
 जू द ग ॥ उं दी र्घा यू र्त्वा ॥ यं
 य सृ ज रू ल गा मूल यू र्ध्वा गी
 वा दे ॥ उं कु वा सिद्धव ॥ सिध
 मूर्त ॥ उं जू १ ॥ सर्व सा जू
 गी वा दे ॥ उं न्द्र द ४ रु वि ॥ ॥
 द र्घ ला व ला क र्त्त ॥ उं पू र्ण व
 न्द्र नि रू य स्र द र्घ ली ग म्द र्घ
 रु ॥ जू स वि म्भ क र्त्त य ७
 स म्भ दाय ज या य य ॥ ॥
 रु लि नि न म र्त्ता व ॥ वि स रू
 नी ॥ उं या न्द्र द व ग ४ ॥ सर्व पू
 जा मा दाय सा न द ॥ न्द्र द का
 म्भ दाय या य न ना ग म ना य
 य ॥ ॥ म पु ल व ज प्र दान ॥

ॐ विष्णु ववाट ॥ ॥ पूष्य रु
 लाहिषकी ॥ ॐ या ४ रु तिनी ॥
 ग्रावनि ॥ ॐ न आहि ॥ लाजा
 मूषिय जिह्वा ॥ ॐ मना दू मि ॥

धनकलकाय ॥ सुष्ठुलकल
 णदवर्त्त ॥ जून्तिकलणजून्ति
 र्त्त ॥ वदोकलणवदीयार्त्त ॥
 उर्द्धकलणहानायार्त्त ॥ जूध
 कलणसंरूलिहाकयार्त्त ॥
 गणयिनायर्त्त ॥ एवूदयूवि
 र्त्त ॥ ववूणनागयार्त्त ॥ यागि
 नाकमधुलयार्त्त ॥ कृण्ण
 यार्त्त ॥ पलं ह्दिसि ॥ धृज
 र्थकादि ॥ कलणमिसार्थका
 दि ॥ वामलनाका मिसार्थ
 कादि ॥ कृण्वतकन ॥ गीरव
 नड ॥ शावकृवाजयूवादिना
 ह्नीगानजिधूलमन्नीयात ॥

निवश किं कल गय जमानय
 जमाना ज्ञाय ॥ वाक् ॥ उं श्री
 वक्क समा यूष्मा मात्रा ग्यमा वि
 धनं यवमानं महियनं । धनं
 न्यधनं यगुं वक्क यूष्मा ला रुं श
 नं सर्वत्सर्नं द्वा द्वा मायूष्मा ॥ ॥
 सर्वान् विमर्जय ॥ उं उक्ति
 मुन्ना जमा सरुपी ली सियज्ज

वं घ यः । सामिन्द्रियमूर्तम्
 ॥ वलि कुं जात्रनादित्वस्वस्व
 न न यः ॥ ॥ अग्नि नमस्क
 रं ॥ ॐ नमो आराधयेत्पि मह
 गान्धुयस्त्राय गान्धुयस्त्राय
 य । दत्ता स्वस्ति नमः स्वस्ति
 मान्धुयः ॥ ॐ जिघात्तु
 ह्येव जं गन्ता मुद्वि यदयं ॥
 यद ॥ ॥ यत्तु विसर्जनं ॥
 ॐ यत्तु यत्तु गत्तु यत्तु यत्तु
 कर्त्तु यत्तु यत्तु गत्तु यत्तु
 गत्तु यत्तु यत्तु गत्तु यत्तु
 कः सर्व वावर्त्तु शेष ०० ॥
 ॥ न्यासी हत्ता ॥ द्वादश नमः । त
 निलानं ॥ ॥ पुनः ॥ ॥ ॥
 मं ॥ ॐ रुद्र वः स्वः स्वः ॥
 मूर्च्छि गयी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 नामा ग्नयं ०० ॥ ॥ ॐ गत्तु
 गत्तु गत्तु गत्तु गत्तु गत्तु
 वाहने । यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
 रुद्र गत्तु गत्तु गत्तु ॥ ॥ ॥
 ॐ रुद्र दत्ता यत्तु यत्तु यत्तु
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 अर्घ्यं यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
 मूर्च्छि गयी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ददववायुलुगुननरिवाय७
 ॥ यश्चात्कीमानीमिच्चय७ ॥ ॥
 यजमानयजमानागिवगकि
 कलशद्वादाववायुद्ववत
 ह्यंवाद्यादिथावकंकुवन्न॥
 ऊंससगुणवियक॥ वायुला
 दिराययक॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 वेषुवमगंविष्णुकायनेजुरा
 नाययककर्मविधिसमाय७॥

निष्कार्त्तन निष्कार्त्तनान्दद
यत्तु यदि न यत्तु न यावत् ॥

तत्र मण्डपः ॐ नमः कलशः ॥ श्री
दिव्यकलशः ॥ मृत्पुष्पः ॥ द
वपतिमः ॥ वनूकलशः ॥ ग
लकलशः ॥ पुनूकलशः ॥ सूर्य
नामः ॥ श्रीलक्ष्मी ॥ श्रीगणेशाय नमः
पुनस्तुतयथ द्रुता ॥ वृत्तीय
निसवर्गुर्थाता निकानः ॥ ॥

ततः पूजुं नय बुध्दिवस
बुध्दिकर्मकानय ॥ गण
कलगुनयद्, ईसनयाकम
ला, पूजाआसमयवारुनद
यर्ककायिनायपूजाक्याय ॥
ईसनकमला, पूजदयर्कक
यिनायवर्गिकसक्याय ॥

कमलपुत्रकलशपूठिन
 जूलिनि यवदकगनावथा
 साकदयकंदयुविपूजाकाय
 कृष्णस्यारुमसागवपुर्था
 यरुमालसुगयुर्वडरुनव
 सायूसीरुगंधनसंधर्षद
 दिष्टीयप्रिभयवमृत्पूदावि
 दगाहर्ल। विसर्जनविनाश
 घृदिद्वानमपुयादिय। गल
 गपुननागादिपुष्पलक्ष्मि
 यलसुग। अर्चनादिविधि
 लानिर्माल्यवपुपूजन। न
 द्यासिमर्षलक्ष्म्यायप्रा० की
 माविकार्जन। वपुर्थाथान
 पूनगतस्ययरुस्यनिःकूल
 वाक्कलादिकपुर्वमूर्ताना
 मनूनवय। ॥ अगया०
 अग्निपुत्रदयकपा० ४६ कसु
 य॥ गारुडपुत्रकलशग्वज्ज
 वलिनागससुगलकीमावी
 वावरुद्धिवाक्कादिमालका
 वायाव॥ कसकनसिद्धभा
 रु॥ स्नानकलशग्वज्ज॥ ॥
 ततः कृष्णपुत्रकमलायरुमाल
 रु० ॥ उ० अद्यादि॥ यजमान
 स्याद्यादिवपुर्थाकर्मयरुनि

सिद्धर्थ॥ पूष्णरुजनादि॥
 निवर्णकिकलशावर्न॥ गया
 निवार्य॥ अग्निनामगिरिख
 ॥ विधिर्थाद्युगाहृति॥ युगा
 हृतिपूजु॥ ॥ ततः सिला
 हृति॥ वक्त्रापलीगकलश
 गलावलिनागसस्नानकल
 शदग्नादिनागार्थिलिहृति०
 ॥ वृद्धादिलाकपालगलगु
 गुयागिनीकस्यवपुर्वदक
 ममपुलपहृतानां तिलाहृति
 कलातिलाहृतिपूजु॥ ॥
 यथाकर्मसदवस्नानादिया
 य॥ स्नानकलशनेयशमृ
 तनव॥ हवया० धर्षदवावर्न
 याय॥ दवावर्नकमपुआरु
 ति॥ उ० दृष्टिपू॥ पुष्पनस्य
 ला० ॥ उ० मनाहृतियुतिहृ० ॥
 उ० निदवावर्ननादिककला॥
 ततायजमानाया अर्नवध
 दासकायधिस्यमपुपविस
 र्जन॥ वाक्क॥ उ० मयापुर्वव
 र्णकायनिन्दाद्या० सर्वदेवता
 १। सुखागा० सुखदायाकुम
 याद्यैवविसर्जिता० ॥ पूजितं
 यरुनिर्माल्यरुकिनावन
 कर्मयावपुर्ववायदवा

यथायगारुगवानरुनिः॥
मयिस्त्रुष्टिस्त्रुष्टिस्त्रुष्टि
मिष्टिस्त्रुष्टिस्त्रुष्टि। विस्त्रुष्टि
विस्त्रुष्टिस्त्रुष्टिस्त्रुष्टि
कुति॥ गानिकं युष्टिस्त्रुष्टि
वयुष्टिस्त्रुष्टिस्त्रुष्टि। याउ
काजयमाप्राप्तुस्त्रुष्टि
रुलपुष्टि॥ ॥ ॐ रुनदीप्रा
यजुस्त्रुष्टिस्त्रुष्टि॥ विस्त्रुष्टि
मंदयस्त्रुष्टिस्त्रुष्टि॥ न्यामा
म्य॥ धकिस्त्रुष्टिस्त्रुष्टि
नयगाय काशस्त्रुष्टि
तत्रकायालयस्त्रुष्टि
लाकीलकास्त्रुष्टि
यश्चस्त्रुष्टिस्त्रुष्टि
गयाव॥ कयातस्त्रुष्टि
दिस्त्रुष्टि॥ यद्वस्त्रुष्टि
मलिस्त्रुष्टिस्त्रुष्टि
वस्त्रुष्टिस्त्रुष्टि
मिस्त्रुष्टि॥ कुलिसस्त्रुष्टि
यादिस्त्रुष्टिस्त्रुष्टि
स्त्रुष्टिस्त्रुष्टि
रुलसस्त्रुष्टि
स॥ कयातस्त्रुष्टि
स्त्रुष्टिस्त्रुष्टि॥ ॥ ॐ रुनदीप्रा
यजुस्त्रुष्टिस्त्रुष्टि॥ विस्त्रुष्टि

नयन्तस्त्रुष्टिस्त्रुष्टि
तादिनिधाय॥ युष्टि॥ ॥
ॐ रुनदीप्रा
यजुस्त्रुष्टिस्त्रुष्टि॥ विस्त्रुष्टि
मंदयस्त्रुष्टिस्त्रुष्टि॥ न्यामा
म्य॥ धकिस्त्रुष्टिस्त्रुष्टि
नयगाय काशस्त्रुष्टि
तत्रकायालयस्त्रुष्टि
लाकीलकास्त्रुष्टि
यश्चस्त्रुष्टिस्त्रुष्टि
गयाव॥ कयातस्त्रुष्टि
दिस्त्रुष्टि॥ यद्वस्त्रुष्टि
मलिस्त्रुष्टिस्त्रुष्टि
वस्त्रुष्टिस्त्रुष्टि
मिस्त्रुष्टि॥ कुलिसस्त्रुष्टि
यादिस्त्रुष्टिस्त्रुष्टि
स्त्रुष्टिस्त्रुष्टि
रुलसस्त्रुष्टि
स॥ कयातस्त्रुष्टि
स्त्रुष्टिस्त्रुष्टि॥ ॥ ॐ रुनदीप्रा
यजुस्त्रुष्टिस्त्रुष्टि॥ विस्त्रुष्टि

लवि सऊर्न ॥ नैवद्यादियू
व्यादिनिमाल्यथानलसू
सवायककाय ॥ ॥ वन
लकलगा नागयागयक्र सा
थानाययूजमालवियाव
यन्नुवादिधकिखासथाय
ककाय ॥ रुकयादपुकात्

हाममाल ॥ सखाक्रुतिदगा
यागिगा निकपी छिवयव
ध्यान्यादिदीयवृहिका हा
मदवादिवाक्रलदक्रिणा
॥ यूकुजाससासागादि ॥ य
जमानासिधकादि ॥ यक्रुवि
सऊर्नसूर्यगाकि ॥ यथा
कोमागीयूजा ॥ यिनायक्रु
यय ॥ ॥ ॐ नु कललाय ॥
ॐ नु कलग आदिय मृयू
ॐ य कव न थन य थरुग
सखानयक्रुवका काखादि
दयकमाजसवन ॥ ॥
कायिनायया दयूत्रियाको
मागीया नायलायक समय
ननायन ॥ ॥ गालक्र
क्रायमाल ॥ ॐ नु हावाय
रुवकुथीकमयक्रुसमार्य
गममृवकययक्रुनलयाय
विधि ॥ ग्रायाथनवालेपान

श्रवियक ॥ थननिमृगिकुलु
विसऊर्न ॥ वाक्र ॥ उमयायू
वक्रगाकायातन्दायायथ
दवगा ॥ सुयागा ॥ सुसदा ॥
सक्रुमयाथीवविसऊर्नगा ॥
वलिविसऊर्नकपागथान
लसूसकाय ॥ कपागयक्रु
नलधविवागसुखासथाय
ककायमृगिकुलुजिका ॥ ॥
वाक्रलायायसाई ॥ ॐ ति
दगासक्रुयाक्रुहानाययक्रु
वनासाकवयक्रुसमानथा
पुवारुनविधिसमार्य ॥ ॥

श्रुदगंनुविलावनगहनि
नोमासगुममावधयकव
नुमस ॥ कलाकयगतनिथी
वतुधुक्रुवो ॥ सीयूकुमखक
मयसकमिदीतीनामदा ॥
निरु कल्युलाभमयूगयो
गयूगलाजीयाक्रुगवतव ॥

श्रुदगिद्विदुवगमासिमा
यनिगाकव ॥ वक्रमानकलाय
कं यष्टामक्रुनवासव ॥ वरु
निमृकलाक्रुगविनामादिका
मक्रु ॥ गवसुवदनाथस्यदर्ग
नार्थ विनियोग ॥ ॐ ॥ ॥

अनन्तवग यावनसचिह्न ॥

मूलकलश-रुनिगचक

ध्वगयध्न ॥ निवधकी ॥

ध्वगहीख १

कूकमहीख २

ध्वगयध्न ३

नकाचक ४

ध्वगचक ५

ध्वगचक ६

रुनिगचक ७

नकाचक ८

कूकमहीख ९

नकाहीख १०

ध्वगगदा ११

कूकगदा १२

धतिशना ॥

ध्वगहीख १३
नकाचक १४